बेठक चरित्र

श्रीगोकुलनाथजी

श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी, श्रीगुसांईजी, श्रीगिरिधरजी, श्रीगोकुलनाथजी, श्रीहरिरायजी आदि बालकनकी बेठकनके चरित्र

॥श्रीकृष्णाय नमः॥

॥अथ श्रीवल्लभाचार्याणां जन्मपत्रिका॥

अब्दे कुंत्यात्मजातांधकरिपुनयनेऽष्वब्जयुक्ते वसोर्भे कृष्णेऽर्के माधवेऽऽभूत्स हरिशुभदिने कौर्प्य आविर्भवेऽन्हि॥
वैरिस्थेऽर्यम्णि याने शशिनि कवियुते ह्यात्मजे ज्ञऽस्तसौरौ धर्मे भौमे सजीवे तमसि गगनगे श्रीहरिर्वल्लभोऽग्निः॥1॥
अब्दे पाण्डववन्हिबाणकुमिते राधाऽसितैकादशी वस्वार्क्षार्कबवे शुभे वृषशनौ राहौ च खे ज्ञे सुते॥
कर्के सारगुरावलावजरवौ कुम्भे च चन्द्रे कवौ श्रीमद्ववल्लभनामधाम जगदुद्धारार्थमेवाजनि॥2॥
संवत् 1535 शके 1400 वैशाखकृष्ण 11 खौ धनिष्ठानक्षेत्रे शुभयोगे बवकरण एवंपञ्चांगे. श्रीदिनगतसमस्तरात्रिगतघट्यः 6 पलानि 44 समये वृश्चिकलग्ने श्री 6 श्रीवल्लभाचार्यजी प्राकट्यम्. स्थितिवर्ष 52 मास दिन 7 पर्यंतम् संवत् 1587 आषाढ शुक्ल 3 दिन अन्तर्धानम्. (गोस्वामी श्रीद्वारकेशजीमहाराज कृत जन्मपत्रिका गर्भितपद)

(पद राग सारङ्ग)
तत्त्व गुणबांण भुवि माधवासित तरणि प्रथम सौभाग दिवस प्रकट लक्ष्मणसुवन॥
धन्य चम्पारण्य मन्य त्रैलोक्य जन अन्य अवतार भुवि होय हे न एसो भवन॥1॥
लग्न वसु कुम्भ गति केतु कवि इन्दु सुख मीन बुध उच्च रवि वैरि नाशैं॥
मन्द वृष कर्क गुरु भौम युत तम सिंघ योग ध्रुव करण बव यश प्रकाशैं॥2॥
ऋक्ष धनिष्ठा प्रतिष्ठा अधिष्ठान स्थित विरह वदनानलाकर हरिको॥
यहि निश्चय द्वारकेश इनके शरण और को श्रीवल्लभाधीश सरको॥3॥

॥श्रीकृष्णाय नमः॥

॥श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः॥

मायावादिकरीन्द्रदर्पदलन-श्रीमदखण्डभूमण्डलाचार्यवर्य-
श्रीमद्वल्लभार्यजीके

॥84 बेठकनके चरित्र प्रारम्भः॥

॥श्रीमङ्गलाचरणम्॥

नमोनमस्तेऽस्त्वृषभाय सात्वतां विदूरकाष्ठाय मुहुः कुयोगिनाम्॥
निरस्तसाम्यातिशयेन राधसा स्वधामनि ब्रह्मणि रंस्यते नमः॥1॥
मायातमोनिराकर्त्रे गोभिः सर्वार्थदर्शिने॥
स्वान्तस्थाघहरे नित्यं द्विजराजाय ते नमः॥2॥
तैलङ्गान्वयभूषणः कविकुलालंकारचूडामणिर्वेदान्तावनमन्दिरं श्रुतिशिरोरत्नावलीरञ्जितः॥
मायावादमहान्धकारकदनः प्रद्योतितः प्राणिनामुद्धाराय कृतावतारसमयः श्रीवल्लभः पातु वः॥3॥
मायावादिकरीन्द्रदर्पदलनेनास्येंदुराजोद्‌गत श्रीमद्भागवताख्य दुर्लभसुधा वर्षेण वेदोक्तिभिः॥
राधावल्लभ सेवया तदुचित प्रेम्णोपदेशैरपि श्रीमद्वल्लभनामधेयसदृशो भावी न भूतोस्त्यपि॥4॥
यः कृष्णसेवार्थमगाधबोधं जगाद शास्त्रं भगवत्प्रणीतम्॥
निश्चित्य तद्भावमनन्यभावं तं वह्निसूनुं शरणं प्रपद्ये॥5॥

॥अथ सूचनिका॥

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी चोरासी बेठक या पृथ्वी मण्डलमें हें. सो जहां आपनें अलौकिक चरित्र दिखाए हें सों अब कहेत हें. जहां-जहां श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीनें श्रीभागवतकों पारायण कीयो हे. तहां-तहां आपकी बेठक प्रसिद्ध भई हें. चोरासी प्रकारकी भक्ति आपनें प्रगट करी हे. सो चोरासी वैष्णवनके हृदयमें आपनें स्थापन करी हे. ईक्यासी प्रकारकी सगुणभक्ति ओर तिनि प्रकारकी निर्गुणभक्ति. प्रेम, आसक्ति, व्यसन करिकें भेद हें. सो याहीतें चोरासी वैष्णव मुख्य भक्तिके अधिकारी भए. सो विनकी वार्तामें प्रसिद्ध हें.

बेठक चरित्र (1-84)

बेठक 1 ली

(अथ श्रीगोकुलकी बेठकनके चरित्रको प्रारम्भः)

अब श्रीगोकुलमें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी (3) तीन बेठक हें तामें एक बेठक तो गोविन्दघाटके उपर छोंकरके वृक्षके नीचें हे. सो जब प्रथमही आप श्रीगोकुल पधारे हते तब छोंकरके नीचें बिराजे हते. तब दामोदरदासहरसानीसों आज्ञा कीए. जो दमला गोविन्दघाट ओर ठकुराणीघाट दोऊ बराबर हें. न जांनिये कोंनसो गोविन्दघाट हे. ओर कोनसो ठकुराणीघाट हे. तब ईतनेमें अकस्मात एक स्त्री आई. सो नखतें सिख पर्यंत हिरा ओर पन्नानके आभरण पहेरे हे. सो आयकें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनतें कह्यो. जो तुम या छोंकरके नीचें बिराजो. यहि गोविन्दघाट हे, ओर आपकी दक्षण और ठकुराणीघाट हे. ईतनों कहिकें वो अन्तर्धान हो गई. तब श्रीआचार्यजी आप दामोदरदासतें कहें. जो दमला श्रीयमुनाजी एसे परम उदार हें. जो हम रञ्चक ठाडे भए. सो आपसों सह्यो न गयो. तातें तत्काल पधारिकें हमकों गोविन्दघाट तथा ठकुराणीघाट बताए हें. तब दामोदरदासनें बिनती करी. जो महाराज गोविन्दघाट ओर ठकुराणीघाट को अभिप्राय कहा हे. तब आप आज्ञा कीए. जो रावलसों ठकुराणीघाट तांई श्रीस्वामिनीजीकी हद हे. ओर महावनसों गोविन्दघाट तांई श्रीठाकुरजीकी हद्द हे. ओर यह छोंकर हे सो ब्रह्मको स्वरूप हे. सो यह आज्ञा आप कीए. ता दिन श्रावण सुदी ग्यारस ही. तातें सूतको पवित्रा सिद्ध्र कीए हे. सो केसरसों रङ्गे. केसरी धोती उपरनांरङ्गे. मिश्री सिद्धि करिकें फेरि रात्रिमें आप पोढे. तब दामोदरदास आपसों नेंक दूर आपकी इच्छातें सोयो हतो. ता समय आपके मनमें यह चिन्ता भई. जो मेरो प्रागट्य भूतलपें भयो हे. सो दैवीजीवनके उद्धारार्थ भयो हे. तातें मायामत खण्डन करिकें भक्तिमार्गको स्थापन करनों. ओर सकल तीर्थनकों सनाथ करनें. जीव तो सब दोष निधांन हे. ओर पुरुषोत्तम गुण निधांन हें. सो इनको सम्बन्ध केसें होयगो. यह चिन्ता होतमात्रही श्रीयमुनाजीकी पुलिनमेंतें कोटि कन्दर्प लावण्य साक्षात् श्रीनाथजी आप प्रगट होय कें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके निकट पधारिकें आज्ञा कीए. जो तुम चिन्ता क्यों करत हो. तुमतो सर्व करण समर्थ हो. तब श्रीआचार्यजी आप प्रणामपूर्वक कहें. जीव कहां ओर आप कहां. सो यह सम्बन्ध केसें सम्भवेगो. तब आप श्रीनाथजी आज्ञा कीए. जो जाकों आप नाम देऊगे ताके सेवामें सकल दोष निवर्ति होंइगे. (सर्वदोषनिवृत्तिर्हि दोषाः पंचविधाःस्मृताः) ओर आज्ञा कीए (शरणस्थसमुद्धारं कृष्णं विज्ञापयाम्यहम्) तब ईतनों सुनतहीं आप श्रीआचार्यजीने धोती उपरनां धराय पवित्रा पहराय मिश्री भोग धरे. तब श्रीगोवर्धननाथजी आज्ञा कीए. जो आप जाकों ब्रह्मसम्बन्ध करावोगे ताको में अङ्गीकार निश्चे करूंगो. एसी आज्ञा करिकें आप अन्तर्धान भए. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप दामोदरदासतें कहें. जो दमला तेंनें कछु सुन्यो. तब दामोदरदासनें कही, जो महाराज सुन्यो तो सही, परन्तु कछु समझ्यो नांही. जो पुरुषोत्तमके वाक्य तो वेद हू समझत नांहीं. तो में जीव कहा समझूंगो. तब आप कहें जो दमला श्रीठाकुरजीनें ब्रह्मसम्बन्धकी आज्ञा दीए हें. तब दामोदरदासनें बिनती करी. जो महाराज कृपा करिकें प्रथम तो मोको ब्रह्मसम्बन्ध करवाइये. तब द्वादशीके दिन प्रातःकालही श्रीआचार्यजीनें दामोदरदासको स्नान करवायकें प्रथमही छोंकरकें नीचें

ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. ओर मार्गको रहस्य सिद्धान्त वाके हृदयमें स्थापन कियो. ओर आप दामोदरदासतें कहें. जो दमला यह मार्ग तेरे लीयें प्रगट कर्यो हे. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप गोविन्दघाटपें छोंकरकें नीचें दिखाए. ओर हू अनेक चरित्र दिखाए हें परन्तु मुख्य चरित्र हे सोई लिखे हे. इति श्रीगोविन्दघाटकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 1.

बेठक 2 जी

(अथ भीतरकी बडी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी दूसरी भीतरकी बडी बेठक हे. सो तहां आप नित्य भोजन करते. ओर कथा कहते. आपने प्रगट होइकें सेवामार्ग प्रगट कीयो. तब वृन्दावनके बडे- बडे महानुभाव कृष्णचैतन्य प्रभृति संत महन्त हे. तिननें यह विचार कियो. जो श्रीनाथजीकी सेवा हम करें. तब उनकों श्रीनाथजी यह आज्ञा कीये. जो मेरी सेवा तो मेरो स्वरूप होईगो सोई करेगो. तुमकों तो भगवद्भजनको अधिकार हे. भजनसों तुमारो उद्धार होयगो. ओर मेरी सेवा तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप करेंगें. तब उन वृन्दावनके महन्तननें अपनों एक वैष्णव परीक्षाके लियें. श्रीगोकुलमें श्रीआचार्यजीके पास पठायो. सो वा वैष्णवको नांम श्यामानन्द हतो. सो वह वैष्णव श्रीगोकुलमें आयो. वाके पास एक श्रीशालिग्रामजीको स्वरूप हतो. सो वह स्वरूप बटूआमें हतो. सो ता बटुआकों छोंकरकें वृक्षसों लटकाईके वे भीतर आप श्रीआचार्यजीके पास दर्शनकों गयो. तब आपके दर्शन करिकें पाछों आयो. सो तहां देखे तो वह बटुआ नांहीं हे. पाछें वानें आयकें श्रीआचार्यजीसों कह्यो. जो महाराज तुमारे सेवकननें मेरो बटुआ चुराय लीयो हे. तब आप कहें. जो हमारो सेवक होयगो सो तेरो बटुआ काहेकों लेइगो. सो तेनें जहां धर्यो होय. तहां देखि ले. तब वह फिरि आयकें देखे तो सबरो छोंकर बटुआनतें धर्यो हे. सो तब फेरि वानें आयकें आप श्रीआचार्यजीसों कही. जो महाराज वहांतो अनेक बटुआ हें. सो में कोंनसो लेऊं. तब आप कहें. जो तूं अपनें इष्टकों पहचांनत नांही हे. तो आगें सेवा कहा करेगो. जो तूं जायकें देखितो सही. तब फेरि वह आयके देखे तो एकही बटुआ हे. सो तब वा बटुआकों लेकें वो श्रीवृन्दावनकों गयो. तब उन संत महन्तनसों सर्व समाचार कहें. सो वह सुनिकें सबरे आश्चर्य करन लागे. ओर कहे जो वह ईश्वरी अंश हें. यह चरित्र आप भीतरकी बेठकमें दिखाए. सो एसे-एसे अनेक चरित्र दिखाए हे. इति श्रीभीतरकी (बडी) बेठकको चरित्र समाप्त. 2.

बेठक 3 जी

(अथ शैयामन्दिरकी#B1#A बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप शैयामन्दिरकी बेठकमें पोढे हते. सो तहां तांई श्रीद्वारिकानाथजीको मन्दिर बन्यो न हतो. सो तब तहां एक योगेश्वर द्वापरयुगकों बेठिके तपस्या करत हतो. सो वाकी पर्णकुटी भूमिके भीतर हती. सो तब वा योगेश्वरनें निकसिकें

श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. ओर बिनती करी. जो महाराज में द्वापरयुगसों बेठिकें तपस्या करत हों. सो ताको फल मोकों आज सिद्धि भयो. जो मोकों आपके दर्शन भए. ओर अब ईहां सात मन्दिर बनेंगे ओर श्रीगोकुल फेरि बसेगी. सो तातें मोकों इहांसों कोऊ ऊठावे नांही एसी आज्ञा करो. सो तब श्रीआचार्यजी आप कहें. जो तुमकों ईहांतें कोऊ ऊठावेगो नांहीं. तापाछें केतेक दिन पीछें श्रीद्वारिकानाथजीको मन्दिर बन्यो. सो तब वा योगेश्वरकी कुटी निकसी. सो तब श्रीद्वारिकानाथजीनें वा योगेश्वरसों कही. जो अब तुम ईहांतें सरकि जाओ. सो तब वा योगेश्वरनें कही. जो महाराज मोकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी आज्ञा हे. जो तोकों ईहांसों कोई ऊठावेगो नांहीं. सो तब श्रीद्वारिकेशजी महाराजनें कही जो अबतो तुम ईहांतें सरकिजाओ. तब वह कुटी सोलह हाथ नीची भूमिमें प्रवेश करि गई. तब तहां श्रीद्वारिकानाथजीको मन्दिर बन्यो. तामें श्रीठाकुरजी बिराजे. परन्तु तहां नित्य राजभोग सरे पाछें महाप्रसादमें क्रमि होय जायवे लगे. तब श्रीद्वारकेशजी महाराजनें श्रीगोकुलनाथजीसों पूछी. तब श्रीगोकुलनाथजीनें कही. जो में श्रीनाथजीसों पूछिकें उत्तर देउंगो. ता पाछें श्रीगोकुलनाथजी श्रीनाथद्वार पधारे. तब राजभोग पीछें श्रीगोकुलनाथजी महाराज शैयामन्दिरके द्वारपें ठाडे भए. तब तहां श्रीनाथजीसों सर्व वृत्तान्त कह्यो. तब जंभाइ लेकें श्रीनाथजी आलस संयुक्त यह वचन कहें (तस्येदं कर्मणां फलम्). पाछें श्रीनाथजी शैयामन्दिरमें पोढिवेकों पधारे. सो श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीद्वारकेशजीसों सर्व समाचार कहे. तातें केतेक दिनलों श्रीद्वारकानाथजी श्रीमथुरेशजीके पास बिराजे. यह चरित्र शैयामन्दिरकी बेठकमें दिखाए. ओर हू अनेक चरित्र दिखाए हें. परन्तु मुख्य हें सो लिखें हें. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी शैयामन्दिरकी बेठकको चरित्र समाप्त. 3.

(1.आ बेठक श्रीद्वारकानाथजीना शैयामन्दिरमां छें.)

बेठक 4 थी

(अथ श्रीवृन्दावनकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीवृन्दावनमें बंसीबटके पास श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक हे. वहां आपनें यह अलौकिक चरित्र दिखायो. जो एक वैष्णव प्रभुदासजलोटाक्षत्री हतो. सो ऊनसों श्रीआचार्यजीनें कह्यो. जो प्रभुदास सखडी महाप्रसाद लेऊ. तब प्रभुदासनें कही. जो महाराज में स्नान नांहीं कियो हे. सो सखडी महाप्रसाद केसें लेऊं. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप दोय श्लोक पद्मपुराणके वृन्दावनमाहात्म्यको कहें. सो श्लोक.

वृक्षे वृक्षे वेणुधारी पत्रे पत्रे चतुर्भुजः॥
यत्र वृन्दावनं तत्र स्नानास्नानकथा कुतः॥1॥

रजसोऽपि पुण्यं जलं जलादपि रजो वरम्॥
यत्र वृन्दावनं तत्र लक्ष्यालक्ष्यकथा कुतः॥2॥
सो एसें कहिकें या बेठकमें वृन्दावनको स्वरूप दिखाए. सो वृक्ष-वृक्ष प्रति तथा पत्र-पत्र प्रति भगवद्दर्शन भयो. तब प्रभुदासनें महाप्रसाद लियो. ओर दूसरो अलौकिक चरित्र दिखायो सो कहत हें. जो एक गोपालदासगोडिया करकें कृष्णचैतन्यको सेवक हतो. सो वह भक्तिमार्गीय हतो. वानें कृष्णचैतन्यसों बिनती करी. जो महाराज मेरे मांथे कछु सेवा पधराय देऊ. तब कृष्णचैतन्यनें वाके मांथे श्रीशालिग्रामजीकी सेवा पधराय दई. सो ताकी वह सेवा कीयो करे. परन्तु वाके मनमें बडो ताप रहे. जो में ईनकों सिंगार केसें करूं. ओर मुकट काछिनी केसें धराऊं. गुरुनने जो स्वरूप पधराय दीयो. ता उपरांत दूसरो स्वरूप पधरायो जाय नहीं. तब वानें कृष्णचैतन्यतें फेरि बिनती करी. जो महाराज मोकों स्वरूप सेवा पधराय देऊ तो आछो. तब कृष्णचैतन्य तो चूप होय रहे. पाछें कृष्णचैतन्य श्रीजगन्नाथरायजीके दर्शन करिवेकों गये. तब गोपालदासको बहुत ताप जांनिकें कृष्णचैतन्यनें स्वप्नमें कह्यो. जो मेरो सामर्थ्य होय सो मोसों दीयो जाय. में तो भगवद् आज्ञातें मार्ग उपदेश देत हूं. भगवत्स्वरूपको सामर्थ्य तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनमें हे. सो तातें वे पधारें तब उनतें बिनती करियो. तब तेरो वे सर्व मनोरथ पूर्ण करेंगे. सो तब वानें आयकें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनसों बिनती करी. जो महाराज मोकों गुरुननें तो श्रीशालिग्रामजीकी सेवा पधराय दीनी हे. परि मेरे मनमें भांति भांतिके सिंगार करिवेको ताप रहेत हे. तातें ओर दूसरो स्वरूप पधराय देऊ. ताकी कछू चिन्तातो नांहीं. तब आप आज्ञा कीए. जो दूसरो स्वरूप काहेको पधरावत हे. जो तेरो साचो भाव होयगो तो याहीमेंतें स्वरूप प्रगट होयगो. ओर शालिग्रामजी पीठकमें रहेंगे. श्रीठाकुरजी सर्व करन समर्थ हे. श्लोक. (कृष्णस्तावतमात्मानं यावंतीर्व्रजयोषितः) सो जैसो तेरो अभिलाख हे तेसो स्वरूप होयगो. जेसी तेरी इच्छा होय तेसी ही तूं भावनां करियो. तेसोही सवारें तोकों दर्शन होयगो. सो तब वह अपनें घर आयकें सोय रह्यो. तब सवारें वाकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी कृपातें इच्छानुरूप दर्शन भयो. तब उन श्रीठाकुरजीको नांम राधारमण भयो. सो अब वृन्दावनमे बिराजत हें. ता पाछें गोपालदासनें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनतें बिनती करी. जो महाराज मोकों गुरु उपदेश देउ. आप तो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम हो. तब आप आज्ञा कीए. जो याजन्ममें तो तुं कृष्णचैतन्यको सेवक हे. ओर जन्मांतरमें हमारे मार्गको सम्बन्ध होयगो (श्लोक)
जन्मान्तर सहस्रेषु तपोध्यानसमाधिभिः॥
नराणां क्षीणपापानां कृष्णे भक्तिः प्रजायते॥1॥
सो तब फेरि कोई कालान्तर करिकें वाको या मार्गको सम्बन्ध भयो. सो तब गोपालनागा ईनको नांम भयो. सो यह चरित्र आप श्रीवृन्दावनकी बेठकमें दिखाए. ओर हू अनेक चरित्र

दिखाए हे. परन्तु मुख्य हें सोई लिखे हें. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी श्रीवृन्दावनकी बेठकको चरित्र समाप्त. 4.

बेठक 5 मी

(अथ श्रीमथुराजीकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीमथुराजीमें विश्रान्तघाटके उपर श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक हे. तहां आप श्रीआचार्यजी बिराजे हते. ता समय तहां ऊजर वन हतो. ओर वस्ती तो भूतेश्वरपें हती. सो तहां स्मशानभूमि नजीक हती. तातें आपकों श्रीभागवतको पाठ करतमें ग्लानी ऊपजी. तब कमण्डलुमेंतें जल लेकें कृष्णदासमेघनको दियो. ओर आज्ञा कीए. जो जितनेमें यह जल छिरक्यो जायगो. तितनेमें वस्ती होयगी. तब कृष्णदासने वह जल असकुण्डातें लगायकें सूर्यकुण्ड तांई छिरक्यो. सो तातें ऊतनेमें वस्ती बसि गई. ओर तत्काल स्मशानभूमि ध्रुवघाटपें जाय पडी. तब वा समय रूपसनातन दर्शनकों आए हते. विननें श्रीआचार्यजीके सेवकनको दुर्बल देखिके कह्यो. जो महाराज आपको मार्ग तो पुष्टि हे. ओर सेवक दुर्बल क्यों हें. तब आप कहे. जो हमतो इनकों बहुत बरजे हते. जो तुम या मार्गमें मति परो. परन्तु ईनने हमारो कह्यो मान्यो नांही. सो ताको फल ये भोगत हें. याको आशय कृष्णचैतन्य समुझे नांहीं. जो यामें आपनें अपनों स्वरूप तथा मार्गको स्वरूप तथा सेवकनकी स्वरूप तीन्यो बात दिखाई हें. सो यह जो हमनें मुखारविन्दसों रासपंचाध्यायीमें व्रजभक्तको बरजे हें. जो तुम पाछे घरकों जावो. सो ये भोगत हें. जा समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप मथुरा पधारे हते. ता समय एक आसुरीमन्त्र लिखिकें काजीनें विश्रान्तघाट उपर धरि राख्यो हतो. सो वह एसो यन्त्र हतो. जो वाके नीचें होईकें हिन्दू निकसे. ताकी चुटियां कटि जाय. ओर डाढी होय आवे. सो तातें मुसलमांन होय जाय. सो एसें धर्म भ्रष्ट करत हते. सो ता समय श्रीआचार्यजी आप विश्रान्तघाट उपर स्नान करनकों पधारे हते. ता समय पांच सात वैष्णव आपके सङ्ग हते. ओर दोय चार वैष्णव केशवभट्टके सङ्ग हते. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप सब सेवकन सहित स्नान कीए. तब काहू वैष्णवकों म्लेच्छकें यन्त्रको पराभव भयो नांही. ता पाछें आप सात दिन तांई मुक्तिक्षेत्रके उपर श्रीभागवतको पारायण कीए. सो तहां तांई सब हिन्दूननें स्नान कीए. सो काहूकी चुटियां कटी नांही. सो जब आप मधुवनकों पधारिवे लगे. तब वा समय मथुरिया चोबेननें मिलिकें आपसों बिनती करी. जो महाराज यह यन्त्र विश्रान्तघाटके उपर हे. सो दूरि करिकें आप पधारो. तब आप आज्ञा कीए. जो तुम जायकें काजीसों कहो. जो गोकुलके फकीर केहेत हें. जो या यन्त्रकों विश्रान्तघाटपेंतें उठाय लेउ. तब ऊन चोबेननें जायकें काजीसों कही. जो हमारे श्रीआचार्यजी पधारे हें. सो केहेत हें. जो या तुमारे यन्त्रकों यहांतें उठाय डारों. सो सुनकें काजीनें कही. जो यह यन्त्रतो यहां बादशाहनें धरायो हे. सो जब ऊनको हुकम आवेगो तब यह यन्त्र यहांतें उठेगो. सो तब ऊन चोबेननें सर्व समाचार वासुदेवदासछकडा पास आयकें श्रीआचार्यजी महाप्रभुकों कहि

सुनाए. तब श्रीआचार्यजी आपनें श्रीहस्तसों यन्त्र लिखिकें वासुदेवदासछकडाकों तथा केशवभट्टसों आज्ञा कीए. जो तुम दिल्ली जावो. सो दिल्लीके जितनें दरवाजे हें तिन सबनपें एक-एक यह यन्त्र धरि आवो. तब वासुदेवदासछकडा तथा केशवभट्ट दिल्लीकों चले. सो दिल्ली जायकें सब दरवाजेनपें यन्त्रनकों धरि दिए. सो वा यन्त्रको यह प्रताप जो कोई म्लेच्छ उहां होयकें निकसें. ताकी चुटियां होय जाय. ओर डाढी होय सो उडिजाय. तातें वो हिन्दु होय जाय. सो तब या भांतिसों कितने हूं म्लेच्छ हिन्दू होय गए. तब बादशाहको खबरि भई. तब बादशाहनें हुकम कियो. जो एसे यन्त्रनकों उहां सों उठाय डारो. तब बादशाहके मनुष्य यन्त्र उठायवे लगे. सो तब वह यन्त्र कोईके हाथ आवे नांहीं. सो तब काहूनें कही. जो यह यन्त्र तुमारे हाथ आवेगो नांहीं. तब वे मनुष्य पाछे फिरि गए. सो तब बादशाहनें पूछी. जो यह यन्त्र यहां कोंननें धर्यो हे. तब हलकाराननें कही. जो मथुराके दोय फकीर आए हें. सो यह यन्त्र उननें धर्यो हे. तब इतनेमें वासुदेवदासछकडा तथा केशवभट्ट दोउ जनें तहां आयकें ठाडे भए. तब बादशाहनें कही. जो यह यन्त्र ईहांसों उठाय डारो. तब केशवभट्टनें कही. जो साहिब यह यन्त्र ईहांसों तब उठेगो जब मथुरातें वा यन्त्रकों उठाय मंगावोगे तब. एसी हमकों हमारें गुरु श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी आज्ञा हे. तब बादशाह अपने मनमें डरप्यो. सो तब बादशाहनें कही. जो हम वा यन्त्रकों उठाय मंगावत हें. ता पाछें बादशाहनें अपने हलकारा मथुराकों भेजे. सो वे हलकारा मथुरासों पत्र लाए. तब वासुदेवदासछकडा ओर केशवभट्ट दिल्लीके दरवाजेनसों वे यन्त्र उठायकें मथुराकों गए. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके पास आईकें दण्डोत् करिकें सर्व समाचार कहे. सो सुनिकें श्रीआचार्यजी आप चूपकरि रहे. सो जब दिल्लीके दरवाजेनसों यन्त्र ऊठे. तब सब म्लेच्छननें चुटियां मुंडवाय डारी. तब बादशाह बाहिर बागकी सेलकों निकस्यो. जब विश्रान्तघाटके उपरसों यन्त्र उठ्यो तापाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप सक्ध्यावन्दनको जल लेकें विश्रान्तघाटके उपर छिरके. तासमय श्रीमुखसों आप कहें. जो आजपाछें कोई म्लेच्छ इहां यन्त्र धरेगो सो झुंठो परेगो. ता पाछें उजागरचोबेको प्रोहिताई लिखि दई. सो तब वाकी आज्ञा लेकें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप व्रजयात्रा करिवेकों पधारे. सो संवत् 1549 भाद्रपद वदी 12 शरद ऋतुमें विश्रान्तघाटपें स्नान करि नेम लेकें आप विश्रान्तघाटतें पधारे. सो मधुवन पधारे. यह चरित्र श्रीआचार्यजी आप विश्रान्तघाटकी बेठकमें प्रगट कीए. ओर हू अनेक चरित्र कीए हे. परन्तु मुख्य हे सोई लिखे हें. इति श्रीमथुराजीमें विश्रान्तघाटकी बेठकको चरित्र समाप्त. 5.

बेठक 6 ठ्ठी

(अथ श्रीमधुवनकी#B1#A बेठककी चरित्र प्रारम्भः)

मधुवनमें मधुवनियांठाकुर वज्रनाभके स्थापित हे. सो तिनके दर्शन करिकें माधवकुण्ड (कृष्णकुण्ड) के उपर एक कदम्बके नीचें आयकें श्रीआचार्यजी आप बिराजे. तहां सात

दिनलों श्रीभागवतकी पारायण कीए. तब मधुवनियाठाकुर नित्य कथा सुनिवेकों पधारते. सो एक दिन एक पण्डा स्नान करिकें सेवा करिवेके लीयें मन्दिरमें गयो. तब तहां मन्दिरमें देखे तो श्रीठाकुरजी नही हें. तब वह पण्डा अपनें मनमें क्लेश करन लाग्यो. तब दोयप्रहर पीछें मन्दिरमें वा पण्डाकों श्रीठाकुरजीको दर्शन भयो. तब पण्डानें पूछी. जो महाराज तुम कहां पधारे हते. तब श्रीठाकुरजी कहें. जो यहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप पधारे हें. सो श्रीभागवतकी पारायण करत हें. तहां सुनिवेकों गयो हतो. सो तातें तुम बडे सवारें पूजा करीवो करो. तब वादिनसों वे पण्डा बडे सवारें ऊठिकें पूजा करि लेते. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप सात दिनलों श्रीभागवतको पारायण किये. तहां तांई मधुवनियांठाकुर नित्य पधारें. जा समय श्रीआचार्यजी आप व्रजयात्रा करिवे पधारे. ता समय ईतने वैष्णव आपके सङ्ग हते तिनके नांम. 1.वासुदेवदास छकडा. 2.यादवेन्द्रदास कुम्भार. 3.गोविन्ददुबे सांचोराब्राह्मण. 4.माधवभट्ट काश्मीरी. 5.सुरदासजी. 6.परमानन्ददासजी. सो इतनें वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके सङ्ग व्रजयात्रा करिवे गये हते. इति श्रीआचार्यजीकी मधुवनकी बेठकको चरित्र समाप्त. 6.

(1.अहींथी व्रज चोराशीकोसनी परिक्रमामां 23 बेठको छे तेनुं वर्णन आवे छे. माटे ते बेठकोनुं तथा परिक्रमानुं वधु वर्णन जोवा माटे वांचो “तीर्थयात्रानो हेवाल” ए पुस्तक.)

बेठक 7 मी

(अथ श्रीकमोदवनकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी मधुवनसों तालवन पधारे. तहां तालवनके कुण्डमें स्नान करिकें तालवनकी परिक्रमां किये. तहां कोई भगवत्स्वरूप न हतो. तातें तहां श्रीभागवतको परायण किये नांहीं. तहां आपने कारिकाही किये तामेंको श्लोक (बलभद्रस्य बोधाय भगवद्वचनेन हि. स्वधर्माः सकला एव बलभद्रेनिरूपिताः॥1॥ लोकानां च प्रतीत्यर्थं तेन बोधेन कारणं) तहांतें आगें कमोदवनमें बेठक हे. सो तहां कुण्डके उपर श्यामतमालके नीचें दिन तिनलों आप श्रीआचार्यजी बिराजे. ओर पारायण करी. तहां कृष्णदासमेघननें पूछी. जो महाराज या वनको नांम कमोदवन क्यों हे. तब आप आज्ञा किये. जो सामवेदमें कथा हे. जहां व्रजको माहात्म्य कह्यो हे. तामें कह्यो हे जो एकसमय श्रीठाकुरजी ओर श्रीस्वामिनीजी या वनमें पधारे हते. ता समय शरदचांदनीको प्रकाश बहुत हतो. तब श्रीस्वामिनीजीनें कही जो. यहां कमोद ओर कमोदिनीको वन सिद्ध होय तो आछो. तब कुमुदा ओर कमोदिनी दोय सहचरी ही. तिनकों आप श्रीठाकुरजी आज्ञा कीए. जो यहां दोय कुण्ड सिद्धि करो. तब कुमुदाकमोदिनीनें कमोदकुण्ड सिद्ध कीये. ताकी रक्षाकों विन सहचरीनकों आज्ञा कीए. सो तातें. या वनको नांम कमोदवन हे. तब ओर वैष्णवनें मिलिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनसों बिनती करी. जो महाराज कमोद ओर कमोदिनीको दर्शन आपके सङ्ग न होयगो तो कब

होयगो. तब आप एक श्रीगीताजीको वाक्य कहें. सो वाक्य (दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्) यह आज्ञा करिकें दोयघडी तांई सब वैष्णवनकों दिव्यचक्षु दिये. तब कमोद ओर कमोदिनी सहित जलस्नानकी लीलाको मेहेलनको दर्शन कराए. तब बहुत भाव करिकें वैष्णव विवस होय रहे. शरीरको अनुसंधान रह्यो नांही. तब आपनें मनमें विचारी. जो ये लीलामें प्रवेश होइ जायगे. तातें लीलाको तिरोधान करि तहांतें आप आगें पधारे. सो शान्तनकुण्ड तथा गंधर्वकुण्डमें स्नान करि बहुलावन पधारे. सो यह चरित्र आप कमोदवनकी बेठकमें दिखाए. ओर हू अनेक चरित्र दिखाए हें. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी कमोदवनकी बेठकको चरित्र समाप्त. 7.

बेठक 8 मी

(अथ श्रीबहुलावनकी बेठको चरित्र प्रारम्भः)

सो तहां बहुलावनमें कृष्णकुण्डके उपर उत्तरदिशा वडके वृक्ष नीचे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी बिराजे. सो तहां बेठक हे. तहां तीन दिनलों आप बिराजे. श्रीभागवतको पारायण कीए. तब ऊहांके ब्राह्मणनें बिनती करी. जो महाराज इहांको हाकिम यवन हे. सो बहुलागायकी पूजा करिवे देत नांहीं. वो तो कहत हे. जों यह गाय होय तो हमारे आगें दांनां घास खाय तो सुखेन तुम पूजा करो. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कहें. जो हां-हां घास दानां खायगी. तब श्रीआचार्यजीनें हाकिमको बुलवाया. आप घास दानां मंगवायके वा बहुलागायके आगें धरे. तब वह गाय घास दानां खायवे लगी. सो वह हाकिम देखिके आश्चर्यवत् होय रह्यो. तब दण्डवत् करिकें कही जो महाराज कृपा करिकें मोकों आपनों सेवक करो. तब आप आज्ञा कीए. जो तुमनें गायकी सेवा पूजा बंद करी हे सो छोडि देऊ तब तुमारो अङ्गीकार आगिले जन्ममें होयगो. तब हाकिमनें गायकी पूजाकी छुट्टी करी दई. सो तब सब कोई गायकी पूजा करिवे लगे. ता पाछें वह यवन बहुत वर्ष तांई जीयो. पाछें जब मर्यो. तब रावलके पास गोपालपुर गांम हे. तामें याको जन्म मल्हाके घरमें भयो. तब याको अङ्गीकार श्रीगुसांईजी द्वारा भयो. सो तब मेहाढीमर याको नांम भयो. सो याकी वार्ता श्रीगुसांईजीके सेवकनमें लिखी हे. तातें यहां विस्तार नहीं कियो. तापाछें तहांतें आगें पधारे. सो तोसगांम होयकें जिखिनगांममें श्रीबलदेवजीको दर्शन कीए. सिंगार कीए तहां एकरात्रि बिराजे. दमलासों आज्ञा कीए. जो ये श्रीबलदेवजी प्राचीन हें. जो इनहीने शफचूडको मार्यो हे. तातें या गांमको नांम जिखिनगांम हे. ता पाछें दूसरे दिन श्रीआचार्यजी आप मुखराई होयके श्रीकुण्ड पधारे. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी आप बहुलावनकी बेठकमें प्रकट कीए. ओर हू अनेक चरित्र दिखाए हे. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बहुलावनकी बेठकको चरित्र समाप्त. 8.

बेठक 9 मी

(अथ श्रीराधाकुण्ड कृष्णकुण्डकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीराधाकुण्डमें श्रीस्वामिनीजीके मेहेल हें. सो तहां छोंकरके वृक्षके नीचे श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक हे. तहां एकमास पर्यंत आप बिराजे. ताके निकट श्यामतमालके नीचें आपकी बेठकके पास श्रीगुसांईजीकी हू बेठक हे. तहां छोंकरके नीचें प्रातःकालके समय श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी आप बिराजे हते. ता समय श्रीनाथजी ओर श्रीस्वामिनीजी बांहजोटी कीयें श्रीगिरिराजके शिखरपें पधारे. सो श्रीआचार्यजी आप जानें. तासों आपको नांम श्रीगुसांईजी आप श्रीसर्वोत्तमजीमें कहें हें (श्रीकृष्णहार्दवित्) सो आप श्रीनाथजीको अभिप्राय जाने हें. तब श्रीकुण्ड होयकें आप श्रीनाथजीके पास पधारे. तब अन्तरङ्गसेवक श्रीनाथजीके सङ्ग हे. तिनको वैष्णवनकों दर्शन भयो. तब वे मूर्छित होय रहे. पाछें ऊहांतें श्रीआचार्यजी आप तीसरे दिन पधारे. सो श्रीठाकुरजीकी तथा श्रीस्वामिनीजीकी आज्ञा भई. सो सबरो वृत्तान्त दामोदरदासतें कह्यो. जो मोकों भगवद् आज्ञा ऐसी भई हे. ता पाछें कमण्डलको जल लेकें सब वैष्णवनके उपर छिरके. तब सबनकी मूर्छा मिटि. पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप श्रीराधाकुण्ड कृष्णकुण्ड ओर आठदिशानमें जो आठो सखीनके आठ कुण्ड हें. सो तिनमें एक कुण्ड श्रीस्वामिनीजीनें तथा एक कुण्ड श्रीठाकुरजीनें खोदे हे. जो कृष्णकुण्ड हे सो तो श्रीठाकुरजीनें वेणुसों खोद्यो हे. ओर राधाकुण्ड हे सो श्रीस्वामिनीजीनें नखनसों खोद्यो हे. तामें असाधारण जल भयो. ताके भीतर श्रीस्वामिनीजीको निकुञ्जद्वार रत्नजडित मेहेल हे. तहां सदैव आप श्रीस्वामिनीजी रमण करत हें. सो श्रीगुसांईजीकी बेठकके चरित्रमें विस्तारसों लिखे हें. ओर आठदिशानमें जो आठ सखीनके कुण्ड कहे ताके नांम कहे हें. 1.चन्द्रभागाकुण्ड. 2.चम्पकलताकुण्ड. 3.चन्द्रावलीकुण्ड. 4.ललिताकुण्ड. 5.विशाखाकुण्ड. 6.बहुलाकुण्ड. 7.सक्ध्यावलीकुण्ड. 8.चित्राकुण्ड. सो इन सबनमें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप स्नान करिकें आगें कुसमोखरिकूं पधारे. सो तहां कुसमोखरिमें स्नान कीए. जहां उद्धवजी गुल्मलता होयकें रहे हें. तहां उद्धवजीसों आपको समागम भयो हो. तब उद्धवजीनें बिनती करी. जो महाराज भ्रमरगीतकी श्रीसुबोधिनीजी मोकों सुनावो तब आप आज्ञा कीए. जो एक श्लोकमात्र कहूंगो. तब आप एक ही श्लोक कहें. सो श्लोक. (भुजमगुरुसुगन्धं मूध्नर्यधास्यत्कदानु (श्रीभागवत स्कं. 10 अ. 47 श्लोक 21) सो ये चतुर्थपादको अर्थ करत-करत तीन प्रहर भए. तहां तांई आप ठाडे ही रहे. शरीरको अनुसन्धान कछू रह्यो नांही. तब उद्धवजीनें बिनती करी. जो महाराज चतुर्थपादको अर्थ मोको अवधारण होय गयो. तब आप आज्ञा कीए. जो हमनें तो एक श्लोकको समल्प कीयो हे. सो तितनों कहेंगे. तुमसों जितनों धारण होय तितनों करो. तब आपनें बारह प्रहरमें एक श्लोकको अर्थ कह्यो. तब तांई सब भगवदीयनकों महा आनन्द भयो. क्षुधा प्यास कछू बाधा करी नांही. ता पाछें आप नारदकुण्डमें स्नान करि ग्वालपोखरमें स्नान करिके मानसीगङ्गा चक्रतीर्थके नीचें आयकें बिराजे. सो यह चरित्र श्रीराधाकुण्डकी बेठकमें प्रगट कीए हें. ओर तो अनेक चरित्र कीए.

परन्तु यामें मुख्य हे सोई लिखे हें. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी श्रीराधाकुण्डकी बेठकको चरित्र समाप्त. 9.

बेठक 10 मी

(अथ श्रीमानसीगङ्गाकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब मानसीगङ्गाके उपर आपकी बेठक हे. तहां सात दिन तांई आप बिराजे. सो तहां श्रीभागवतको पारायण कीए. तहां कृष्णचैतन्यकी भजन करिवेकी बेठक हे. सो तहां कृष्णचैतन्य छे महिनांसों बेठे हते. ओर यह समल्प कियो हतो. जो सवालक्ष भगवन्नाम लेनों. ता पाछें काहूसों सम्भाषण करनों. सो भगवन्नाम सवालक्ष पूरे नांही भये हते. ता समय काहूनें कही. जो यहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे हें. तब यह सुनकें कृष्णचैतन्यनें ऊठिकें श्रीआचार्यजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. तब आप आज्ञा कीए. जो तुमकों इहां कितने दिन भए हें. तब कृष्णचैतन्यनें कह्यो. जो हमको इहां छे महिनां भए हें. मानसीगङ्गामें स्नान करतें. सो यह काछा हे. पुराणमें कह्यो हे जो मानसीगङ्गा दूधमय हे. सो ताको दर्शन होईगो तब स्नान करिकें श्रीजगन्नाथराय देवकों जाऊंगो. आज रात्रमें मोसों मानसीगङ्गानें कह्यो हे. जो आज रात्रमें श्रीआचार्यजी आप पधारेंगे. तब तेरो सर्व मनोरथ सिद्धि करेंगे. तब आप कहें. जो आज तुमारो सर्व मनोरथ पूर्ण होयगो. एसें कहिकें कमण्डलुको जल लेकें आपनें सब वैष्णवनके नेत्रनपें छिरके. तब दिव्यचक्षु भए. तब सबनकों मानसीगङ्गाको स्वरूप आधिदैविक दुग्धमय दर्शन भयो. तब सब वैष्णव दर्शन करिकें स्नान कीए. तब सबनके मनमें आर्विभाव भयो. सो दोयघडी रात्रसों लगायके आठघडी दिन चढ्यो तबलों सबनकों एसो दर्शन भयो. ता पाछें उनके नेत्रनमेंतें लीलाको तिरोधांन कीए. ओर जब तांई आप श्रीभागवतको पारायण कीए. तब तांई चक्रेश्वर महादेवजी नित्य कथा सुनिवेकों आवते. सो तहां महादेवजीको मुखिया हतो. सो वह नित्य पूजा करतो. वाकों नित्य साक्षात् दर्शन होतो. सो एक दिन वाकों मध्याह्न पर्यंत दर्शन नांही भयो. पाछें मध्याह्न उपरांत जब श्रीभागवतकी पारायण पूर्ण भई. तब श्रीमहादेवजी अपनें देवालयमें आए. तब वाकूं दर्शन भयो. सो तब वा ब्राह्मणनें पूजा करी ओर पूछी. जो महाराज अब तांई आप कहां गये हते. तब श्रीमहादेवजी कहें जो हम नित्य श्रीमहाप्रभुजीके पास कथा सुनिवेकों जात हें. सों जब हम आवें. तब तुम पूजा कियो करो. सो एक मास तांई आप श्रीमहाप्रभुजी वहां बिराजे. तहां तांई यमुनावतो तथा किलोलकुण्ड अडीङ्गमें स्नान करि आए. अब श्रीगोवर्धनमें ब्रह्मकुण्ड, रिणमोचन, पापमोचन, धर्मरोचन, गोरोचन, निवर्तकुण्ड, ईतनें कुण्डनमें स्नान करिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप परासोली पधारे. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीनें मानसीगङ्गाकी बेठकमें प्रगट कीए. ओर हू अनेक चरित्र कीए. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी मानसीगङ्गाकी बेठकको चरित्र समाप्त. 10.

बेठक 11 मी

(अथ श्रीपरासोलीकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब परासोलीमें बंसीबटके रासके दर्शन कीए. तहां चन्द्रसरोवरमें चन्द्रकूपमें स्नान कीए. सो चन्द्रसरोवरसों नेंक दूरि छोंकरके नीचें आपकी बेठक हे. तहां आप श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीभागवतको पारायण किये. तहां सात दिन बिराजे. ओर भगवदीयनकों रासलीलाके दर्शन करवाए. तहां एक वैष्णवनें आपसों बिनती करी. जो महाराज श्रीगिरिराजजीके दर्शन साक्षात् केसें होय. तब आप आज्ञा कीए. जो श्रीगिरिराजजीकी एक दिनमें तीन परिक्रमां करे. जो बिचमें कहूं बेठे नांहीं. तब श्रीगिरिराज निजस्वरूपको साक्षात् दर्शन देइं. तब वह वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकें गयो. सो वानें श्रीगिरिराजकी तीन परिक्रमां करी. तब वानें प्रथमतो एक श्वेत भुजङ्ग देख्यो. तब असगुन जांनिकें एक घडी तांई ठाडो रह्यो. ता पाछें आगें चल्यो. सो पूंछरीकी ओर एक ग्वालिया मिल्यो. वानें कही जो अरे बेरागी तूं आगें मति जाय. आगें तो सिंघ ठाडो हे. तब वाके चित्तकों भय भयो. तब वानें श्रीआचार्यजीके स्वरूपको चिन्तन मनमें कियो. तब वह सिंघ अन्तर्धान होय गयो. ता पाछें सुन्दरशिलाके पास एक गाय ठाडी देखी. ताकी परिक्रमां करिकें तत्काल वो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके आगें आय ठाडो भयो. ओर श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करिकें बिनती करी. जो महाराज आपकी आज्ञातें श्रीगिरिराजकी तीन परिक्रमां करि आयो. ओर मोकों श्रीगिरिराजको साक्षात् दर्शन भयो. तब आप आज्ञा कीए. जो वेदमें श्रीगिरिराजके पांच प्रकारके स्वरूपको वर्णन कियो हे. तामे एकतो गौरभुजङ्गस्वरूप हे. एक ग्वालस्वरूप हे. एक सिंघस्वरूप हे. एक गौरस्वरूप हे. ओर एक स्थूल भए हें. एसे पांच स्वरूप हें. सो जब तूं यहांतें चल्यो. तब प्रथम तो तेंनें एक भुजङ्ग देख्यो. तब असगुन जांनिके ठाडो भयो. पाछें तेनें ग्वाल देख्यो. ता पाछें एक सिंघ देख्यो. ता पाछें एक गायको दर्शन भयो. सो तेनें मेरी आज्ञासों जो श्रीगिरिराजकी तीनि परिक्रमा करी तासों तोकों श्रीगिरिराजके चार्यो स्वरूपनको दर्शन भयो. ओर यह स्थूलस्वरूपनको दर्शन तो सब कोई करे हें. एसें कहिकें मुसिकायके आप चुप करि रहे. पाछें आप दामोदरदासतें आज्ञा कीए. जो दमला श्रीभगवान् साक्षात् दर्शन देंय ओर ज्ञान होय. सो यह भगवदिच्छा जांनिये. ता पाछें दिवारीको उत्सव जांनिके सुन्दर शिलासों विजय कीए सो आप पेंठोगाम पधारे. तहां श्रीनारायणनें तपस्या करी हे. तब व्रजलीलामें प्रवेश भयो हे. तहां लक्ष्मीकूप हे. तहां श्रीलक्ष्मीजीने तपस्या करी हे तामें आप स्नान कीये सो यह कथा सामवेदमें हे. ता पाछें तहांते आन्योरमें पधारे. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी परासोलीकी बेठकमें प्रकट कीए. ओर हू अनेक चरित्र कीए हें. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी परासोलीकी बेठकको चरित्र समाप्त. 11.

बेठक 12 मी

(अथ श्रीआन्योरकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

आन्योरमें सदूपाण्डेके घरमें आप श्रीआचार्यजीकी बेठक हे. सो तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको तथा श्रीनाथजीको मिलाप भयो हे. सो तब श्रीआचार्यजीने एक छोटोसो मन्दिर बनवाईके तामें श्रीनाथजीको पाट बेठाये हे. सो या बेठकको चरित्र बहुत हे. जो श्रीनाथजीकों आपनें प्रकट कीए हें. सो सब निजवार्तामें प्रसिद्ध हे तातें यहां नांहि कहे. पाछें तीन दिन तांई श्रीआचार्यजी महाप्रभु तहां बिराजे ओर श्रीभागवतको पारायण कीए. सो यह चरित्र आपने सदूपाण्डेके घरमें प्रगट कियो. ओर हू अनेक चरित्र कीए हें. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी आन्योरकी बेठकको चरित्र समाप्त. 12.

बेठक 13 मी

(अथ श्रीगोविन्दकुण्डकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब गोविन्दकुण्डपें बेठक हे. तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप तीन दिनलों बिराजे ओर श्रीभागवतको पारायण करे. तहां कृष्णदासमेघनने बिनती करी जो महाराज श्रीगिरिराजमें व्यापिवैकुण्ठ सुनें हें. ताको दर्शन हमकूं करवाओ. तब यह सुनिके श्रीआचार्यजी आप चूप करि रहे. ता पाछें घडी दोय दिन बाकी रह्यो हतो. ता समय गोविन्दकुण्डके समीप श्रीगिरिराजके उपर आप बिराजे हते. तब कृष्णदासमेघनको अङ्गुरिया करिके बताए. जो ऊह शिला दीसे हें. ताकों ऊठाय सो ताके भीतर कन्दरा निकसेगी. या कन्दराके भीतर तूं चल्यो जाइयो. सो तहां तोकों व्यापिवैकुण्ठको दर्शन होयगो तब कृष्णदास तहां जायके देखे तो एक कन्दरा हे. तब वा कन्दरामें चल्यो गयो. सो तीन दिनलों चल्यो तब तहां ईनको व्यापिवैकुण्ठको तथा लीलासामग्रीको दर्शन भयो. ता पाछें कुण्डके उपर एक शुक देख्यो. सो वह अष्टाक्षरमन्त्रको उच्चार करे. तब कृष्णदासमेघननें तीन बेर श्रीकृष्णस्मरण कियो तब वानें तीन बेर जलमें चोंच बोरिके जल पियो. फेरि भगवदनांमको उच्चार करिवे लाग्यो. तब ईतनेमें कृष्णदासमेघनको निद्रा आय गई. तब गोविन्दकुण्ड उपर कृष्णदास आय ठाडो भयो. तब देखे तो घडी दोय दिन चढ्यो हे. तब कृष्णदासनें बिनती करी. जो महाराजाधिराज आपनें लीलासामग्रीके दर्शन करवाए. तब आप कहें. जो तुमनें लीलासामग्रीहीकी बिनती करी हती. सो एसें कहिकें आप चूप करि रहे. तब कृष्णदास फेरि कहें. जो महाराज वह पक्षी कोंन हतो. तब आप कहें जो वह पक्षी सारस्वतकल्पको सूआ हतो. वाकों श्रीस्वामिनीजीनें श्रीकृष्णनांम पढायो हतो. सो ईतनें दिनसों वह माधुरीके वृक्ष उपर बेठिकें भगवन्नाम लेत हतो. ओर वह माधुरीकुण्ड हे. तामें जल पान नांहीं करतो. जो जल पांन करूंगो तो भगवन्नाममें अन्तराय परेगो. सो तेनें तीन बेर भगवत्स्मरण कियो तब वानें तीन बेर चित्त देकें जल पांन कियो. सो जीवकों भगवन्नाममें एसी आसक्ति चाहिये. वाकों श्रीस्वामिनीजीको वरदान हतो. जो जादिन श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको सेवक आईकें

श्रीकृष्णस्मरण करेगो. तब तेरो शुक शरीर छूटिकें निज लीलामें सहचरी होयगो. तातें तोकों वाके लीयें उहां पठायो हतो. जब एक समय श्रीस्वामिनीजीकों प्रभुनके लियें विरह भयो हतो. तब क्षण एक युगके समांन भयो (क्षणयुगसतविप्रमया सो येन विरहा भवेत्) सो या श्लोकार्ध मेंतें कृष्णप्रेमामृतञ्च्इ1ञ्च्अ ग्रन्थ आप श्रीआचार्यजीनें कीयो तामेंको एक श्लोक
एकदा कृष्णविरहात् ध्यायन्ती प्रियसङ्गमम्॥
मनोबाष्पनिरासाय जल्पन्तीदं मुहुर्मुहुः॥1॥
या ग्रन्थमें श्रीकृष्णके एकसो सोळ नांम कहे हें ताको आप श्रीस्वामिनीजी जप करत भये. तबही प्रभुनको समागम भयो. सो संयोगरस प्राप्ति भयो. तब प्रभुनकों पूछी. जो या ग्रन्थको दांन कोंनकों करूं. तब श्रीठाकुरजी कहें. जो तुमारी बराबर होय ताकों दीजियो. जो मेरे समांन होयगो सोई बांचेगो. सो तब वह ग्रन्थ श्रीस्वामिनीजीनें अपनें श्रीहस्ताक्षरसों श्रीगिरिराजपें लिख्यो हतो. सो तहां सों यह ग्रन्थ श्रीआचार्यजी आपके हाथ लाग्यो. सो जा समय तहां श्रीस्वामिनीजीके श्रीहस्ताक्षर आपनें मनमें बांचके पाठ किये. ता समय कृष्णचैतन्यगोडिया तथा केशवभट्टकाश्मीरी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके पास ठाडे हते. विनसों ये श्रीस्वामिनीजीकें हस्ताक्षर बांचे न गये. तब विनकों श्रीआचार्यजीनें श्रीस्वामिनीजीके श्रीहस्ताक्षर बांचि सुनाये. तब कृष्णचैतन्यनें आपसों बिनती करी जो महाराज कृपा करिकें या ग्रन्थको दांन हमकों करों. सो ऊननें वा ग्रन्थकी प्रार्थना करी. तब वह ग्रन्थ आपनें कृष्णचैतन्यकूं दियो. ओर काश्मीरीकों न दीयो. सो यातें. जो एकबेर श्रीजगन्नाथजी आज्ञा किये हते. जो अब तुम अपनें मारगीनकोही ग्रन्थ दीजो. सो वह बातकी सुधि करिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभु वह ग्रन्थ कृष्णचैतन्यकोंही दीयो. ओर अब गोविन्दकुण्ड उपरसों आप विजय कीये. सो समर्षणकुण्ड तथा गन्धर्वकुण्डमें स्नान करि सघनकन्दरा तथा अप्सराकुण्ड होय श्रीबलदेवजीके दर्शन करिकें ऐरावतकुण्डपें श्रीबलदेवजीके दर्शन करिकें कदमखण्डी होयकें दण्डोतीशिलापें एक छोटेसे मन्दिरके पास छोंकरको वृक्ष हे तहां आप पधारे. सो तहां आप बिराजे. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु गोविन्दकुण्डकी बेठकमें प्रगट कीए. ओरतो अनेक कीए. इति श्रीगोविन्दकुण्डकी बेठकको चरित्र समाप्त. 13.

बेठक 14 मी

(अथ श्रीसुन्दरशिलाकीञ्च्इ1ञ्च्अ बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

तहां सुन्दरशिलाके सामनें छोंकरके नीचें आप श्रीआचार्यजी महाप्रभु आय बिराजे. तहां प्रथम श्रीगोवर्धनकी पूजा करि दीपमालिका करे. ओर अन्नकूटको उत्सव कीए. सो या बेठकमें श्रीआचार्यजी आप सवासेर भातको अन्नकूट कीए हते. सो ताको दर्शन श्रीगुसांईजीनें श्रीगोकुलनाथजीकों तथा श्रीशोभाबेटीजीकों अद्भुत अलौकिक करवाए. सो वार्ता वचनामृतमें प्रसिद्धि हे. बहुरि एक समय तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु भोजन करिकें

छोंकरके नीचें बिराजे हते. सो दामोदरदासकी गोदमें श्रीमस्तक धरिकें पोढे हते. ता समय श्रीनाथजी पधारे तब दामोदरदासजीनें बरजे. जो आप मति पधारो. तब आपके नूपुर सुनिकें श्रीआचार्यजी आप जागि परे. ओर आप श्रीनाथजी तो ऊहांई ठाडे रहे. तब आप श्रीआचार्यजीनें श्रीनाथजीकों अपनी गोदमें बेठारिकें श्रीकपोल परसिकें मुख चुम्बन किए. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी आप सुन्दरशिलाकी बेठकमें प्रगट किए. ओर हू अनेक किए हे. इति श्रीसुन्दरशिलाकी बेठकको चरित्र समाप्त. 14.

(1.श्रीगिरिराजमां. श्रीगिरिराजजीना मुखारविन्द सामे आ बेठक छे.)

बेठक 15 मी

(अथञ्च्इ1ञ्च्अ श्रीगिरिराजजीकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगिरिराजजीके उपर श्रीनाथजीके मन्दिरमें दक्षिणभाग एक चोंतरी हती. तापें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक हे. सो तहां सेवाके अवकाशमें आप बिराजते. सो एक समय श्रीनाथजीको सिंगार करिकें वा चोंतरीपें बिराजे हते. कारण जो सामग्री सिद्धि भई न हती. तातें गोपीवल्लभमें ढील भई. तब ईतनेमें श्रीस्वामिनीजी थार लेकें पधारी. तब नूपुरको शब्द सुनिकें श्रीआचार्यजी दामोदरदासतें कहें. जो दमला हमनें तो ढील करी. परन्तु श्रीस्वामिनीजी गोपीवल्लभको थार लेकें पधारे हें. क्यों जो वे ढील केसें सहें. तातें सिंगार भए पाछें गोपीवल्लभमें ढील न करनी. पाछें देव प्रबोधिनी पर्यन्त श्रीगिरिराजमें आप श्रीआचार्यजी बिराजे. तहां दोय पारायण श्रीभागवतकी कीए. एक प्रदक्षणां श्रीगिरिराजकी कीए (कोइ सातभी लिखें हें). पीछें गुलालकुण्ड, बिलछू, परमन्दरो श्रीदामांसखाको गांम हे. तहां आप एक रात्र रहे. तहां सो दूसरे दिन विजय कीए. सो यहां आदिबद्रिको स्वरूप धरिकें श्रीजीने अपने सखानको दर्शन दीए हें. तहां सघनवन हे. तहां एक रात्र बिराजे. ता पाछें तहांते दूसरे दिन इन्द्रकूपमें आचमन करि आगें कांमवन पधारे. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी श्रीगिरिराजकी बेठकमें प्रगट कीए. तामेंके मुख्य हे. सोई लिखे हें. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी श्रीगिरिराजके मन्दिरकी बेठकको चरित्र समाप्त. 15.

(1.श्रीगिरिराज उपर श्रीनाथजीना मन्दिरमां आ बेठक हाल प्रगट नथी तेम अहिं बेठक होवानुं कोइ श्रीगोस्वामी बालकोके वैष्णवो कहेता नथी. माटे कोइ अनुभवी खुलासो करशे एवी विनंती छे.)

बेठक 16 मी

(अथ श्रीकांमवनकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब कांमवनमें सुरभिकुण्ड(श्रीकुण्ड)के उपर छोंकरके नीचे आप श्रीआचार्यजीकी बेठक हे. आप तहां सात दिन बिराजे. ओर चोराशी कुण्डमें स्नान करि श्रीभागवतको एक पारायण कीए. सो एक दिन रात्रमें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप बिराजे हते. तहां एक ब्रह्मपिशाच बहुत दिननसों सुरभीकुण्डकी पारिके उपर रेहेत हतो. वानें कोई एसो पाप कीयो हतो. जो

वो व्रजकी रजसों मुक्त न भयो. सो जो कोऊ रात्रमें सुरभीकुण्डके उपर रहतो. ताकों वह भक्षण करि जातो. तातें वहांके तीर्थगुरुनें आपसों बिनती करी. जो महाराज दिनमें तो यहां आप सुखेन बिराजो. परि रात्रमें आप गांममें जाय बिराजियो. क्यों जो यहां ब्रह्मपिशाच दु:ख देत हे. तब यह सुनिके आप श्रीआचार्यजी चूप करि रहे. कछू उत्तर न दीए. ओर रात्रिको आप ऊहांई बिराजे. सो जब अर्धरात्र भई. तब वह ब्रह्मपिशाच निकस्यो. ता समय एक वैष्णव धोवती धोयके अपरस सूकावत हतो. सो ताने देख्यो. सो देखिकें वा वैष्णवनें श्रीआचार्यजी महाप्रभुसों बिनती करी. जो महाराज ब्रह्मपिशाच दूरि-दूरि डोलते हे. तब श्रीआचार्यजी आप कहे. जो यह आगिले जन्मको तो ब्राह्मण हतो. या कांमवनको राज्य करतो हतो. सो यानें ब्राह्मणनकों बहुत भूमि दांन करी हती. ता पाछें फेरि यानें लेलीनी हती. सो ता अपराध करिकें यह ब्राह्मण पिशाच भयो हे. सो दोयसों वर्ष (कोई नोसो वर्षभी लिखें हें) याको भए हें. सो व्रजरजसों हू याकी मुक्ति न भई. तब वा वैष्णवनें बिनती करी जो महाराज आपके दर्शनतें हू याकी मुक्ति न भई. तब आप श्रीआचार्यजीनें वापें अपरसकी धोवतीको जल छिरकवाए. ता जल करिकें वह मुक्त होय गयो. सो दिव्य शरीर धरिकें वैकुण्ठको गयो. तब सुरभीकुण्डपें निर्भयता भई. पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु कदमखण्डीपें होयके तथा चित्र विचित्र होयके ऊंचे गांम होयके भानोखरि प्रभृतिमें स्नान करिके श्रीलाडिलीजीके दर्शन किये तथा अष्ट सखीनके दर्शन करिके आधेपर्वतके उपर बिराजे. सो तहां आपकी बेठक हे. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु कांमवनकी बेठकमें प्रगट कीए. ओर हू अनेक कीए परन्तु मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीकांमवनकी बेठकको चरित्र समाप्त. 15.

बेठक 17 मी

(अथ श्रीगहवरबनकी बेठकको चरित्र प्रारम्भ:)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक बरसाना गहवरबनमें कुण्डके उपर हे. सो तहां आप सात दिन बिराजे. ओर श्रीभागवतकी एक सप्ताह कीए. फेरि एक दिन गहवरबनको देखिवेको आप पधारे. सो तहां सिंह. व्याघ्र, बहोत देखे. ताके आगे देखे तो तहां एक अजगर पर्यो हे. ओर वाको चेंटा बहुत काटत हे. तब वाको देखिके श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको दया आई. तब आप दामोदरदासतें कहे. जो दमला यह अजगर आगिले जन्ममें श्रीवृन्दावनको महन्त हतो. सो यानें उदर भरिवेके लीयें सेवक बहुत कीए हते. ओर यानें द्रव्य हू बहुत भेलो कियो हतो. सो सब विषयहेतुमें लगायो. भगवद्हेतुमें कछू न लगायो. ओर भगवद्भजन हू कछू नांहीं कियो. तातें यह मरिकें अजगर भयो हे. ओर जितनें सेवक किये हते. सो सब मरिकें चेंटा भए हें. सो अब याकों काटत हें. ओर यासों केहेत हें. जो अरे अधर्मी! तेंनें हमारो जन्मारो वृथा खोयो. जो तेनें हमकों सेवक काहेकों कीये हते. उद्धारतो दोय बातनसों होत हे. एक भगवन्नामसों तथा भगवत्सेवासों या दोनोंनमेंतें कछू न

भयो. ओर यानें वृन्दावन वास कीयो हतो. तातें यह व्रजहीमें रह्यो. सो व्रजको जीव अन्त नहीं जात हे. जातें दुःख सुख सब व्रजमेंही भोगवत हे. सो अब हमारी दृष्टि पर्यो हे. सो अब अपनें सब सेवकन सहित मुक्त होयगो. एसें आज्ञा करिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभु अपने अङ्गुष्ठको चरणोदक करिकें अपनें सेवकन द्वारा वापें छिरकवाये. तब ताही समय वाको अजगर शरीर छूटिकें दिव्य शरीर भयो. सो शिष्यन सहित विमांनमें बेठिकें पार गयो. सो सूधो वैकुण्ठकों चल्यो गयो. सो सब वैष्णवनको तथा सब बरसांनेंके व्रजवासीनकों दिखायो. सो देखिकें सब वैष्णव प्रसन्न भए. ता पाछें आप बरसानेंतें पधारे. सो पीरीपोखर तथा प्रेमसरोवरमें स्नान करिकें ता पाछें आप समेतबट पधारे. ओर हू अनेक कीए हें. परन्तु मुख्य हें सोई लिखे हें. इति श्रीगहवरबनकी बेठकको चरित्र समाप्त. 17.

प्रेमसरोवर उपर श्रीमहाप्रभुजीनी बेठक एक वृक्ष नीचे छे. पण आ स्थळनी बेठक चरित्रनुं वर्णन असल हस्तलीखीत पुस्तकोमां जोवामां नथी आवतुं. केटलाक आ बेठकने श्रीगुसांईजीनी बेठक छे. एम कहे छे. श्रीगुसांईजीनी बेठक चरित्रमां आ बेठकनुं चरित्र छे ते आगळ आवशे.

बेठक 18 मी

(अथ श्रीसमेतवटकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अथ श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक समेतवटके समीप कृष्णकुण्डके उपर छोंकरके नीचें बिराजे हे (कोई श्यामतमालके नीचें हूं लिखें हें). सो तहां सात दिनको श्रीभागवतको पारायण कीए. सो तहां एक स्त्री बहुत सुन्दर षोडष वर्षकी अनेक आभूषणन करिकें भूषित रत्नजटित डांडिको चमर हाथमें लेंकें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकों चमर करिवे लगी. सो जहां तांई श्रीभागवतको पारायण होय. तहां तांई ठाडी रहे. सो वाकों वैष्णव बरजिवे लगे. तब श्रीआचार्यजी आप नांहीं कीए. सो एसें सात दिनलों वानें चमर कीयो. सो जब कथाको आरम्भ होय तब वो आवे. ओर जब कथा सम्पूर्ण होय. तब अन्तर्धान होय जाय. पीछे वाकों कोई देखे नहीं. तब एक दिन एक वैष्णवनें आप सों पूछी. जो महाराज यह स्त्री कोंन हे. ओर कहांतें आवे हे. तब आप मुसिकायकें चूप करि रहे. फेर आप आज्ञा कीए. जो समेतदेवीकों हमारे दर्शनकी तथा सेवाकी बहुत आरति हती. सो सेवा प्राप्त भई हे. ता पाछें तहांतें आगें पधारे. सो रीठोरामें श्रीचन्द्रावलीजीके दर्शन करि नन्दगांममें पांनसरोवरनें नेंक दूरि नन्द छोंकर हे. तहां श्रीनन्दरायजी दसेराके दिन पूजन करते तहां आप पधारे. सो ताके नीचें श्रीआचार्यजीकी बेठक हे. सो चरित्र समेतबटकी बेठकमें प्रगट कीए. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी समेतबटकी बेठकको चरित्र समाप्त. 18.

बेठक 19 मी

(अथ श्रीनन्दगांमकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब नन्दगांममें पानसरोवरके उपर श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक हे. तहां खटमासलपें आप बिराजे. पाछें पारायण कीए ओर आज्ञा कीए. जो ईहां उद्धवजी खटमालसों बिराजे हें. तातें हम खटमास पर्यन्त रहिके श्रीनन्दरायजीको श्रीभागवत सुनावेंगे. ओर यहांके क्रीडास्थलनके दर्शन करेंगे. सो तब एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप पांनसरोवर उपर बेठे हते. तब ता समय एक मुगल घोडाकूं पांनी प्यायवेकों लायो. सो पांनसरोवरमें पानी प्यायके ले चल्यो. तब ता समय घोडाके पेटमें कुरकुरी दोरि. तातें वह घोडा लोट पीटिके मरि गयो. सो वह घोडा चतुर्भुज स्वरूप धरि विमानमें बेठिकें वैकुण्ठको गयो. तब वाकों सात्त्वकीय आर्विभाव भयो. सो श्रीआचार्यजीनें देख्यो तब मस्तक धुनायो. तातें वैष्णवनें बिनती करी जो महाराज घोडा मर्यो देखिके आपनें मस्तक धुनायो ताको कारन कहा. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप सब वैष्णवनको दिव्यदृष्टि दीए. ओर सब वैष्णवनतें कहे. जो तुम ऊंचो देखो. सो तब सब ऊंची द्रष्ट करिके देखें तो वे घोडा विमांन सहित वैकुण्ठको चल्यो जात हे. ता पाछें दिव्यदृष्टि तो मिटि गई. तब वा घोडावारे मुगलनें सब वैष्णवनतें बिनती करी. जो तुम मोकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको सेवक करवावो. तब सब वैष्णवनें आप श्रीआचार्यजीसों बिनती करी. तब आप वा मुगलको कहे. जो तेरो अङ्गीकार दूसरे जन्ममें होयगो. सो सुनिके वह मुगल फिरि गयो. परन्तु वाको अष्टप्रहर श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको ध्यान रहे. सो देह छूटे पीछें वानें नवानगरमें मोचीके घर जायके जन्म लियो. तब सङ्गजीभाइ वाको नांम भयो. सो मेले मन्त्र वापें बहुत आवते. तब वानें एक वैष्णवसों लडाई करी. वापें वीरविद्या (जादु) हती. सो वानें प्रयोग करिकें अर्द्धरात्रकों वा वैष्णवकों मारिवेकों वीर भजे. सो वीर वा वैष्णवके घर जाय सके नाहीं. सो पाछें फिरिकें आयकें वासों कही. जो वे तो श्रीगुसांईजीके सेवक हें. बडे महापुरुष हें. सो विनसों हमारी नांहीं चले. जब सवारो भयो. तब वह मोची वा वैष्णवके पायन आय पर्यो. ओर बिनती करिकें कही. जो आप तो बडे महापुरुष हो. सो आप हमकों सेवक करो. तब वा वैष्णवनें कही. जो तुम मेले यन्त्र मन्त्र छोडि देऊ. तब तुमकों सेवक करावें. तब वा मोचीनें सब मेले यन्त्र मन्त्र छोडि दीए. तब केतेक दिन पीछें श्रीगुसांईजी-श्रीविट्ठलनाथजी आप श्रीद्वारिकाजी पधारे. तब नवानगरके सब वैष्णवननें श्रीगुसांइजीसों बिनती करी. जो महाराज कृपा करिकें याकों शरण लीजिये. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा कीए. जो याकों अङ्गीकार करवेकों तो हम इहां पधारेही हें. सो तब श्रीगुसांईजीने वा मोचीकोंज्च्इ1ज्च्अ नांम दे ब्रह्मसम्बन्ध करवाए. कुमकुम वस्त्रपें धरिकें अपनें चरणारविन्दकी सेवा पधराय दीए. तब वह धोती उपरनां पहरिवे लग्यो. ओर बडी अपरसतें सेवा करतो. सो तब तहांके ब्राह्मण स्मार्त हते सो सब ईर्षा करन लागे. तब ऊहांको राजा जामंतकमाची हतो. सो तब वे ब्राह्मण वा राजापें जायकें पुकारे. जो सुनो राजाजी ईहां एक अतिशूद्र रहत हे. सो वह ब्राह्मणनकी चाल चलत हे. सो सुनिकें वा राजानें वा मोचीकों बुलायकें पूछी. जो तूं ब्राह्मणनकी चाल क्यों चलत हे. तब वा

मोचीनें कही जो मोकों श्रीगुसांईजी अपनों सेवक करिकें ब्राह्मण कीये हें. तब यह सुनिके राजा बहुत प्रसन्न भयो. ओर केहेन लाग्यो. जो ब्राह्मण भ्रष्ट होय जाय. सो तो शूद्र होय जाय. परन्तु कहूं शूद्र ब्राह्मण भयो हे? जो दूधमेंतें छाछि तो होत हे. परन्तु कहूं छाछिमेंतें दूध भयो हे? तब सङ्गजीभाईनें कही. जो राजाजी छाछिमेंतें दूध होय जाय तो आप मानों. तब राजानें कही जो यह बात तो आछी हे. ता पाछें राजानें छाछिकी चपटिया भरवाय मंगाई. ता समय सब सभा भेली भई बेठी हती. और सब ब्राह्मण बेठे हते. तब वे छाछिकी चपटिया सभाके बीचमें धरी. तब सङ्गजीभाईनें सब सभाके देखत कह्यो जो मोकों श्रीगुसांईजीनें ब्रह्मसम्बन्ध करायकें ब्राह्मण कियो होय ता छाछिमेंतें दूध होय जैयो. ओर जो में मोचीको मोची होऊं तो छाछकी छाछ रहियो. ता पाछें मटुकी खोलें. तब देखें तो छाछिमेंतें दूध न्यारो होय गयो हे. तब जामंतकमाची तथा सब ब्राह्मण चक्रत होय रहे. तब सबननें प्रमांण कियो. जो श्रीगुसांईजीके ब्रह्मसम्बन्धको बडो प्रभाव हे. ता पाछें जामंतकमाची तथा सब ब्राह्मण श्रीगुसांईजी फिर वहां पधारे तब आपके सेवक भए. सो तब वे सब अपरससों सेवा करिवे लगे. तब वा मोचीकों कोई टोकतो नांहीं. क्यों जो वा राजाको परमानों होय गयो. तहां केशवदास तथा गोविन्ददास दोऊ भाई सारस्वत ब्राह्मण हते. तिनके सङ्गतें वह सङ्गजीभाई वैष्णव भयो हतो. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी दृष्टि वा मुगल उपर परी हती. ता करिकें वह मुगल बडो भगवदीय भयो हतो सो वा सङ्गजीभाईके सङ्गतें राजा जामंतकमाची ओर सब ब्राह्मण भगवदीय भए सो श्रीगुसांईजीके सेवक भए. ओर अनेक जीवनको श्रीगुसांईजी आप उद्धार कीए. सो याही जन्ममें वा सङ्गजीभाई लीलामें प्राप्त भए. ओर बहुत विस्तार सङ्गजीभाईकी वार्तामें हे. सो यासों यहां सङ्क्षेपमात्र लिखे हें. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप नन्दगांमकी बेठकमें दिखाए. सो कहां तांई लिखिये. एसे-एसे आपनें अनेक चरित्र दिखाए हें. पाछें श्रीआचार्यजी आप तहांसों विजय कीए. सो करहला, अञ्जनोखरि होयकें पिसायो खिद्रबन होय. जाववट होयकें तहांतें आप कोकिलावन पधारे. सो तहां कोकिलावनमें कृष्णकुण्डके उपर बेठक हे. इति श्रीनन्दगांमकी बेठकको चरित्र समाप्त. 19.

श्रीकरहला:-आ स्थळे कुण्ड उपर श्रीमहाप्रभुजीनी बेठक छे. तेम श्रीगुसांईजी तथा श्रीगोकुलनाथजीनी एम त्रण बेठको साथे साथे छे. छतां आ स्थळनुं चरित्र वर्णन नथी ने बेठको त्रणे प्रगट छे. श्रीगुसांईजी तथा श्रीगोकुलनाथजीनी बेठक चरित्र वर्णन आगळ आवशे, पण श्रीमहाप्रभुजीनी बेठक चरित्र नथी. माटे कोइ अनुभवी वैष्णवना जाणमां चरित्रवर्णन होय तो अमने मोकली आपवा कृपा करशो.

बेठक 20 मी

(अथ श्रीकोकिलावनकी बेठकको चरित्र प्रारम्भ:)

अब कोकिलावनमें श्रीकृष्णकुण्डके उपर छोंकरके नीचे श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक हे. तहां एकमास पर्यंत आप बिराजे हे. सो तहां श्रीभागवतको पारायण कीए हे. तहां कोकिलावनमें निम्बार्कसम्प्रदायको चतुरानागा करिकें वैष्णव हतो. सो वाके सङ्ग हजार नागा सदां रहते. सो वानें आईकें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकों दण्डवत् करी. ओर बिनती करी. जो महाराज आप विष्णुस्वामीके मतके आचार्य हो. ओर जगतमें विजय कियो हे. ओर मायामतको खण्डन कियो हे. ओर भक्तिमार्गको स्थापन कियो हे. तातें हमारे हजारों साधु हें तिनको खीरको भोजन करवावो. तब श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए. जो बहुत आछो. ईनको भोजन करवावेंगे. तब आप कृष्णदासतें कहे. जो कहूंते पांच शेर दूध लावो. तब कृष्णदास नन्दगांममेंतें पांच शेर दूध लाए. तब आप श्रीआचार्यजीनें वासुदेवदासछकडासों कही. जो याकी खीर करिकें इन हजारन बेरागीनकों जिमाय देऊ. तब वासुदेवदासछकडानें खीर सिद्धि करी. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु अपनि दृष्टि करिकें देखें. तब देखतमात्र वह खीर अक्षय होय गई. ता पाछें ऊन बेरागीनतें आपनें कही. जो तुम पातरि दोनां लेकें अपनी पंगति करिकें बेठो. सो तब वे नागा पंगति करिकें बेठे. तब वासुदेवदासछकडा जिमायवे लगे. तब सब नागानकों जिमाई दीए. ता पाछें सब वैष्णव भली भांतसों जें ऊठे. ओर खीर पांच शेर ज्योंकी त्यों रही. सो निबटी नांहीं. ता पाछें आप आज्ञा कीए. जो ईहांके बन्दरनकों तथा ईहांके मोरनकों खवाय देउ. सो तब ऊनहूंकों खवाय दई. तोहू खीर ज्योंकी त्यों रही निवडी नांहीं. तब आप आज्ञा कीए जो यह खीर मेंनें द्रष्टि करिकें प्रसादी करि दई हे. तातें तोकों कछू बाधा नांहीं. तू लेजा छोडे मति. तब एक हांडी लायकें तामें वा खीरकों ठलायकें वासुदेवदासछकडा ले गए. तब वह खीर निबटी. सो तब यह चरित्र देखिकें चतुरानागा दोउ हाथ बांधि गरेमें पटुका डारिकें आईकें श्रीआचायजीमहाप्रभुनकूं दण्डवत् करी. ओर बिनती करी. जो महाराजाधिराज आप तो पूर्णपुरुषोत्तम हो. आपको स्वरूप मेंनें जान्यो नांही. अब आप कृपा करिकें मोकों अपनों सेवक करिए. तब आप श्रीआचार्यजी आज्ञा कीए. जो तुम सेवक ही हो. जो आगे हमारे नांती श्रीगोकुलनाथजी नांम करिकें प्रगट होंयगें. सो तुमकों सेवक करेंगे. तब वा चतुरानागानें बिनती करि जो महाराज तहां तांई मेरे शरीरकी यह स्थिति केसें रहेगी. तब आप आज्ञा कीए. जो तेरी देढसें वर्षकी आयुष्य हे. सो तामें अब चालीस वर्ष ताकों भए हें. बाकी एकसो दशवर्षके भीतर तेरो अङ्गीकार कीयो जायगो. ता पाछें चतुरानागा आछो भगवदीय भयो. सो व्रजमें पर्यटन करतो. सो एक समय चतुरानागा चले जात हते. तब एक वृक्षमें जटा अरुझी. सो झुरझावन लागे. सो झुरझावतिमें वृक्षको पतौआ टूटि पर्यो. तब तीन दिन तांई ठाडे रहे. ओर जटा सुरझी नांहीं. सो श्रीनाथजीनें आईकें जटा सुरझांई. वाको श्रीनाथजीके शृङ्गारको नेंम हतो. ता पाछें केतेक दिन पाछें जब बादशाहनें सबकी माला उतरवाई हती. तब एक दिन श्रीगोकुलनाथजी मथुरा पधारे हते. सो मार्गमें चतुरानागा मिल्यो. तब माला न देखी. तब आप चतुरानागासों आज्ञा कीए. जो अरे चतुरानागा! हम

गृहस्ती होयकें माला नांही उतारत हें. ओर तूं बेरागी होयके माला क्यों उतारी. तेरो बादशाह कहा करतो. सो तब वह पावन पर्यो. ओर आंखिनमेंसों आंसू आय गए. ओर बिनती करी. जो महाराज आप कृपा करिकें माला पहेराओ तो पेहेरूं. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको वचन सुधि करिकें वाकूं श्रीगोकुलनाथजीनें माला दई. ओर वाको सेवक कियो. तबतें श्रीगोकुलनाथजी वाके उपर बहुत प्रसन्न रहते. सो वानें एक धमार बनाई हे. तामें एसे कह्यो हे जो (सारङ्गीके प्रतापतें जन पाए गोकुलचन्द) सो यह धमार श्रीगोकुलनाथथीके वहां गाई जात हे. ता पाछें जब देढसें वर्षकी अवस्था पूर्ण भई. तब वाञ्च्इ1ञ्च्अ चतुरानागानें जायकें गोविन्दकुण्डपें समाधि लगाई. सो लिलामें जायके प्राप्त भए यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कोकिलावनकी बेठकमें प्रगट कीए. ओर हू अनेक चरित्र कीए. परन्तु मुख्य हें सो लिखे हें. इति श्रीकोकिलावनकी बेठकको चरित्र समाप्त. 20.

आ चतुरानागाए श्रीगोकुलनाथजीने होरी खेलावीने धमार गाइ छे ते नीचे आपी छे. आ धमार श्रीगोकुलनाथजीनां मन्दिरोमां गवाय छे.

॥राग काफी॥
हो मेरे ललना प्रथम प्रणाम करों श्रीवल्लभ, समरो श्रीविट्ठलनन्द हो, हिलिमिलि झुरमट खेलीये. पर आओ रंगीले नाह हो. हिलिमिलि
नेक होरी श्रीवल्लभ साथ हो. ध्रुव.
हो मेरे ललना श्रीविठ्ठल गृह प्रगट भये, मानों प्रगटयो पूरण चन्द हो. हिलि.
हो मेरे ललना श्रीगोकुलनाथ सुहावनो, सब मिलि देखन जाय हो. हिलि.
हो मेरे ललना उडत गुलाल अबीर ज्यों, श्रीवल्लभ छिरके जाय हो. हिलि.
हो मेरे ललना श्रीगोकुल विथनी सामरी, ओर मचीहे अरगजा कीच हो. हिलि.
हो मेरे ललना ताल मृदङ्ग डफ बांसुरी, ओर घुमडी रह्यो सिंध द्वार हो. हिलि.
हो मेरे ललना धोती उपरना केसरि, ओर केसर भीनी पाग हो. हिलि.
हो मेरे ललना तुलसिमाल ओर मुद्रिका, ओर गरे गुञ्जाको हार हो. हिलि.
हो मेरे ललना एसे खेले प्रान प्रिया, ओर सब दिन फागुन बिच हो. हिलि.
हो मेरे ललना खेलि चली आनन्दसों, ओर आनन्द कह्यो न जाय हो. हिलि.
हो मेरे ललना चलन हसन मनमें गडी, ओर बेंनन कह्यो न जाय हो. हिलि.
हो मेरे ललना श्रीविट्ठलजु के लाडिले, ओर चित्त लीयो चित्त चोरी हो. हिलि.
हो मेरे ललना भाग्य बडे गुजरातिनके, जीन दिनो सर्वस्व वारी हो. हिलि.
हो मेरे ललना सारङ्गी प्रताप तें, ओर पाये श्रीगोकुलनाथ हो. हिलि.
हो मेरे ललना श्रीगोकुलनाथके वारने, ओर ‘चतुरा’ बलि बलि जाय हो. हिलि.

श्रीचीरघाट- आ स्थळे श्रीमहाप्रभुजीनी बेठक छे पण चरित्र वर्णन नथी. तेम श्रीगुसांईजीनी बेठक छे ते चरित्र आगळ आवशे परन्तु श्रीमहाप्रभुजीनी बेठक चरित्र कोई अनुभवी जाणता होय तो मोकलवा कृपा करशो.

बेठक 21 मी

(अथ श्रीभाण्डिरवनकीञ्च्इ1ञ्च्अ बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब आप श्रीआचार्यजी कोकिलावनसों विजय कीए. सो वडीबठेन, छोटिबठेन तथा कोटवन होईके शेषशाई पधारे तहां एक रात रहे ता पाछें फेरि तहांतें रामघाट तथा गोपीघाट, गुञ्जावन, निवारनवन, ये सब उपवन सो तिन सबके दर्शन करिके चीरघाट तथा नन्दघाट होईके भाण्डिरवन पधारे. तहां आपकी बेठक हे. तहां बिराजे. तहां सात दिनको श्रीभागवतको पारायण कीए. सो तहां एक मध्वाचार्य सम्प्रदायको व्यासतीर्थ स्वामी महन्त हतो. वाको एक महास्थल हतो. सो वानें आयकें श्रीआचार्यजी सों कही. जो मेरे लाखन तो सेवक हें. सो बडी गादी मध्वाचार्य सम्प्रदायकी हे. ओर मेरो घर दक्षणमें हे. ओर बडे राजा मेरे सेवक हे. ओर मेरे सेवक माधवेन्द्रपुरी हें. तिनके सेवक कृष्णचैतन्य भए. सो अब लक्षावधि तो मेरे पास रुपैया हें. सो अब में आपकों देउं. ओर यह गादी आप लायक हे. तातें आप बिराजो. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें जो याको प्रतिउत्तर हम कल्हि देइरुंगे. तब वह अपनें आश्रममें गयो. सो ता पाछें अर्धरात्र भई. तब कोऊ चारि जनें मुगदर लेकें आए तिननें वाकों बहुत मार्यो. सो वे मारततो जोंय परि दीसें नांही. तब याने कही. जो तुम कोंन हो. तब उन मारनहारेनने कही. जो हम श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके दूत हें. तेरी कहा सामर्थ्य हे जो तूं श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकों गादीपें बेठारे. तब तासों अब तूं आपनो भलो चाहे तो श्रीआचार्यजीके पावन परियो. नांहींतो हम तोकों ठोर मारेंगें. तब प्रातःकाल वह महन्त आयकें श्रीआचार्यजीके पावन पर्यो. ओर बिनती करी. जो मोकों सेवक करो. जो मेंनें आपको स्वरूप जान्यो नांहीं. सो क्षमा करो. तब श्रीआचार्यजी वासों कहें. जो तूंतो सेवकही हे. तब वा व्यासतीर्थस्वामीने बिनती करी. जो महाराज कृपाकरिकें मोकों शरण लीजिये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप वाको अङ्गीकार कीए. पाछें उहांते वेलवन तथा भद्रवन होयकें मानसरोवर पधारे. यह चरित्र भाण्डीरवनकी बेठकमें प्रगट कीए. इति श्रीभाण्डीरवनकी बेठकको चरित्र समाप्त. 21.

उपदेष्टा गुरु हतो. सो ताके दर्शनको कृष्णदाससों कही. जो अरे कृष्णदास! तुं मेरो सेवक होयकें श्रीआचार्यजीको सेवक क्यों भयो. तब कृष्णदासनें कही जो मेरे गुरुतो आपही हो. आपहीकी कृपातें मेंनें श्रीपूर्णपुरुषोत्तम पाए हें. तब वानें कही. जो तिहारे कहेतें पूर्णपुरुषोत्तम क्यों होंई. तब कृष्णदासनें बरती अग्नि हाथमें लेकें यह कही. जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप श्रीपूर्णपुरुषोत्तम होय तो अग्नि मोकों मति जारै. ओर जो

अन्यत्र होय तो यह अग्नि मोकों भस्म करि दीजियो. जो एसे कहिकें एक मुहूर्तलो अग्नि हाथमें राखी. तब वा गुरुने अग्नि हाथमेंसो गिरवाय दई. सो एसो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप माहात्म्य दिखाए. ओर एकसमय वहां श्रीआचार्यजी आप श्रीगङ्गाजीमें स्नान करत हते. तहां आपके बडे भाई केशवपुरी पृथ्वीपरिक्रमा करत आय मिले. सो श्रीगङ्गाजीके परलेपार नावबिनां चले जायकें सक्ध्यावन्दन किये. पाछें वेसेंई चले आयकें श्रीआचार्यजीके निकट ठाडे रहे. सो अपनी सिद्धाई श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको दिखाई. सो यह बात आपकों आछी न लागी. तब श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए. जो सिद्धाई तो भगवत्सेवा हे. सो तो करि नांही. या सिद्धाईतें कहा सिद्ध भयो. तब दूसरे दिन विनकी सब सिद्धाई आपनें हरी लई. सो जब दूसरे दिन वे वसेंई गङ्गापार जायवे लगें तब डुबने लगे. तातें श्रीआचार्यजीको नांम लेकें पुकारन लगे. तब ता समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप गङ्गांकिनारेपें सक्ध्यावन्दन करत हते. तातें आप अपनी भुजा पसारिके श्रीगङ्गाजीकी मध्य धारामेंतें केशवपुरीको तटपें काढि लीए. सो यह चमत्कार देखिके केशवपुरी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके पावन आय पर्यो. ओर कही. जो आप तो ईश्वरको अवतार हो. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप सोरमघाटकी बेठकमें प्रगट कीए. ओर तो अनेक कीए. परन्तु यामें मुख्य हे. सोई लिखे हें. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी सोरोंघाटकी बेठकको चरित्र समाप्त. 23.

(1.आ तथा बीजी बेठकोए जवाना रस्तानी माहीतीवाळी वधु विगत माटे जुओ “तीर्थयात्रानो हेवाल” ए पुस्तक.
2.कृष्णदास मेघननी वधु माहीतीवाळी वार्ता माटे अमारा तरफथी प्रगट थयेल “चौराशी वैष्णवनी वार्ता” तथा “भावसिन्धु” ए ग्रन्थो जुओ.)

बेठक 24 मी

(अथ श्रीचित्रकूटकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब चित्रकूटपें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक हे. सो कान्तानाथपर्वतके समीप हे. तहां श्रीरामचन्द्रजीने चातुर्मास कीयो हे. तातें आप श्रीआचायर्जजीने श्रीभागवतको पारायण करिकें 16 दिन वाल्मीकिरामायणको पाठ कियो. तब श्रीहनुमानजी एक पांवसों ठाडे होयके श्रीआचार्यजी महाप्रभुनसों कथा श्रवण करे. तब आप आज्ञा कीए जो तुम बेठिके कथा श्रवण करो. तब श्रीहनुमानजी कहें. जो मेरेतो यही समल्प हे. तब श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए. जो यहां कान्तानाथपर्वत हे. सो श्रीगिरिराजको भाई हे. तातें हमकों इनके उपर पांव न धरनों. तब कान्तानाथने मनमें विचार्यो. जो मेरे उपर श्रीआचार्यजी पधारे तो आछो. सो तब एक ब्राह्मणको स्वरूप धरिके कान्तानाथपर्वत श्रीआचार्यजीके पास आयो. तब आईकें बिनती करी जो महाराज श्रीजानकीजी ओर रामचन्द्रजी मेरे हृदय शिखरपें बिराजत

हे. उनने आज्ञा करी हे. जो तुम श्रीआचार्यजी महाप्रभुनसो जायके कहो. जो हमको भुख लगी हे. सो कछू सामग्री लेकें पधारो. तब ता समय श्रीआचार्यजी आप श्रीठाकुरजीको भोग धरिकें बिराजे हते. तब दामोदरदासतें कहीं. जो केलाकी फरी संमारो. तब पके-पके केलाकी 42 फरी समांरिके दामोदरदासनें सिद्ध करी. तामें मिश्री तथा ईलायची डारी. ओर गुलाबजल पधरायो. तब कृष्णदासमेघननें बिनती करी. जो महाराज गुलाबजल तो खासा श्रीठाकुरजीको हे. तब श्रीआचार्यजी आप मुसिकाईके चूप करि रहे. पाछें आज्ञा कीए जो श्रीरामचन्द्रजी हू मर्यादा आदिपुरुषोत्तम हे. तासों कछू चिन्ता नाहीं. ता पाछें एक कारिका कही सो. श्लोक.

सेतुबन्धनमात्रैकं चरितं हरिसम्मतम्॥
दोषभावाय नारीणां लमास्थानं निरूपितम्॥1॥

ता पाछें कान्तानाथकी शिखरपें आप पधारे. सो तहां देखें तो एक रत्नशिलाके उपर श्रीरामचन्द्रजी ओर श्रीजानकीजी बिराजे हें. ओर श्रीलक्ष्मणजी शेषरूप होयकें छाया करत हें. ओर हनुमानजी हाथ जोरिकें ठाडे हें. तहां आप पधारे. तब श्रीरामचन्द्रजी श्रीआचार्यजीसों मिले. पाछें हाथ पकरिकें रत्नशिलापें बेठारे. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें वह सामग्री आगें धरी. सो दोऊ स्वरूप आरोगे तामेको प्रसाद श्रीलक्ष्मणजी तथा श्रीहनुमानजीकों दिये. ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु ओर श्रीरामचन्द्रजी एक मुहूर्त तांई वार्ता कीए. तब परस्पर बहुत आनन्द भयो. तब श्रीरामचन्द्रजी कहें. जो मोकों आपके हाथसों आरोगनों हतो. तातें तुमकों बुलाए. पाछें श्रीआचार्यजी श्रीरामचन्द्रजीकी आज्ञा लेकें नीचें अपनी बेठकमें पधारे. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप चित्रकूटकी बेठकमें प्रगट कीए. ओर तो अनेक कीए. तामें मुख्य हें सोई लिखें हें. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी चित्रकूटकी बेठकको चरित्र समाप्त. 24.

बेठक 25 मी

(अथ श्रीअयोध्याकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब अयोध्यामें सरयूके तीर गुसांईघाटपें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक हे. सो तहां बिराजे पाछें एकसमय आप अयोध्याजीमें कोईक स्थलके दर्शन करिवेकों पधारे. वा स्थलपें वाल्मीकिरामायण होत हती. तहां श्रीहनुमानजी श्रवण करत हते. तब हनुमानजीनें कही. जो आप कृष्णउपासक होयकें श्रीरामचन्द्रजीकी पुरीमें पधारे हो. तब श्रीआचार्यजी कहें. जो हमतो अपनें श्रीठाकुरजीकी ससुरारि जांनकें पधारे हें. ओर तुम नग्न होयकें कथा सुनो हो. तातें एक लङ्गोटी लगायकें कथा सुनों तो आछो. सो वाही दिनतें जहां रामायण होत हे. तहां एक वस्त्र बिछावत हें. पाछें श्रीहनुमानजीनें कही जो आप अयोध्याकों श्रीकृष्णकी ससुरारि केसें बताइ सो कहो. तब आप कहें. जो पूर्वे अयोध्याको राजा अग्निजित हतो. ताकी बेटी श्रीसत्याजी हती. सो श्रीकृष्णकों ब्याही हती. जब सात बेल नांथे हे. तब

अग्निजितनें श्रीसत्याजीको ब्याह कीयो. तातें ससुरारि कही. पाछें श्रीरामचन्द्रजीकी बेठकमें श्रीआचार्यजी महाप्रभु मिलिवेको पधारे. तब आप श्रीआचार्यजी कहें. जो मर्यादापुरुषोत्तमाय नमः. तब हनुमानजीको सुनिकें बडो सन्देह भयो. सो अन्तःकरणहीमें राखे. काहूसों कह्यो नाहीं. ता पाछें श्रीरामचन्द्रजी अपनें मेहेलमें पधारे. तब हनुमानजीको सन्देह जांनिकें श्रीरामचन्द्रजीने विनकों श्रीआचार्यजीके पास पठाए. जो यह सामग्री हे. सो श्रीआचार्यजीकों दे आवो. तब हनुमानजी तहांतें चले. सो देखें तो श्रीरामचन्द्रजीको स्वरूप धरिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप बेठे हें. तब हनुमानजीनें दण्डवत् करी. ओर वह सामग्री आगें धरी. ता पाछें हनुमानजी श्रीरामचन्द्रजीके पास आईके सर्व वृत्तान्त कहे. तब श्रीरामचन्द्रजी कहें. जो ये मेरो स्वरूप धरिलेय. परन्तु मोसों ईनको स्वरूप धर्यो नांहीं जाय. सो याको आशय यह है. जो श्रीरामचन्द्रजीतो श्रीपुरुषोत्तमके हास्यको अवतार हें. सो द्वितीयस्कन्धकी श्रीसुबोधिनीजीके सातमे अध्यायमें आप कहे हें जो हास्यतो श्रीमुखतें प्रगट होत हे. ओर श्रीआचार्यजी तो पूर्णपुरुषोत्तमके मुखारविन्दकी अधिष्ठाता अलौकिक आनन्द समयकी अग्निरूप हें. सो यह निश्ये भयो. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप अयोध्याजीकी बेठकमें प्रगट कीए. ओर तो अनेक कीए. तामें मुख्य हें सोई लिखे हें. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी श्रीअयोध्याकी बेठकको चरित्र समाप्त. 25.

बेठक 26 मी

(अथ श्रीनैमिषारण्यकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक नैमिषारण्यक्षेत्रमें गोविन्दकुण्डके उपर छोंकरके नीचें हे. सो तहां आप सात दिनको श्रीभागवतको पारायण कीए हें. एक दिन जप पाठ करिकें जहां अदृश्य अठ्यासीहजार शौनकादिक ऋषि यज्ञ करत हते तहां गुप्त रीतिसों उनके यज्ञमें आप पधारे. तब सब ब्राह्मणनें प्रशंसा करी. ओर आसनपें पधरायकें श्रीआचार्यजीकी बहुत पूजा करी ओर एक श्लोक कहें सो. श्लोक.

नैष्कर्म्यमप्यच्युतभाववर्जितं न शोभते ज्ञानमलं निरञ्जनम्॥
कुतः पुनः शश्वद्भद्रमीश्वरे न चार्पितं कर्म यदप्यकारणम्॥12॥

(श्री भा. प्र. स्क. अ. 5 श्लोक 12) या श्लोककी व्याख्या आप श्रीआचार्यजीनें तीन प्रहर तांई कीए. ता पाछें सब वैष्णवनके पास आप बाहिर पधारे. सो देखें तो सब वैष्णवनकूं मूर्छा आई हे. तब कमण्डलुमेंतें जल लेकें छिरके. तब सब सावधान भए. तब सब वैष्णवनने दण्डवत् करिकें पूछी. जो महाराज तीन प्रहरतें आप कहां पधारे हते. जो आप विनां हमारे प्राण बहुत कष्ट पावत हें. तब आप कहें. जो इहां अठ्याशीहजार शौनकादिक ऋषि हें. सो यज्ञ करें हें. ता यज्ञके दर्शन करिवे गए हते. तहां उनने श्रीभागवतको प्रश्न कीयो. ताकी व्याख्या करते-करते तीनप्रहर व्यतित भए. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप

नैमिषारण्यकी बेठकमें प्रगट कीए. ओर तो अनेक कीए परन्तु यामें मुख्य हें. सोई लिखे हें. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी नैमिषारण्यक्षेत्रकी बेठकको चरित्र समाप्त. 26.

बेठक 27 मी

(अथ श्रीकाशीजीकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब काशीमें शेठ पुरुषोत्तमदासके घर श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक हे. सो प्रथम आप तहां नन्दमहोत्सव प्रगट कीए हे. ता समय श्रीनन्दरायजी, श्रीयशोदाजी, श्रीवृषभानजी, उपनन्दादी, गोप तथा ग्वाल व्रजभक्त साक्षात् स्वरूपात्मक पधारे. सो नन्दमहोत्सव भयो. तहां विश्वेश्वरजी महादेवजी दर्शनकों पधारे हे. सो प्रसङ्ग शेठ पुरुषोत्तमदासकी वार्तामें विस्तार करिकें लिखे हें. पत्रावलम्बन ग्रन्थ श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप यहांही प्रगट कियो हे. ओर तहां श्रीकृष्णपूर्णपुरुषोत्तम स्थापन किए. ओर मायामत खण्डन कियो. सो काशीमें मत्तमातङ्ग पण्डित हते. तिन सबनकों निरुत्तर कीए. वे केहेत हते. जो भाष्यतो तीन हें. चोथो भाष्य विवेचन नांही हे. सो ऊनकों जीतिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभु अणुभाष्य निरूपण कीए. शमरको विरुद्ध मत हतो. सो ताको खण्डन कीए. सो वा पत्रावलम्बनके तीस श्लोकनमें मायावादी पण्डितनकों निरुत्तर करि दिए. सो तब वे महादेवजीके द्वारपें मरनें बेठे. ओर कहें जो आप शमराचार्यको स्वरूप धरिकें ब्रह्मको निराकार स्वरूप वर्णन कीयो हे. ता मतको श्रीवल्लभाचार्यजी खण्डन करिकें साकारब्रह्मको स्थापन कीए हें. तब आप श्रीमहादेवजी स्वप्नमें आज्ञा कीए. जो श्रीआचार्यजी कहें सो सत्य हे. सो विश्वेश्वरजीकी प्रतिमासों यह शब्द भयो. सो श्लोक.

सत्यं सत्यं च सत्यं च सत्यं श्रीवल्लभोदितम्॥

प्रवर्ता च प्रवर्त्यं च प्रवर्तेत पुनः पुनः॥2॥

प्रवर्तय शमर प्रति. (सो याको आशय कहें. जो श्रीवल्लभाचार्यजी कहें सो सत्य हे. ताही प्रमाण चलनो. पद्मपुराणमें श्रीमहादेवजी जीवनकों बहिर्मुख करिवेकी आज्ञा कीए सो. श्लोक.

त्वं च रुद्र महाबाहो मोह शास्त्रं प्रकाशय॥

प्रकाशकुरु चात्मानमप्रकाशं च माकुरु॥1॥

ओर आप काशीमें बहुत दिनलों बिराजे. सो तहां यज्ञोपवित ब्याह सब काशीमें कियो. सो यह चरित्र आप काशीमें शेठ पुरुषोत्तमदासके घर बेठकमें प्रगट कीये हें. इति श्रीकाशीमें शेठ पुरुषोत्तमदासके घरकी बेठकको चरित्र समाप्त. 27.

बेठक 28 मी

(अथ श्रीकाशीकी दूसरी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी दूसरी बेठक काशीमें हनुमानघाटके उपर हे. तहां आपनें संन्यास ग्रहण कीयो हे. तब एकमास तांई श्रीआचार्यजी आप एक शिला उपर बिराजे. अन्न, जल सब त्याग कीयो. ता समय बहिर्मुख ब्राह्मणननें पूछी. जो तुम संन्यास ग्रहण उपदेश कोंनसो लियो. तब आप संन्यास निर्णय ग्रन्थ लिखिकें दीए. सो वाकों बांचिकें वे निरुत्तर होय गए. ता पाछें फेरि बहुत पण्डित भेले होयकें आए. तब आप भयमर झलझलायमांन अग्निको दर्शन दीए. तब सब भय पायकें पाछे फिरि गए. (रोषदृक् पातसम्प्लुष्टभक्तद्विड् भक्तसेवितः) सो यह नांम श्रीसर्वोत्तमजीमें निरूपण कीयो हे. ता पाछें पुष्यनक्षत्रकी व्याप्ति होयके अभिजित कालमें असाढ सुदी 2 उ. 3 के दिन श्रीगङ्गाजीके जलमें कटि तांई बिराजे. तब चालिस हाथमें तेजके पुञ्जको भंवरा भयो सो आकाश तांई छाय रह्यो. सो दोय मुहूर्तलों काशीके वाशीननं सबनें देख्यो. तब वे कहें जो हमनें अबलों श्रीआचार्यजीको स्वरूप जांन्यो नांही हो. जो ये तो ईश्वर हें. ता पाछें श्रीआचार्यजी सबनके देखत स्वधांम पधारे. सो यह चरित्र काशीमें हनुमानघाटकी बेठकमें दिखाए. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी श्रीकाशीकी दुसरी बेठकको चरित्र समाप्त. 28.

बेठक 29 मी

(अथ श्रीहरिहरक्षेत्रकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब हरिहरक्षेत्रमें श्रीगङ्गाजी ओर गल्लकी नदीको समागम भयो हे. तहां भगवानदासके घरमें आप श्रीआचार्यजी महाप्रभु अखण्ड बिराजमान् हें. काशीमें जो आपनें आसुर व्यामोहलीला दिखाई. तब वैष्णवनकुं बहुत खेद भयो. सो सब मिलिके भगवानदासके घर आए. ओर सब वृत्तान्त कह्यो. तब भगवानदासनें बेठकको टेरा खोल्यो. तब सबनको साक्षात् श्रीआचार्यजीको दर्शन भयो. सो भगवानदासकी वार्तामें लिखे हें. ओर जब भगवानदासके घरतें श्रीआचार्यजी चलिवेको नांम लेते. तबही वा भगवानदासको मुर्छा आई जाती. सो वो जगन्नाथजी तांई आपके सङ्ग रह्यो. तब आप कहे. जो तूंम घरकुं जाओ. यातें मेरी लौकिकमें निन्दा होयगी. तातें मेरी पादुकाजी ले जाओ. सो जा चोतरापें तुंम जप करत हो. तहां तूंमको दर्शन होयगो. तब भगवानदास घर आए. सो वीनको वा चोतरा उपर श्रीआचार्यजीको नित्य दर्शन होतो. सो या चरित्रको आप हरिहरक्षेत्रकी बेठकमें प्रगट कीए. इति श्रीहरिहरक्षेत्रकी बेठकको चरित्र समाप्त. 29.

बेठक 30 मी

(अथ श्रीजनकपुरकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजीकी बेठक जनकपुरमें मानिकतलावके उपर भगवानदासके बागमें हे. तहां श्रीरामचन्द्रजी श्रीसीताजी गठ जोरे स्नान कीए हे. ओर श्रीरामचन्द्रजीकी बरात ऊहां उतरी हती. सो भगवानदासके बागकी बेठकमें आप सप्ताह कीए. ता पाछें केवलरामनागा विष्णुस्वामिकी सम्प्रदायको हतो. ताके सङ्ग पांचसें नागा जनकपुरकी यात्राकों आए हते. सो ऊननें आयकें श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करी. ओर कही. जो महाराज मोको सेवक करो. तब आप नांम सुनाए ओर कहें. जो तेरे वैष्णवनकों यही नांम सुनाय दे. ता पाछें केवलरामनागाने बिनती करी. जो महाराज मोकों आप अपनो प्रसाद देऊ. सो वादिन रामनोमीको दूसरो दिन हतो. सो बासोंधीको डबरा बच्यो हतो. सो वाही बासोंधीमेंतें पांचसें हू नागा जींमाय दीए. ता पाछें ओर हू बासोंधी बची. सो यह माहात्म्य देखिकें केवलरामनागा बहुत प्रसन्न भयो. पाछें दण्डवत् करिकें चल्यो गयो. तब आप कहें. जो यह बेरागीनकी ऊच्छिष्ट हे. सो वैष्णवन न लेंयगे. सो मालीनकों पिवाय देई. ता पाछें बची सो गामके लोगनकों प्याव दई. सो यह चरित्र मालीने देखिकें जायकें भगवानदासतें कही. तब भगवानदासनें आईकें श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करी. पाछें भगवानदास श्रीआचार्यजीके सेवक भए. ता पाछें श्रीआचार्यजीको विननें अपनें घर पधराए. सो वर्षभर बिराजे. सो यह चरित्र जनकपुरकी बेठकमें दिखाए. इति श्रीजनकपुरकी बेठकको चरित्र समाप्त. 30.

बेठक 31 मी

(अथ श्रीगङ्गासागरकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब गङ्गासागरपें कपिलाश्रम कपिलावनमें कपिलकुण्डके उपर एक छोंकरकें नीचें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक है. वाके आसपास महा गेहेरो वन हे. तहां सिंह, गेंडा, गजराज, सरस, हरनी, भेंसा, आदि एसे तामसीजीव बहुत हे. सो तहां मनुष्यकी तो गम्य नाहीं. तहां षट्मास श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप बिराजे. तहांतें तृतीयस्कन्धकी श्रीसुबोधिनीजी सम्पूर्ण करिकें आप पधारे. सो वहां धानके मुरमुरा कृष्णदासमेघन अलौकिक रीतिसों लाये हे. सो आप अङ्गीकार करि कृष्णदासकों वरदान दीए हे. ओर एक समय श्रीआचार्यजी सूर्योदयके समय गङ्गासागरमें स्नान करिकें अपनी बेठकमें बिराजे हते. तब आप बिचारें. जो दैवीजीवनको उद्धार भगवद आज्ञातें करनो हे. सो जीवतो तामसी योनिमें पडे हें. तिनकों उत्तम योनि दीजे. सो प्राप्त होई. तब भगवदभजनको अधिकार होय. ओर भक्तिके सम्बन्ध बिना तो तामसी योनि निवर्त न होय. तातें ईनकों भक्तिकों सम्बन्ध करावनों. सो इनकी प्रमेयबल करिकें तामसी योनिकी निवर्तता होय. तब उत्तम योनि पाय ईनको उद्धार होयगो. जेसें गन्ध करिकें चार्यो पर्व विद्यमांन हें. श्लोकः. (अविद्या पूतनान्नष्टा गन्धमात्रावशेषिता) सम्पूर्ण अविद्या पूतनाके वधसों. रासी गन्ध ताके सम्बन्धसों निवर्त भई. मूल अविद्या हे. स्वरूपज्ञान विस्मृत करायवे वारी हे. जो पूतनांके शरीरमें चन्दनकीसी

सुगन्ध ऊठी. ताकों सब व्रजवासी लिए. सो नासिकाद्वारा अविद्याको प्रवेश भयो. चार्यो पर्व विद्यामान रहे. सो प्रकार प्रमेयबलतें निवर्त किए. जो देहाध्यास धेनुकको वध करिकें. इन्द्रियाध्यास कालीको दमन करिकें. अन्तःकरणाध्यास केसी प्रलम्बको वध करिकें. प्राणाध्यास दावानलको पांन करिकें. प्राणाध्यास द्विधा प्रकार करे हें. सो तातें दावानलको दोयबेर पांन किये हें. सो एसो प्रमेय सम्पूर्ण अविद्या पर्वन सहित निवर्त करि साधन प्रकरणमें अविद्याकों दांन दीए. पर्वन सहित सम्पूर्ण भक्ति देवेको सम्बन्ध कराए. श्लोक.

वैराग्यं सांख्ययोगं च तपो भक्तिश्च केशवे॥
पंचपर्वति विज्ञेयं यथा विद्या हरिविषेत्॥1॥

सो तातें चरणारविन्द हें सो तो भक्तिरूप हें. तातें इनकों भक्तिके गन्धको सम्बन्ध कराएतें ईनकी तामसी योनि निवर्त होय जायगी. सो तातें इनकी मनुष्ययोनि सिद्धि होयगी. एसो बिचारिकें तहां तें ऊठिकें आप गहनवन हतो तहां आप श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे तब पांच वैष्णवन अन्तरङ्ग आपके सङ्ग हते. तब एक छोटोसो पर्वत ताकी एक टेकरी हती. ताके नीचें आपकें चरणारविन्दकों खोज ऊपडी आयो. तब तो आप सब वैष्णवन सहित वा पर्वतकी टेकरी उपर जाय बिराजे. सो तहां आपके चरणारविन्दमेंतें अलौकिक भांति भांतिको सुगन्ध निकस्यो. सो तब ता गन्धको ग्रहण तामसी जीवननें कीयो. सो तातें सर्प (तुरत) शरीर (तामसी देह) छोडत जांय. ता पाछें कस्तूरीको सुगन्ध निकस्यो. सो ताकों अनेक मृग ग्रहण करिकें शरीर छोडत भए. सो एसो जो जाकों सुगन्ध प्रिय हो. सो ताको ग्रहण करिकें तामसीयोनि निवर्त भई. सो तब वे मनुष्य योनिकों प्राप्त भए. तब भगवदभजनके अधिकारी भए. सो यह अलौकिक चरित्र देखिकें गङ्गासागरपें वैष्णवनकों बडो आश्चर्य भयो. तब ता समय एसी आज्ञा आप करत भए. सो गोपालदासजी गाए हे सो (ए तामसनां अघ हर्यां परताप पदरज गन्ध) सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप गङ्गासागरकी बेठकमें प्रगट कीए. ओर हू अनेक कीए तामें मुख्य हे सोई लिखे हें. इति श्रीगङ्गासागरकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 31.

बेठक 32 मी

(अथ श्रीचम्पारण्यकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अबिनतीाचार्यजीमहाप्रभु आप निजधाममें अखण्ड बिराजमांन हें. ओर आपकी लीला नित्य हे. सो भक्तन सहित सदैव रमण करत हें. जो दैवीसृष्टि बोहोत कालसों बिछुरि ही सो गोपालदासजी सप्तम वल्लभाख्यानमें गाए हें. जो (पर पोतानी व्यक्ति करेवा सृष्टि ते द्विधा प्रकार. दैवी आसुरी बे ऊपजावी प्रभु मन करी विचार) सो कृपाकटाक्षतें तो दैवी सृष्टि भई. ओर मायाकटाक्षतें आसुरी भई. सो अब दैविको उद्धार करनों. तातें लीलासृष्टि सहित भूतलपें आपको प्रादूर्भाव होयगो. तब सेवारूप होंयगे. सो भगवत्सेवा उपयोग होंयगे. ओर भगवत्सेवा करिकें भगवानकी लीलामें प्राप्ति होंयगे. सो श्रीगुसांईजी आप

श्रीवल्लभाष्टकमें निरूपण कीए हें. सो वाक्य (सृष्टिर्व्यर्था च भूयान्निजफलरहिता देव वैश्वानरैषा) ओर श्रीसर्वोत्तमजीमें हू आपको नांम हे. जो (दैवोद्धारप्रयत्नात्मा) श्रीगोवर्धननाथजीनें आपकों आज्ञा कीये. जो तुम व्रजभक्त गोपग्वाल सहित चोराशी ओर द्वेसेबावन, ओर अन्तरङ्ग आपके कृपापात्रसेवक, सब भूतलपें प्रादुर्भाव भए. तब आपनें इच्छा करी जो दैवीसृष्टि तो भूतलपें चार्योवरणनमें हे. सो ताकों शरणउपदेश दे पंचमोवरण प्रगट करि भक्तिमार्गप्रवर्त करनों. तातें कृष्णदासजी गाए हें (अभय दीनों लेख हरिदासवर्य भेख कृष्णदास पंचवरण छाप छापी) तब आपनें बिचारि जो उत्तम कुलमें प्रादुर्भाव होयकें सम्प्रदाय प्रगट करनी. सो दक्षणमें कामरवाडगांममें रामानुजाचार्य नारायणभट्ट साक्षात् वेदको अवतार भये. सो चार्यो वेद षट्शास्त्र जिनके मुखाग्र हते. सो बडे-बडे राजा साहुकार उनके शिष्य हते. सो बडे धनाढ्य हते विन नारायणभट्टजीनें सोमयागको मुहूर्त देखि आरम्भ कीए. सो वे आछे विद्वानकों भोजन करवावते. सो विन नारायणभट्टजीनें बत्तीस सोमयज्ञ कीए. तब कुण्डमेंतें वाणी भई जो नारायणभट्ट तुमकों धन्य हे. जो तुह्मारे यज्ञ साक्षात् श्रीपूर्णपुरुषोत्तम भोग कीए हें. सो तिहारे कुलमें साक्षात् पुरुषोत्तमको प्रादुर्भाव होयगो. ओर कुण्डमेंतें श्रीमदनमोहनजीको स्वरूप हू प्राप्ति भयो. सो अब सातस्वरूपनमें श्रीगोपाललालजीमहाराजके मांथें कामवनमें बिराजत हें. सो भगवदी गाये हें (कुण्डतें हरि कही बांनी जन्म कुल तिहारे अबें. चक्रत ततछिन भए सब जन एसी अबलों भई कबें. सुनतही मन हर्ष कीनों. धन्य-धन्य कह्यो सबे) सो तब नारायणभट्टकी बोहोत प्रशंसा होन लागी. ओर सब कहें जो यह साक्षात् वेदको स्वरूप हें. सो तब वे हजारन पण्डितनकों वेद पढाए. तब काहू एक पण्डितनें कही. जो मनुष्यकों सब कोई पढावत हें. सो यामें कहा बडी बात हे. तब नारायणभट्टनें भेंसाकों छडी लगाई. तब वह भेंसा वेद पढिवे लग्यो. तब सगरि सभा चक्रत होय रही. पाछें नारायणभट्टके पुत्र गङ्गाधरभट्ट भए. सो वे बडे सामर्थ्यवान भए. सो नित्य ब्राह्मणनकों भोजन करवावते. ओर दांन दक्षणा बोहोत देते. सो गङ्गाधरभट्टजीनें अठ्ठाइस सोमयाग कीए. तब बहुत यश भयो. तब सब कोऊ कहिवे लगे. जो यह तो श्रीशिवजीको अवतार हें. तब एक पण्डितनें कही. जो शिवजीनें तो जटामें गङ्गाजी धारण कीए हें. तब गङ्गाधरभट्टनें जटाको जूडा झटक्यो. तब वामेंतें गङ्गांजीकी धारा बहिचली. ता पाछें तिनके पुत्र गणपतिभट्ट भए सो बडे उदार भए. सो विन गणपतिभट्टनें तीस सोमयज्ञ कीए. ओर हजारन विद्यार्थी पढाए. तब विनकी बहुत बडाई भई. सो तब काहूनें कही. जो यह तो गणपतिजीको अवतार हें. तब एक पण्डित बोल्यो जो गणपतिजीको कहा कांम हे. जो वे हुण्डनकी बरखा करे तब हम जांनें. सो तब गणपतिभट्टनें एक जोजनके बीच सवापेहेरतांइ हुण्ड बरसाए. सो वे एसे सामर्थ्यवान भए. तिनके सुत वल्लभभट्ट भए. सो बडे तेजस्वी भए. सो तिननें पांच सोमयज्ञ कीए. तब तिनसों सब केहेन लगे. जो यहतो सूर्यनारायणको अवतार हे. सो तब काहूनें कह्यो जो रात्रमें दुपेहेर करें तब हम सूर्यनारायणको अवतार जांनें. तब विननें बारह कोसके बीचमें अर्धरात्रके समय दुपेहेर करि

दीए. तिनके पुत्र शुद्धसत्व श्रीवसुदेवजीको अवतार श्रीलक्ष्मणभट्ट परम उदय भए. सो विन श्रीलक्ष्मणभट्टजीनें पांच सोमयज्ञ कीए. तब आकाशवाणी भई. सो वानें कही. जो लक्ष्मणभट्टजी तुमको धन्य हे. जो तिहारे यज्ञ हे सो श्रीपुरुषोत्तमनें भोग कीये हें. जो अब तुम तांई 100 सोमयज्ञ भए. सो अब आछो मुहूर्त देखिकें अग्निकी पूर्णाहुती करो. जाके कुलमें सो सोमयज्ञ होई. तब ताके कुलमें साक्षात् श्रीपूर्णपुरुषोत्तमको अवतार होय. सो अब तुमारे तीन पुत्र होंयगे. सो तिनमें श्रीपूर्णपुरुषोत्तम प्रगट होंयगे. तिनको तुम आछी भांतिसो जतन करियो. सो तब एसी आज्ञा सुनिकें लक्ष्मणभट्टजीकों परम आनन्द भयो. तब आछो मुहूर्त देखि पुण्याहवाचन कीए. ओर दसहजार ब्राह्मणनकों भोजन करवाए. तब यज्ञकी पूर्णाहुती कीए. ता पाछें कितनेक दिनमें प्रथम पुत्र भयो. तब तिनको केशवपुरी नांम धर्यो. ता पाछें एक दिन लक्ष्मणभट्टजीको स्वप्नमें युगलस्वरूपको दर्शन भयो. ओर आज्ञा भइ. जो अब थोडेसे दिनमे स्वामिनी इहां श्रीपूर्णपुरुषोत्तमको प्रागट्य होयगो. सो तुम यह कामरवाडमें मति रहो. कारण जो आपकी निकुञ्ज सामग्री ओर लीलासृष्टि वा चम्पारण्यमें प्रगट भइ हे. सो तातें आपको प्रादुर्भाव चम्पारण्यमें होयगो. एसें कहिकें श्रीठाकुरजीनें एक उपरणामें उगार बांधि दियो ओर दोय माला दिये. तामें एक छोटे मणिकानकी ओर एक बडे मणिकानकी. ओर आज्ञा दिए जो यह छोटे मणिकानकी माला तो जब बालक प्रगट होई तब पेहेराइयो. ओर बडे मणिकानकी माला जप करिवेकों राखियो. ओर यह उपरणां उढाय यह ऊगार मुखमें दीजो. ओर तुम कामरवाडतें बेगि चलियो. सो एसी आज्ञा करिकें युगलस्वरूप तो पधारे. तब लक्ष्मणभट्टजी जागि परे. सो देखें तो स्वप्नमें जो वस्तु मिली हती. सो सब ज्योंकीत्यों धरी हे. तब लक्ष्मणभट्टजीनें कह्यो. जो ओरको स्वप्न तो मिथ्या होत हे. ओर मेरो स्वप्न तो सत्य भयो. सो तब स्वप्नके सब समाचार लक्ष्मणभट्टजीनें अपनी स्त्री इल्लमागारुजीके आगे कहे. सो सुनिकें इल्लमागारुजी प्रसन्न होयके कह्यो. जो अब यहांतें बेगी चलों. तब लक्ष्मणभट्टजी सब कुटुम्बकूं सङ्ग लेकें यात्राको मिस करिकें चले. सो कछुक दिनमें प्रयागराज आए. तब तहां तीर्थस्नान कीए. ओर ब्राह्मणभोजन करायकें दक्षणा देकें आगें काशीको चले. सो कछुक दिनमें काशीमें जाय पहुंचे. सो तहां कछुक दिन रहे. ता पाछें म्लेच्छको उपद्रव उठयो. तब फेरि तहांते चले सो भगवद इच्छातें चम्पारण्यमें आये. ता चम्पारण्यमें चम्पकके वृक्षको बडो भारी वन हे. सो महा अरण्य एक योजनके प्रमाणमें हे. तातें वाको नांम चम्पारण्य भयो हे. सो तहां सिंह, गेंडा, मृग आदि अनेक तामसी जीव रेहेत हे. तहां भीमरथी नदी हे. सो तहां लक्ष्मणभट्टजी आप जाय निकसे. सो तामसी जीवनके डरतें वे बहुत डरपे. ओर घबराए. सो तहांते कोस छे नगरचोडा गांम हे. तामें रात्रकुं जायके बसे. तब इल्लमागारुजीकों जांनिपरी जो गर्भ श्रवित भयो. तब लक्ष्मणभट्टजीको इल्लमागारुजीनें सर्व समाचार कहे. जो आपकुं श्रीठाकुरजीकी आज्ञा भई हती. जो श्रीपूर्णपुरुषोत्तम तुह्मारे घर प्रगटेंगे. सो गर्भतो श्रवित भयो. सो सुनिके श्रीलक्ष्मणभट्टजी विचारे. जो श्रीपूर्णपुरुषोत्तम हे सो तो काहूके गर्भमें आवत नांही. जो आपकी आज्ञा भई हे

तो आप स्वइच्छातें प्राप्त होंयगे. आप लक्ष्मणभट्टजी तो ज्योतीषविद्यामें निपुण हते. तातें समय देखिकें बोले. जो अब या समय पुरुषोत्तमके प्रादुर्भावके सब चिह्न दीसत हे. दिशा सब प्रफुल्लित होय रही हें. बन सब हर्यो दीसत हे. ओर सब प्राणी कल्लोल करत हें. तामें यहांको राजा महादुष्ट हतो. सो हू अपनी सरबराई करत हे. ओर आपनको हर्ष ह्वै रह्यो हे. सो तातें पुरुषोत्तम निश्चय प्राप्ति होंयगे. एसे कहिकें पाछें सोये. तब फेरि स्वप्नमें भट्टजीको आज्ञा भई. जो मेरो प्रागट्य तो मेरी स्वइच्छातें होयगो. सो तुम ओर इल्लमागारुजी फेरि चम्पारण्यमें आइयो. सो तब अग्निकुण्डमेंतें प्राप्त होऊंगो. सो सुनिकें लक्ष्मणभट्टजी जागि परे. तब इल्लमागारुजीको जगायकें सर्व समाचार कहे. ओर कहें जो अब सुनें हें जो काशीमें यवनके उपद्रवको समाधांन भयो हे. सो सबरे परिवारसों कही जो तुम अब सब काशी जाऊ. ओर हम हूं कछुक दिनमें आवेंगे. एसें कहिकें सबकों बिदा कीए. ता पाछें आप काशी जाय वहां ब्राह्मणभोजन करवाय फेरि पाछे चम्पारण्य आए. तहां देखे तो भीमरथीके तीर एक योजनके बीचमें 40 हाथको एक अग्निकुण्ड आपकी इच्छातें भयो हे. ताके मध्यमें चारहाथको गोल चोतरा भीमरथीकी वालुकाको भयो हे. ताके मध्य कोटिकन्दर्पलावण्य सुन्दर एक बालक खेलत हे. सो संवत् 1535 माधोमास कृष्णएकादशी मध्याह्नकालसमें ज्येष्टानक्षत्र वृषभलग्न रविवारके दिन आपको प्रादुर्भाव भयो. ता समय शेषजी सहस्रफनसों छत्रकीसीनांई छाया करत हें. मंद-मंद फुहीं बरसत हें. सिंह गर्जना कर रहे हें. सो ताही दिन ताहीलग्न श्रीगोवर्धननाथजीको प्रागट्य हू श्रीगिरिराजमेंतें भयो हे. तातें तो भूमण्डलमें बडो जेजेकार भयो. सो ता समय चम्पारण्यमें लक्ष्मणभट्टजी ओर इल्लमागारुजी पधारे. सो विनकों वा चोतरापें कोटिकन्दर्पलावण्यको दर्शन भयो. तब इल्लमागारुजीकों अत्यन्त आतुरता भई. जो अब मेरो पुत्र मोकों प्राप्त होयगो. परि आसपास अग्नि घेरिरही हे. ओर मध्यमें चोतरापें सुन्दरबालक खेलत हे. सो तब आकाशवांणी भई. जो तुमकों अग्नि बाधा न करेगी ओर मार्ग देयगी. सो सुनिकें इल्लमागारुजी अग्निकुण्डके भीतर जायकें अत्यन्त प्रीतिसों बालककों ऊछङ्गमें लिए. तब लक्ष्मणभट्टजी दोरिकें अपने कण्ठसों लगाए. ता समय देवताननें दुंदुभी बाजे बजाए. ओर पुष्पनकी वृष्टी कीए. तब ता समय श्रीकृष्ण जन्मउत्सव जेसो महामहोत्सव भयो. सो सब भगवदइच्छातें देवताननें कियो. सो अतिशयोक्ति जानवेमें आवे तातें यहां नहीं कहें. बंदीजन, मागध, भाट, चारण, सबकोउ उच्चार करत हें. अब भीमरथीको प्रकार कहेत हें.
जो रत्नजडित पलनांमें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकों पोढाए. सो रत्नजडित मोतीनके सोनें रूपे आदि भांतिभांतिके खिलोंना आगें धरि श्रीलक्ष्मणभट्टजी खिलावत हें. ओर स्वप्नमें जो उपरणा श्रीठाकुरजीनें दियो हतो सो श्रीअङ्गपें उडायो. ओर वोइ ओगार श्रीमुखमें दीयो हे. श्रीकण्ठमें माला पहराई हे. सो ता समय श्रीमहाप्रभुजीको कोटिकन्दर्पलावण्य मुखारविन्द निरखत सब तन मन धन वारत हें. ओर सबजन दूध दधिके गगरा लेले झांझ मृदङ्ग बजावत नांचत कूदत आए. तब तहां एक कूपहे तामेंतें श्रीनन्दरायजी श्रीवृखभानजी प्रगट होय सब

मिलिकें श्रीलक्ष्मणभट्टजीकों वा चम्पारण्यमें मङ्गल स्नान करवाए. ओर वेदविधीसों जातिकर्म करवाए. तब श्रीलक्ष्मणभट्टजी परम उदारतासों दांन देवेकों बिराजे. तहां आसपास हजारन गायनके तथा भेंसनके झुण्ड जुरि रहे हें. जो जानें जाच्यो सो ताकों लक्ष्मणभट्टजीनें दीनों. तब तहां नन्दमहोत्सव अलौकिक रीतिसों भयो. दही दूधकी कीच मची. सो मानों सरिता वही जात हे. ता समय काहूकों देहानुसन्धान न रह्यो. सब कोउ प्रेमविवस भये. सो भगवदीय गाए हें (नांचत गावत प्रेमविवस व्हे छांडि लोक कुललाज. भूतल महामहोत्सव आज. श्रीलक्ष्मणग्रह प्रगट भए हें श्रीवल्लभमहाराज. भयो जगतीपर जेजेकार) सो या प्रकारसों अनेक पद भगवदिय गाए हें. सो ता समयको सुख देखेंई बने. जो अनिर्वचनीय सुख भयो. ओर आचार्यने यथाशास्त्र नांमकरण करवायो और श्रीलक्ष्मणभट्टजीसों कहें. जो आपके पुत्रके अपार गुण हें. सो में कहां तांई कहूं. ओर श्रीमहाप्रभुजीकी जन्मपत्रिका लिखिकें कही. जो तिहारे पुत्रको अपार यश होयगो. ओर ए मायामतकों खण्डन करि भक्तिमार्गको स्थापन करेंगें. ओर दैवीजीवनको उद्धार करि सकल तीर्थनकों सनाथ करेंगें. ओर श्रीविष्णुस्वामीमार्गके आचार्य होइगें. ओर सबनकों प्रिय होंयगे तातें इनको जगतप्रसिद्ध नांम तो श्रीवल्लभाचार्यजी होईगो. ए सारस्वतकल्पकी नित्यलीला प्रगट करिकें सेवामार्ग प्रगट करेंगे. जो ईनके वंशमें प्रगटेंगे. सो बहुत दिन भूतलपें आचार्यपदवीसों क्रीडा करेंगे. या जगतमें तीन कुल भए हें. सो रधुकुलमें तो श्रीरामचन्द्रजी प्रगटे. ओर यदुकुलमें श्रीकृष्णचन्द्र प्रगटे. ओर तैलङ्गकुलमें आप श्रीआचार्यजी प्रगट भए. तातें इनको श्रीवल्लभकुल बाजेगो. ए तीन्यो कुल शुद्ध कुल भए हे. सो जो कोई ईनको स्मरण भजन करेगो तिनकों साक्षात् श्रीपुरुषोत्तमकी लीलाकी प्राप्ति होयगी. आपको अरण्य (बन)में प्रादुर्भाव हे. ताको हेतु यह हे. जो देवता दिनको आवनो शेहेरमें न होय. यासों आपको पादुर्भाव जङ्गलमें भयो. ओर चम्पारण्यमें जो अनेक लक्षावधी दैवीजीव हे. तिनकों आप प्रगटे ता समें कटाक्षद्वारा लीलामें प्राप्त कीए. ओर श्रीगुसांईजीको हू प्रादुर्भाव चरणाटमें श्रीगङ्गाजीके तटपें होयगो. सो तहां हू एसोई सुख होयगो. सो यह जन्मपत्रिका श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी विधिपूर्वक लक्ष्मणभट्टजीकों सुनाई. ता पाछें सब महामहोत्सवके दर्शन करिकें अपने-अपने स्थलकों गए. ता पाछें लक्ष्मणभट्टजी सब ब्राह्मणनकों बुलायकें सबनको सन्मान करि बिदा किये. तब श्रीनन्दरायजी ओर श्रीवृषभानजीनें श्रीलक्ष्मणभट्टजीसों कह्यो. जो ये पूर्णपुरुषोत्तम तुम्हारे घर प्रगटे हें. सो इनको जतन राखियो. यह आज्ञा करि सब गोपन सहित निजधांमकों पधारे. श्रीइल्लमागारुजी बालक गोदमें खिलावत हें ओर श्रीलक्ष्मणभट्टजीसे आगें बेठे हें. ओर आसपास अग्निकुण्ड हे. तब श्रीलक्ष्मणभट्टजी इल्लमागारुजीसें कहें. जो येतो साक्षात् ईश्वर हे. ईनकी अपार लीला हे. एतो अपने उपर अनुग्रह करिवेकों पधारे हे. तातें इनकी सेवा बनेसो करनी. ईनकों पुत्र करिकें मति जांनियो. पाछें कहें जो अब यहांतें छठ्ठीपूजन

करिकें घर चलेंगे. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप चम्पारण्यनिजधामकी बेठकमें कीए हें. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी चम्पारण्यकी बेठकको चरित्र समाप्त. 32.

बेठक 33 मी

(अथ श्रीचम्पारण्यकी दूसरी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब दूसरी बेठक श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी चम्पारण्यमें हे. सो तहां छठ्ठी पूजन भयो हे. सो माधवानन्दकरके ब्रह्मचारी काशीमें गङ्गाजीके तीरपें तपस्या करत हतो. सो अठ्ठाईसवर्ष तांई वानें तपस्या कीनी. तब श्रीगङ्गाजीमें तें वाणी भई. जो तुमकों चहिये सो मांगि लेउ. तब माधवानन्दब्रह्मचारीनें कह्यो. जो मोकों तो व्रजलीलाको दर्शन करवावो. तब विनकों आज्ञा भई. जो अब तुम चम्पारण्यकों बेगि जाओ. तहां साक्षात् श्रीपूर्णपुरुषोत्तमको प्रादुर्भाव भयो हे. सो तहां तुमको लीलाके दर्शन होंईगे. ओर मुकुन्ददाससंन्यासी पुष्करजीमें हते. सो वे श्रीभागवतको पाठ नित्य करते. तिनहूंको आज्ञा भई जो तुम वर मांगो. तब वांने कह्यो. जो मोकों व्रजलीलाके दर्शन करवावो. तब आज्ञा भई जो लक्ष्मणभट्टजीके घर श्रीपुरुषोत्तमको प्रादुर्भाव भयो हे. तातें तुम चम्पारण्यकों बेगि जाओ. सो तब वेउ चम्पारण्यमें आए. तब नन्दमहोत्सव तो होय गयो हतो. पाछें माधवानन्दब्रह्मचारीनें लक्ष्मणभट्टजीकों ज्योतिषविद्या पढाई. पाछें माधवाचार्यब्रह्मचारी ओर मुकुन्ददाससंन्यासीनें अपनों सब वृत्तान्त लक्ष्मणभट्टजीके आगें कह्यो. तब लक्ष्मणभट्टजीने कह्यो जो प्रागट्यसमें अनिर्वचनीय आनन्द भयो हतो. अब छठ्ठीपूजन होयगो. सो तब तुम आपतें बिनती करियो जो आपकी इच्छा होयगी तो दर्शन करवावेंगें. तब छठ्ठी पूजनके समय लक्ष्मणभट्टजी चम्पारण्यकुण्डपें एक चंपाके वृक्षके नीचे इल्लमागारुजी सहित पूजन कीए. सो ता समय माधवानन्द ओर मुकुन्ददास दोनों आए. सो विनतें श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् कीए. ता समें श्रीइल्लमागारुजीकी गोदमें कोटीकन्दर्पलावण्य विराजत हे. सो आपनें विन दोनोंनकी इच्छा जानि वा समय ईन दोऊनकों व्रजलीलाके दर्शन करवाए. जो गोपगायनसहित श्रीगिरिराज, श्रीयमुनाजी, श्रीवृन्दावन ओर व्रजलीला स्थलनके उहां छठ्ठीकी बेठकमें दर्शन करवाये. तब माधवानन्द ओर मुकुन्ददास ए दोनों लीलामें प्राप्त भये. ता पाछें लक्ष्मणभट्टजी ओर माता इल्लमागारुजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकों पधरायकें नगरचोडामें पधारे. तब राजानें बहुत सन्मान कियो. ओर बिनती करी. जो चार दिन इहां बिराजिये. तब लक्ष्मणभट्टनें कही. जो मेरे अब काशी जायवेकी ताकीद हे. तातें तुम जापतो करि देऊ तो ठीक हे. तब राजानें म्यांनो ओर असवारी गाडी ओर दोय पहरा सङ्ग करि दीए. ओर विन जापतावारेनसों राजानें कह्यो. जो तुम ईनको ठेठ काशी पहुंचायकें लक्ष्मणभट्टजीतें पत्र

लिखाईके आइयो. तब लक्ष्मणभट्टजी श्रीमहाप्रभुजीको लेकें काशी पधारे. सो केतेक दिनमें काशी जाय पहुंचे. तब परम आनन्द जेजेकार भयो. यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप चम्पारण्यकी दूसरी बेठकमें प्रगट कीए. इति चम्पारण्यकी दूसरी बेठकको चरित्र समाप्त. 33.

बेठक 34 मी

(अथ श्रीजगन्नाथपुरीकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप श्रीजगन्नाथदेवके दर्शन करिवेको पुरुषोत्तमक्षेत्र पधारे. सो तहां पुरुषोत्तमक्षेत्रमें दक्षणदरवाजेके पास आपकी बेठक हे. सो तहां आप एक वर्ष तांई बिराजे. तब तहांके राजा विष्णुदेवके वहां पण्डित बहुत रहते तिनसों वानें प्रश्न कियो. जो सब देवनमें मुख्यदेव कोंन हे. ओर मन्त्रनमें मुख्यमन्त्र कोंनसो हे. ओर शास्त्रनमें मुख्यशास्त्र कोनसो हे. ओर कर्मनमें मुख्यकर्म कोंनसो हे. सो ए चार प्रश्न कीए. तब जो जीव जा देवताको उपासक हतो. वह ताही देवताको मुख्य बतावे. ओर मन्त्र वारो अपनें मन्त्रकों मुख्य बतावे. सो तातें वा राजाको सन्देह न जाय. कोउ पण्डित एक बात निश्चे करिकें न कहें. तब यह विचारिकें राजा अपनें पण्डितनकों लेकें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके दर्शनकों आयो. तब आईकें दण्डवत् करिकें बेठ्यो. ओर बिनती करी. जो महाराज आपतो साक्षात् ईश्वर हो. आपनें मायामत खण्डन कीयो हे. ओर आप दिग्विजय कीए हो. तातें एक मेरो सन्देह हे. ताकों आप कृपा करिकें निवृत्त करो. ए पण्डित तो सब अपनें-अपनें मतके अनुसार केहेत हे. तातें आप निश्चे सिद्धान्त कहो. जो कोंन मुख्य हे. तब वा राजाके वचन सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप अपनें मनमें विचारें. जो यासों शास्त्रसिद्धान्त कहेंगे. सो तो यह मनमें न लावेगो. ओर जानेगो जो यह विष्णुउपासक हे. तातें विष्णुको उत्कर्ष कहेत हें. जेसें ओर पण्डित अपनें मतके अनुसार केहेत हें. तेसें एहु अपनें मतके अनुसार केहेत हे. तातें वेसेतो या राजाको सन्देह निवारण न होयगो. परि याकों श्रीजगन्नाथरायजीको विश्वास हे. तातें यासों श्रीजगन्नाथदेवके मुखसों कहवावनों. तब ए प्रमाण मानेगो. एसो निश्चे करि श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप वा राजाकों आज्ञा कीए. जो श्रीजगन्नाथदेवके आगें एक कोरो कागद ओर लेखन द्वात धरो. सो जो श्रीजगन्नाथरायजी आप लिखि देंय सोई प्रमाण हे. तब यह सुनिकें वह राजा बहुत प्रसन्न भयो. तब वानें श्रीजगन्नाथरायजी के आगें एक कोरो कागद ओर लेखन ओरत द्वात धरिके बिनती करी. जो महाराज कर्म ओर मन्त्र, शास्त्र ओर मुख्य देव होयसो आप कृपा करि लिखि देउ. एसें कहके मन्दिरको तारो मारि बाहिर आय बेठ्यो. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी आज्ञा जांनि श्रीजगन्नाथरायजी आप एक श्लोक लिखि दिए. सो श्लोक.

एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीतं एको देवो देवकीपुत्र एव॥
मन्त्रोऽप्येकंतस्य नामानि यानि कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा॥1॥

सो जब श्रीजगदीश लिखि चूके. तब श्रीआचार्यजी आप जांने. तब आप राजासों कहें. जो अब तुम जायकें वह कागद उठाय लावो. सो तब राजा जायके मन्दिरको तारो किंवाड खोलिकें वा कागदकों उठाय लायो. सो पण्डितनकों बचवायो ओर राजानें आप बांच्यो. तब सबनको सन्देह निवृत्त भयो. तब राजानें कह्यो जो धन्य श्रीवल्लभायार्यजी हें. जो जिनके कहेमें श्रीजगन्नाथरायजी हें. सो जेसें आप कहें. तेसें श्रीजगदीश लिखि दीए. ता पाछें उन ब्राह्मणनमें एक बहिर्मुख हतो. सो वह निराकार मायावादी हतो. वानें अनेक प्रश्न् कीए. ता पाछें वानें कह्यो. जो श्रीजगन्नाथदेवके हाथ नहीं हें. सो विननें पत्र केसें लिख्यो होयगो. तातें हमारे यह लिख्यो प्रमांण नहीं हे. तब यह सुनिकें श्रीआचार्यजी आप कहें. जो यह बडो मूर्ख हे. जो श्रीजगन्नाथदेवके हाथ नहीं हें तो आप आरोगत काहेसों हें. या प्रकार वाकों समुझाए. परन्तु वह तो मांने नाहीं ओर वारंवार पूर्वपक्ष करे. तब वा राजानें श्रीआचार्यजीसों बिनती करिकें कहीं जो महाराज ओर सबनको तो सन्देह निवृत्त भयो हे. परन्तु याको सन्देह निवृत्त नहीं भयो. तब श्रीआचार्यजी आप कहें. जो अब फेरि श्रीजगन्नाथरायजीके आगें द्वात, कलम, कागद धरो. सो आप लिखि देंयगे. तब फेरि कागद, द्वात, लेखन श्रीजगदीशके आगे धरे. ओर किंवाड लगाए. तब फेरि श्रीजगन्नाथरायजीनें पूर्ववत् आधो श्लोक लिखि दीयो. सो श्लोक (यः पुमान् भगवद्द्वेषी तं विद्यादन्यरेतसम्) सो क्षणमात्र पीछें मन्दिर खुलवायकें श्रीआचार्यजी महाप्रभु वह कागद मंगायकें राजाकों बचवायो. तामें यह लिखे. जो पुरुष भगवानको द्वेषी होय. सो वह ओरके वीर्यको जाननों. वह अपनें पितासों उत्पन्न नहीं भयो हे. ता पाछें राजानें वा ब्राह्मणकी माताको बुलवाइ. ताकों एकान्तमें लेजायकें भय दिखाईकें पूछी. जो तू सांच कहि. जो यह तेरो पुत्र कोंनसों उत्पन्न भयो हे. तब वानें डरपिकें सब बात कहि दई. जो यह एक म्लेच्छतें पेदा भयो हे. सो सुनिकें वा राजानें वह ब्राह्मण पुरितें बाहिर कढवाय दीयो. क्यों जो वानें भगवद्आज्ञा न मांनी. तब पुरुषोत्तमपुरीमें जेजेकार भयो. सो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको दिग्विजय विख्यात भयो. सो पुरुषोत्तमक्षेत्रकी बेठकमें श्रीआचार्यजी आप यह चरित्र दिखाए. पाछें तीनबेर श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप श्रीजगन्नाथपुरीमें पधारे. सो तीन्यो बेर आपनें न्यारे-न्यारे चरित्र दिखाए हें. परन्तु मुख्य हे. सोई लिखे हें. इति श्रीआचार्यजीकी श्रीपुरुषोत्तमक्षेत्र श्रीजगन्नाथपुरीको बेठकको चरित्र समाप्त. 34.

बेठक 35 मी

(अथ श्रीपंढरपुरकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब पंढरपुरक्षेत्रमें भीमरथीके तीर श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीकी बेठक हे. सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु पाण्डुरङ्ग श्रीविट्ठलनाथजीके दर्शन करिवेकों पधारे. तब भीमरथीके तीर आप बिराजे ओर सेवकनकों आज्ञा कीए. जो एक नाव भाडे करिकें लावो. सो वा पार दर्शनकों चलेंगे. तब इतनेमें श्रीविट्ठलनाथजी आप पांचवर्षके एक ब्राह्मणके

बालककोस्वरूप धरिकें. पुण्डरीक भक्तकों साथ लेकें भीमरथीके पार आईकें आप श्रीआचार्यजी निकट आय मिले. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु हू ऊठिकें मिले भेटे. फिर एक पट्टा बिछाय दियो. तापें आप श्रीविट्ठलनाथजी बिराजे. तब श्रीआचार्यजी आप कहें. जो आपकों बहुत श्रम भयो हे. मेंतो आपके दर्शनकों आवतही हतो. तब श्रीविट्ठलनाथजी कहें. जो मेंतो मित्रताकों प्रथम प्रगट कियो हूं. जो मित्र आवे ताके सामें जायकें मिलनों. सो सुनिकें आप श्रीआचार्यजी बहुत प्रसन्न भए ओर निकटकी मिश्री भोग धरिकें अबीरसों खिलाए. सो पाण्डुरङ्गमाहात्म्यमें कथा हे. ओर भविष्योत्तर पुराणमेंहुं कहे हें. जो पुण्डरीक नांम करिकें एक ब्राह्मण हतो. सो वह अपनें माता पिताकों बहुत दुःख देतो. तब एक सङ्ग वाके गांमतें श्रीगङ्गाजी नहाइवेकों चल्यो. सो ता सङ्गमें यह पुण्डरीक हू चोरीकी लालचतें चल्यो. सो तीनमजल तांइ तो वो आयो. तब मारगमें सङ्गतें बिछुयों सो भूलिपर्यो. सो जब रात्र परि गई. तब वहांई जङ्गलमेंही सोय रह्यो. सो जब चारघडी रात्र बाकी रही. तब वह जाग्यो. सो एक स्थलपें बेठ्यो हतो. तब वानें दोय स्त्री नखतें शिखपर्यन्त भूषण सोनेंके कलश भरिकें वाके आगें होयकें निकसी. तब वानें विनसों पूछी. जो तुम कोन हो. ओर कहां जात हो. तब उनमेंतें एक बोली. जो हम श्रीगङ्गाजी हें. ओर यह श्रीयमुनाजी हें. सो एक ब्राह्मण अपनें माता पिताकी सेवा करत हे. वाकों सेवामेंतें गङ्गाजी स्नानको अवकाश नहीं होत हे. तातें हम वाकों उहांई वाके घर स्नान करायवें जात हें. जो माता पिताकी सेवा करत हे ताकों घरहीमें गङ्गाजी स्नानको फल मिलत हे. ताको प्रमाण कहे हें. श्लोक

माता गङ्गा समं तीर्थं पिता पुष्करमेव च॥
गुरुः केदारतीर्थं च माता तीर्थं पुनः पुनः॥1॥

सो ईतनों कहिकें श्रीगङ्गायमुनाजी तो अन्तर्धान भई. तब वा पुण्डरीककों ज्ञान उत्पन्न भयो. तब वानें विचार्यो. जो माता पिताकी सेवाको एसो प्रताप हे. तो अब तो मेंहूं माता पिताकी सेवाही करुंगो. एसें विचारिकें वो पाछो अपनें घर आयो. तब वाके माता पिता वाकों देखिकें बहुत खेद युक्त भए. जो दुष्ट दुःख देवेको फेरि आय गयो. ए दुष्ट दोय दिनतें कहूं गयो हतो सो सुखी हते. ता समें घरमें आवतेंही वा पुण्डरीकनें अपनें माता पिताकों दण्डवत् करी पांऊं छीए. पाछें परिक्रमा करिकें माता पितासों कही. जो आजतांइके मरे सर्व अपराध क्षमा करो. अब में आपकी सेवा करुंगो. ता पाछें वानें बहुतवर्ष तांई अपनें माता पिताकी अनन्यभावसों सेवा करी. सो एसी दीनतासों सेवा करत-करत बारह वर्ष होय गए. तब एक दिन श्रीभगवान् आप व्यापिवैकुण्ठमें श्रीलक्ष्मीजीसों कहें. जो मेरो एक भक्त भूमि उपर भयो हे. सो ताकों दर्शन देवेकों में वहां जात हूं. वह माता पिताकी सेवा बहुत दिननसों करत हे. तातें वाकों आयवेको अवकाश नहीं हे. तब श्रीलक्ष्मीजीनें कह्यो. जो वा भक्तके दर्शन मेंहूं करुंगी. तब श्रीलक्ष्मीजी ओर श्रीठाकुरजी युगलस्वरूपतें आप भूलोकमें पंढरपुर पधारे. तब तहां वह पुण्डरीक माता पिताकी सेवा करत हतो. वाके घर पधारिकें द्वारपें ठाडे रहे. ओर वाको नांम लेकें आप कहें. जो तेंनें अपनें माता पिताकी सेवा बहुत करी हे. तातें तोकों

दर्शन देवेकों हम वैकुण्ठतें यहां आए हें. सो तातें अब तुं हमारो दर्शन कर. तब वानें भीतरतेंही जुवाब दियो. जो महाराज एक चरण तो पिताको दाबिचुक्यो हूं. दूसरो चरण दाबिकें आपके दर्शन करुंगो. एसें कहिकें वानें दूसरे हाथसों एक ईंट फेंकी दई ओर कही, जो महाराज आप यापें बिराजो. ता पाछें माता पिताकी सब सेवा करि आज्ञा लेकें वा पुण्डरीकनें आयकें श्रीठाकुरजीकों दण्डवत् करी. तब श्रीठाकुरजी आप कहें. जो में तेरी भक्ति देखिकें बहुत प्रसन्न भयो हूं. तातें तूं कछू वरदांन मांगि. तब यानें कह्यो. जो महाराज मोपें कृपा करी हे तो मोकों तीन वरदांन देउ. तामेको 1.तो आप मेरे घर सदां बिराजो. 2.महाराज पेहेलें मेरो नांम होय ता पाछें आपको नांम होय. 3.श्रीगिरिराज तथा श्रीगोकुल चोरासीकोस व्रजमण्डलमें आप क्रीडा करो हो सो वा बाललीलाके दर्शन मोकों होय. सो एसी तीनबात वानें मांगी. तब श्रीविट्ठलनाथजी आप आज्ञा किये जो तथास्तु. एकमन्वंतर तांई में तेरे घरमें बिराजूंगो. ओर पेहेलें तेरो नांम होयगो. ओर पीछें मेरो नांम होयगो. सो पाण्डुरङ्ग श्रीविट्ठलनाथजी यह नांम जगतमें प्रसिद्ध होयगो. जो कोई या तेरी पुरीमें आवेगो ओर मोसों मिलेगो. सो केसोउ पापी होयगो परन्तु फेरि यमकी पुरी न जायगो. ओर गोप मण्डलीमें स्थापन होयगो. ओर जो व्रज लीलाको दर्शन तेनें मांग्यो. सो अठ्ठाईसचोकडी पाछें श्रीवल्लभाचार्यजी यहां पधारेंगे. तब उनसों में कहूंगो. सो तब तोकों वे व्रजलीलाके दर्शन करावेंगे. एसो आपनें पुण्डरीककों वरदांन दियो. तातें वहां अबतांइ लोग गांन करत हें. जो (पुण्डरीक बरदा हरिविट्ठल) ता पाछें वा पुण्डरीक भक्त के माता पितानकों सदेह वैकुण्ठकों श्रीविट्ठलनाथजीनें पठाय दीए. ओर आप श्रीलक्ष्मीजी सहित वाके घर पधारे सो वाके घरहीमें बिराजे. सो पुण्डरीक ब्राह्मण सेवा करत हो. सो अब अठ्ठाईस चोकडी पाछें श्रीआचार्यजी आप पधारे. तब श्रीविट्ठलनाथजीनें कह्यो. जो यह मेरो भक्त पुण्डरीक हे. याकों व्रजकी लीलाके दर्शन करिवेकी अभिलाषा हे. सो याकों मेनें प्रथमही वर दियो हे. जो तोकों श्रीवल्लभाचार्यजी द्वारा व्रजलीलाके दर्शन करावेंगे. सो तातें अब आप याकों व्रज लीलाके दर्शन करवावो. तब श्रीआचार्यजी कहें. जो आपही आकों व्रजलीलाके दर्शन क्यों न कराए. तब श्रीविट्ठलनाथजी कहें. जो यह अधिकार तो आपकों हमनें दियो हे. जो व्रजलीलाके अधिष्ठाता तो आप हो. सो आपकी कृपाविन व्रजलीलाके दर्शन न होय. सो जब आप अनुग्रह करो तबही होय. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप मुसिकायकें कहे जो आपकी आज्ञा हे सोई करेंगे. पाछें श्रीविट्ठलनाथजी आप पुण्डरीक सहित अपनें मन्दिरमें पधारे. तब श्रीआचार्यजी आप श्रीविट्ठलनाथजीके मन्दिरमें पधारिकें सेवा सिंगार करी सात मोहोर जो कृष्णदेवराजाकी भेटमेंतें दैवी द्रव्यकी लीनी हती ताके नूपुर अङ्गीकार करवाए. ता पाछें श्रीआचार्यजी आप पुण्डरीक भक्तकों सङ्ग ले ओर पांच वैष्णव आपके सङ्ग हते तिन सहित आप पुरीके बाहिर एक योजनके बीचमें अरण्यवन हतो. तहां पधारे. सो तहां एक पीपरको वृक्ष हतो. ताके नीचें आप आसन डारिकें बिराजे. तब पुण्डरीकके नेत्रनमें सक्ध्योपासनकें जलके छींटा लगाए. तातें वाके दिव्यनेत्र होइ गए. तब वाकों व्रजलीलाके

दर्शन होन लगे. जो श्रीयमुनाजी, श्रीगिरिराज, श्रीगोकुल, श्रीवृन्दावन, श्रीमथुरामण्डल, व्रजचोरासीकोस, बारह बन ओर बारह उपवन, श्रीनन्दराय, श्रीयशोदाजी, गोपी, ग्वाल, सम्पूर्ण व्रजलीलाके दर्शन भए. सो दोय मुहूर्त तांई वाकों दर्शन करवाए. ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप वाके दिव्यचक्षु हते. सो तिरोधांन कीए. तब वाकों सब लीला अदृश्य भई. तब वानें बिनती करी. जो महाराज मेंतो बडो सुखमें हतो सो वा सुखमेंतें मोकों क्यों काढे. तब श्रीआचार्यजी आज्ञा कीए. जो तोकों श्रीविट्ठलनाथजीकी सेवा करनी हे. तोकों तो केवल दर्शन करायवेकी आज्ञा हती. तातें तोकों दर्शन करवाए. अब आप श्रीविट्ठलनाथजी ईकोत्तर चोकडीलों या क्षेत्रमें बिराजेंगे सो तब तांई तेरो एसोही स्वरूप रहेगो. पाछे तूं विनके सङ्ग वा लीलामें आवेगो. एसें कहिकें आपनें वाकूं श्रीविट्ठलनाथजी के निकट पठायो. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु पुण्डरीक श्रीविट्ठलनाथमें प्रगट कीए हें. ओर तो अनेक कीए परन्तु यामें मुख्य हें सोई लिखे हे. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी पाण्डुरङ्ग श्रीविट्ठलनाथजीकी बेठकको चरित्र समाप्त. 35.

बेठक 36 मी

(अथ श्रीनासिकके तपोवनकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक नासिकके तपोवनमें पंचवटीमें हे सो तहां श्रीआचार्यजी आप दामोदरदासतें आज्ञा कीए हे. जो यहां श्रीरामचन्द्रजीनें तपस्या कीए हे. ओर श्रीसीताजीको हरण इहांईतें भयो हे. तातें यहां हू श्रीभागवतकी सप्ताह करेंगे. या गांममें मायावादी बहुत हें. तातें मायामतको खण्डन करि भक्तिमार्गको स्थापन करेंगे. एसें कहकें आप तहां कछुक दिन बिराजे. तब सब पण्डितननें सुनी. जो यहां तपोवनमें श्रीवल्लभाचार्यजी पधारे हें. विननें दक्षिण तथा काशीमें मायामतको खण्डन करिकें भक्तिमार्गको स्थापन कीयो हे. ओर विष्णुसम्प्रदायको अङ्गीकार कीए हें. ओर सुनत हें जो अग्निकुण्डमेंतें आपको प्रादुर्भाव भयो हे तातें अग्नितें अधिक तेज आपमें हे. सो दर्शनतो करे परि चर्चा केसें होयगी. तब विन पण्डितनमेंतें एक पण्डितनें कही. जो आपुन मेंतें चारि जनें एकमतो करिकें चलोगे. तब मायावाद स्थापन होयगो. ओर भक्तिमार्ग असत्य होयगो. ओर जो कदाचित् मायावादको खण्डन भयो. ओर भक्तिमार्गको स्थापन भयो. क्यों जो वे बडे-बडे देशनमें दिग्विजय करिकें पधारे हे. सो तो साक्षात् ईश्वर विनां यह कार्य न होय. तो ईश्वरके आगें हारिवेकी हू कछु चिन्ता नांही हे तातें तुम डरपो मति. सो सूनिकें वे मायावादी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके पास आए. ता समय श्रीआचार्यजी आप सप्ताह करि चुके हते. तब वे नासिकके पण्डित आए. तिनकों श्रीआचार्यजीनें सत्कार करिकें बेठारे. तब विन पण्डितननें कही. जो महाराज हमारो धन्य भाग्य हे जो आपको दर्शन भयो. ता पाछें विनसुं आपकी चर्चा भई. सो घडीचारमें आप श्रीआचार्यजीनें विन सब पण्डितनकों निरुत्तर कीए. तब सब पण्डितननें आपसमें कही. जो येतो वेद शास्त्रको निरूपण करत हे. सो एतो ईश्वर

हे. तातें विनने बिनती करी जो हम धन्य हें. जो आप ईश्वरको दर्शन हमकों भयो. सो अब आप कृपा करिकें हमकों शरण लीजिये. तब श्रीआचार्यजी आप कहें. जो तुम रुद्राक्ष उतारिकें श्रीगङ्गाजीमें स्नान करि आवो. क्यों जो हमारे सम्प्रदायमें तुलसीमाला धारणकी आवश्यक्ता हे. तब सब ब्राह्मण रुद्राक्ष उतारिके स्नान करि आए. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें सबनको नांम सुनाए. ओर तुलसीकी माला पहराई. तब मायामतको खण्डन करि भक्तिमार्गको स्थापन कीए. तातें नासीकक्षेत्रमें जेजेकार भयो. ता पाछें सब पण्डित दण्डवत् करिकें अपने घरकों गए. ता पाछें श्रीआचार्यजी आप कटाक्षद्वारा अनेक तामसी जीवनको अङ्गीकार कीए. पाछें कछुक दिन बिराजकें तहांतें विजय कीए. सो दक्षिणको पधारे. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु नासिक पंचवटीकी बेठकमें प्रगट कीयो ओर हू अनेक चरित्र कीए. परन्तु मुख्य हे. सोई लिखे हें. इति श्रीपंचवटीकी बेठकको चरित्र समाप्त.

बेठक 37 मी

(अथ श्रीपनांनृसिंहजीकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक पनांनृसिंहजीमें हें. सो तहां एक छोंकरके नीचे आप बिराजे. सो तहां श्रीआचार्यजीके पास श्रीनृसिंहजी पधारे. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी ठाडे होयकें नमस्कार कीए. ओर कहे. जो श्रीनृसिंहाय नमः. ओर आप बिनती कीए. जो आप परिश्रम करिकें इहां क्यों पधारे. मेंतो आपके दर्शनके लीयेही आयो हूं. सो अबही मन्दिरमें आवत हतो. तब श्रीनृसिंहजी कहे. जो मित्रको यही धर्म हे. जो मित्र पधारे पीछें धीरज केसें रहे. आप तो हमारे सर्वस्व हो ओर आपको प्रागट्य तो दैवीजीवनके ऊद्धारार्थ. ओर सकल तीर्थनको सनाथ करणार्थ हे. तातें यह मेरी आज्ञा हे. जो बेगि मन्दिरमें पधारीए. सो यह आज्ञा करिकें श्रीनृसिंहजी आप मन्दिरमें पधारे. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कृष्णदासमेघनसों आज्ञा कीए. जो मिश्रीको पणा सिद्ध करो. वामें सुगन्ध गुलाबजल पधरावो तब दामोदरदास बिनती कीए. जो महाराज श्रीनृसिंहजी पणाही आरोगे हे ताको कारण कहा. तब श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए. जो श्रीनृसिंहजी प्रगट होतही युद्ध करि हिरण्यकश्यपुको मारे. तब आपको बहुत श्रम भयो. तातें पणो श्रम निवारक हे सो आप आरोगे. तातें आपको पणो बहुत प्रिय हे. सो यह आज्ञा करी श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप पणा सिद्ध करवाए. पाछें सब सेवकन सहित आप मन्दिरमें पधारे. सो तब तहां एक पण्डया श्रीनृसिंहजीको कृपापात्र हतो. तासों श्रीनृसिंहजी आज्ञा कीए. जो श्रीआचार्यजी पधारे हें. सो वे साक्षात् श्रीपूर्णपुरुषोत्तमको अवतार हे. तातें भक्ति रीतिसों विनको मन्दिरमें पधराय लावो. तब वा पण्डानें जायकें साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. ओर बिनती करी. जो महाराज आप मन्दिरमें पधारिए. सो तब श्रीआचार्यजी मन्दिरमें पधारे. सो श्रीनृसिंहजीके दर्शन कीए. ओर पणा आरोगाए. तब श्रीनृसिंहजी आप आधो पणा आरोगे. ओर आधो रहिवे दीए. तब

श्रीआचार्यजी बिनती कीए. जो मित्रताकी अधिकता कहा. तब श्रीनृसिंहजी ओर आरोगे. पाछें थोरोसो रह्यो सो आपकों दियो. ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीनृसिंहजीकी आज्ञा लेकें अपनी बेठकमें पधारे. सो तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप सप्ताह कीए. सो तहां श्रीनृसिंहजी सुनिवेकों पधारे. तब श्रीआचार्यजी आप कहे. जो आप परिश्रम करी काहेको पधारे. तब श्रीनृसिंहजी कहे. जो आपके श्रीमुखतें कथा सुनिवेकी बहुत अभिलाषा हती. तातें अब समो पायो हे. सो तब ए बचन सुनिके आप श्रीआचार्यजी बहुत प्रसन्न भए. तब आप कृष्णदासमेघनको आज्ञा कीए. जो एक पटा बिछाय देऊ. तब कृष्णदासने एक पटा बिछाय दीए. ता पर श्रीनृसिंहजी बिराजे सो जहां तांइ सप्ताह भई. तहां तांई आप श्रीनृसिंहजी नित्य पधारें. तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप अपनें चरणारविन्दकी रजद्वारा अनेक तामसी जीवनको उद्धार कीए. ता पाछें आप श्रीनृसिंहजीकी आज्ञा मांगि तहांतें विजय कीए. सो दक्षिण पधारे. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप श्रीपनांनृसिंहजीकी बेठकमें प्रगट कीए. ओर तो अनेक कीए. परन्तु मुख्य हें सोई लिखे हें. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी पनांनृसिंहजीकी बेठकको चरित्र समाप्त. 37.

बेठक 38 मी

(अथ श्रीलक्ष्मणबालाजीकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

जब श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी आप श्रीलक्ष्मणभट्टजी सहित काशीमें बिराजत हते. तब तहां बहुत पण्डित श्रीआचार्यजीसों चर्चा करिवेकों आवते. तब सबनको आप निरुत्तर करते. ओर लक्ष्मणभट्टजी आप ब्राह्मण भोजनकरिवेको बुलावते. तब वे श्रीआचार्यजी महाप्रभुनसों वाद झगडो करते. तब श्रीआचार्यजी आप सबनके मायावादको निरास करि भक्तिमार्ग स्थापन करते. सो एक दिन श्रीआचार्यजी आप विचारें जो अब दक्षणको चले तो ठीक हे. परन्तु, श्रीआचार्यजी महाप्रभुनसों लक्ष्मणभट्टजीको बहुत स्नेह हतो. जो वे क्षण मात्र न देखे तो उनसों रह्यो न जाय. तब श्रीआचार्यजी आप मनमें बिचारे. जो पृथ्वी परिक्रमाको मिस करि सकल तीर्थ सनाथ करने हें. ओर दशों दिशनमें दिग्विजय करि ब्रह्मवादको स्थापन करनो हे. सो तो स्वतन्त्रता विनु यह कार्य न होई. ओर पिताको तो स्नेह बहुत हे. तातें अकेले परदेश जायवेकी तो वे आज्ञा न देंइगे. तातें अब तो श्रीलक्ष्मणभट्टजी स्वधांमको पधारे तो आछो. तब एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप पित्रुचरण श्रीलक्ष्मणभट्टजीसों कहे. जो पिताजी श्रीलक्ष्मणबालाजी होयकें अब कामरवाडको चलेंतो ठीक हे. तब तब श्रीलक्ष्मणभट्टजी बहुत प्रसन्न होय कछुक दिन बाद सब कुटुम्ब सहित श्रीलक्ष्मणबालाजीमें आए. सो तहां एक सुन्दर जगे देखिकें बिराजे. सो तहां श्रीलक्ष्मणभट्टजी स्नान करि श्रीइल्लमागारुजी सहित आचार्यजीको लेकें श्रीलक्ष्मणबालाजीके दर्शन करनेको पधारे. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी आप श्रीलक्ष्मणभट्टजीसों बिनती कीए. जो आप श्रीलक्ष्मणबालाजीको सिंगार करो. तब

लक्ष्मणभट्टजीनें शृङ्गार कीयो ता समय श्रीलक्ष्मणबालाजीको उबासी आई. तातें श्रीलक्ष्मणभट्टजीतो मुखमें लीन होय गये. तब श्रीइल्लमागारुजी बहुत खेद कीए. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप अपनी मातृचरण श्रीइल्लमागारुजीको बहुत प्रकारको समाधान करे. ओर कहे जो हमारे पितातो अक्षरब्रह्मको स्वरूप हते. सो अक्षरब्रह्ममें प्राप्त भये. पाछें आप पिताके वस्त्र लेकें बाहिर पधारे. सो वेदप्रणीतमार्गसों विन वस्त्रनकों अग्निसंस्कारादि क्रिया करकें कछुक दिन बिते तब आप माताजीसों बिनती किये. जो अब आप रामकृष्णको लेकें विद्यानगरमें मामाके घर पधारो. ओर मे हूं कछुक दिनमें आऊंगो. ओर केशवपुरीसों आज्ञा कीए. जो तुम हू कृपा करिके घर पधारिये. सो या प्रकार सूतक निवृत्त भये पाछें सबसों विदा भये. ता पाछें एक ब्रह्मछोंकरके नीचे आप बिराजे. तब आप श्रीआचार्यजी महाप्रभु सप्ताहको प्रारम्भ कीए. तांहां श्रीलक्ष्मणबालाजी नित्य कथा सुनिवेको पधारे. तिनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप नमस्कार करि आसन बिछायकें. आपनें पास पधराए. ओर आप कहें. जो आप श्रम करिकें केसें पधारे. तब श्रीलक्ष्मणबालाजी आज्ञा कीए. जो तुमारे मुखतें कथा सुनिवेकी बडी अभिलाखा हती. सो आज समय आयो हे. तब आप श्रीआचार्यजी सप्ताह कीए. सो तहां महा अलौकिक आनन्द भयो. ता सप्ताहकी समाप्ति करि श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप श्रीलक्ष्मणबालाजीके मन्दिरमें पधारे. तहां सब सेवा सिंगार कीए. ओर पण्डाकों रुपैया पचीस सामग्रीकों दीये. तब श्रीलक्ष्मणबालाजीसों आप पूछे जो महाराज आपकों कहा सामग्री प्रिय हे. तब श्रीलक्ष्मणबालाजी कहें. जो मनोहरके लडुवा करवावो. तातें सोइ सामग्री सिद्धि करवाई. सो थारमें साजिकें पण्डाननें श्रीआचार्यजीसों बिनती करी. जो महाराज आप अपनें श्रीहस्तसों भोग धरिये. तब श्रीआचार्यजी आप अपनें श्रीहस्तसों भोग धरे. तब श्रीलक्ष्मणबालाजीनें कही को अब आपहुं भोजनकों बिराजिये. एसें कहि श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बांह पकरिकें अपने सङ्ग भोजनकों बेठारे. सो परस्पर भोजन कीए. ता समय बडो अनिर्वचनीय सुख भयो. पाछें आचमन करि मुखवस्त्र करि बीडी आरोगाय आरति करी. पाछें श्रीलक्ष्मणबालाजीकी आज्ञा मांगिके श्रीआचार्यजी अपनी बेठकमें पधारे. पाछें तहांतें विजय कीए. या प्रकार तीन बेर आप श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीलक्ष्मणबालाजीकों पधारें. सो तीन्यो बेर न्यारे-न्यारे चरित्र कीए. तिनमें मुख्य हे सोइ लिखे हें. इति श्रीलक्ष्मणबालाजीकी बेठकको चरित्र समाप्त. 38.

बेठक 39 मी

(अथ श्रीरङ्गजीकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक श्रीरङ्गमें कावेरीनदीके तीरपें छोंकरके वृक्षके नीचें हें. सो तहां आप बिराजे. तब आप दामोदरदाससों आज्ञा कीए. जो श्रीरङ्गजी वैकुण्ठतें पधारत हें. तब श्रीरङ्गजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनसों मिलिवेकों पधारे. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप श्रीरङ्गजीकों देखिकें ठाडे भए. ओर प्रणाम करि आसनपें पधराये ओर कही. जो आप परिश्रम करिके यहां क्यों पधारे हो. मेंतो आपके लीये ईहां आयोहि हतो. सो

मन्दिरमें अबही आवतो. तब श्रीरङ्गजी आप आज्ञा कीए. जो आप परिश्रम करि ईतनी दूरसो आए हो. ओर हम ईतनी दूर आये सो यामें कहा बडी बात हे. आप काहेकों भूतलपें पधारते. एतो आप दैवीजीवनके उद्धारार्थ पधारे हो. ओर श्रीनाथजीके प्रागट्यके सर्व समाचार श्रीरङ्गजीनें आपसों पूछे. जो कोन रीतिसों आप श्रीनाथजी प्रगटे हें. ओर कहा-कहा चरित्र कीए हें. ओर कोन भांतिसो बिराजत हें. सो आप सब विस्तारपूर्वक कहिये. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप श्रीनाथजीके प्रागट्यकी सर्व वार्ता श्रीरङ्गजीको सुनाए. सो सुनिके श्रीरङ्गजी बहुत प्रसन्न भये. ता पाछें श्रीरङ्गजीनें कही. जो अब मन्दिरमें पधारिए. तब श्रीआचार्यजी आप कहें. जो आप पधारिए. में हूं पाछेंतें आवतहुं. तब श्रीरङ्गजी आप मन्दिरमें पधारे. ओर मुखिया आनन्दरामकों आज्ञा कीए. जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु साक्षात् पुरुषोत्तमको अवतार पधारे हें. तातें तुम भक्तिभावकी रीतिसों बिनती करिकें विनकों मन्दिरमें पधराय लावो. सो सेवा श्रृङ्गार सब वोही करेंगे. तब आनन्दराम मुखियाने जायकें श्रीआचार्यजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. ओर बिनती करी. जो महाराज आप कृपा करिकें मन्दिरमें पधारिए. सो तब श्रीआचार्यजी आप मन्दिरमें पधारे. तब मुखियाजीनें बिनती करी. जो महाराज सेवा श्रृङ्गार आपहि करिए. श्रीठाकुरजीकी आज्ञा हे. तब श्रीआचार्यजी आप श्रीरङ्गजीको श्रृङ्गार कीए. तब अद्भुत श्रृङ्गार भयो. तब आनन्दराम मुखियाकों महाअलौकिक दर्शन भयो. ता पाछें आनन्दराम मुखियानें बिनती करी. जो महाराजाधिराज मोहुकों शरण लीजिये. तब श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए. जो तुम तो श्रीरङ्गजीके कृपापात्र हो. सो तब श्रीरङ्गजीनें हू कही जो यह दैवीजीव हे. तातें आप याकों सेवक करिए. तब श्रीआचार्यजीनें आप वा मुखियाको नांम सुनाए. ता पाछें इनको दस रुपैया सामग्रीके दीये ओर आज्ञा कीए. जो अब बेगी सामग्री साजिके ले आवो. तब वो सामग्री सिद्धि करिकें थार साजी लाए. सो ताकों आप श्रीआचार्यजीनें श्रीहस्तसों भोग समर्पे. तब श्रीरङ्गजी आज्ञा कीए जो आप हू आरोगिये. तब श्रीआचार्यजी आप कहें जो आप भोजन करिंए. तब श्रीरङ्गजी आज्ञा कीए. जो मुखारविन्दरूप तो आप हो. ओर भोजनतो मुखारविन्दसों होय. सो श्रीरङ्गजीने आग्रह करिकें आपको श्रीहस्तकमल पकरिकें अपने पास श्रीआचार्यजीकों बेठारे. तब परस्पर भोजन कीए. वा समय अनिर्वचनीय सुख भयो. ता पाछें अचवायके बीडा आरोगाए. तब आनन्दराम मुखियासों श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए. जो आरती लावो. तब मुखिया आरती प्रगट करिकें लायो. ता पाछें श्रीरङ्गजीकी आज्ञा ले आरती करि श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप अपनी बेठमें पधारे. ता पाछें आप सप्ताह कीए. तब महाअलौकिक आनन्द भयो. तब मायावादी श्रीरङ्गजीमें हते सो सब भेले होयके चर्चा करन आए. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप सबनको सत्कार करिके बेठारे. ता पाछें चर्चा भई सो घडी दोयमें श्रीआचार्यजी आपनें सबनको निरुत्तर कीए. तब आप मायामत खण्डन करि भक्तिमार्गको स्थापन कीए. तब आप मायामत खण्डन करि भक्तिमार्गको स्थापन कीए. तब श्रीरङ्गजीमें जेजेकार भयो. सो एसो माहात्म्य देखिके अनेक जीव श्रीआचार्यजी

महाप्रभुनकी शरण आए. सो तापाछें श्रीआचार्यजी श्रीरङ्गजीसों बिदा होय विजय कीए. सो विष्णुकांची पधारे. यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप श्रीरङ्गजीकी बेठकमें प्रगट कीए. ओर तो अनेक कीए. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी श्रीरङ्गजीकी बेठकको चरित्र समाप्त. 39.

बेठक 40 मी

(अथ श्रीविष्णुकांचीकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक सुरभीनदीपें छोंकरके नीचें हे तहां आप बिराजे. तब आप दामोदरदासतें आज्ञा कीए. जो सात पुरी हे. तामें साडेतीन पुरी तो शीवकी हे ओर साडेतीन पुरी विष्णुकी हें. सो अब विष्णुकी पुरी कहेत हें. 1.श्रीमथुरापुरी. 2.अयोध्यापुरी. 3.द्वारिकापुरी. ओर आधी विष्णुकांची. सो तामें विष्णुकांचीके मालिक वरदराजस्वामी हें. सो तहां वरदराजस्वामीके अलौकिक दर्शन हें. सो दर्शनकों तो यहां आए हें. परन्तु मन्दिरमें पधारनों न बनेंगो. तब दामोदरदासनें बिनती करी. जो महाराज आप मन्दिरमें पधारिवेकी नांही किए याको कारण कहा हे. तब श्रीआचार्यजी आप कहें. जो जयदेवजी कवी भए हे. सो यहांही भए हें. सो वे वरदराजस्वामीके कृपापात्र हते. वीननें 24 अष्टपदी कीए हें. ओर निजमन्दिरकी चोवीस सिढी हें. सो एक-एक सिढीपें एक-एक अष्टपदी लिखी हे. तातें भगवन्नामपें हमसों पांव केसे दीयो जाय. सो तातें पधारिवो नहीं होयगो. तब दामोदरदास बिनती कीए. जो श्रीवरदराजस्वामी आप पधरावेंगे. सो यह बात श्रीवरदराजस्वामीनें मन्दिरमें बेठे जांनी. तब आप विचारें. जो श्रीआचार्यजी आप मन्दिरमें न पधारेंगे तो मोको ईनके श्रीहस्तकों स्पर्श न होयगो. तातें वरदराजस्वामी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको पधरायवेको आप सामें पधारे. सो श्रीआचार्यजीसों मिलकें आप आज्ञा कीए. जो आप निजमन्दिरमें क्यों नहीं पधारे. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कहें. जो आपके दर्शनतें तो जीव कृतार्थ होय जात हें. परन्तु भगवन्नाम उपर पांव केसें दीजिये. तबतो वरदराजस्वामी श्रीआचार्यजीको श्रीहस्त पकरिकें अपनें मन्दिरमें ले चले. सो मन्दिरमें जाय अपनें सिंघासनपें आधि गादीपें पधराए. ओर तहां एक हस्त सिंगार नांम मुखिया हतो. वा सों श्रीवरदराजस्वामी सम्भाषण करते. तातें आप वासों आज्ञा कीए. जो अब तुम सब पण्डानको लेकें बाहिर निकसी जावो. तब पण्डा मुखिया सब बाहिर निकसि आए. पाछें दोय मुहूर्त तांई वरदराजस्वामी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनसों वार्ता कीए. ता पाछें वरदराजस्वामी कहे. जो अब श्रीगोवर्धननाथजीको प्रागट्य सब कहिये. तब श्रीआचार्यजी आपनें श्रीगोवर्धननाथजीके प्राकट्यको सर्व प्रकार वरदराजस्वामीसों कहे. सो सुनिके वरदराजस्वामी बहुत प्रसन्न भए. तब दोय मुहूर्त पाछें हस्तराम मुखियाको आप बुलाए. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप वाको सात मुद्रा भेटके दीए ओर कहे जो याकी सामग्री लेकें वरदराजस्वामीको अङ्गीकार करवावो. सो तब मुखियाजीने पूछी. जो महाराज कहा सामग्री

अङ्गीकार करवावे. तब श्रीआचार्यजी आप कहे. जो वरदराजस्वामीकी इच्छा होय सो करो. तब वरदराजस्वामीकी आज्ञा भई. जो ढोकलाकी सामग्री सिद्धि करो. सो सामग्री सिद्धि करिकें धरी. सो भोग धरे पाछें समय भयो. तब आनन्दराम मुखिया भोग सरावन गयो. तब वरदराजस्वामी आज्ञा कीए. जो तुम भोग मति सरावो. तब श्रीआचार्यजी आप भोग सरावन गए. तब वरदराजस्वामी आज्ञा कीए. जो आप यहां प्रसाद लेऊ. तब श्रीआचार्यजी ओर श्रीवरदराजस्वामी दोनों सङ्ग मिलिकें भोजन कीए. ता समय महा अलौकिक सुख भयो. ता समें जो वरदराजस्वामीको कृपापात्र मुखिया हतो सो तहां ठाडो हतो. सो वानें यह सुख देख्यो. सो हस्तसिंगार मुखिया वह सुख देखिकें मूर्छित भयो. तब श्रीआचार्यजी ओर वरदराजस्वामी भोजन करि चूके. ता पाछें जल पांन करी बीडा आरोगे. ता पाछें आप हस्तसिंगार मुखियाकों सावधान कीए. तब मुखियानें बिनती करी. जो महाराज मेंतो बडे सुखमें हतो. जो श्रीयमुनाजी तथा श्रीगिरिराजजीके दर्शन करत हतो. ता सुखमेंतें आपनें मोकों क्यों निकास्यो. तब श्रीआचार्यजी कहें. जो जितनो अधिकार होय तितनोंही प्राप्त होय. अब कितनेक दिन तांई तुम श्रीवरदराजस्वामीकी सेवा करो. ता पाछें इनकी आज्ञा होय सो करो. तब यह सुख प्राप्त होयगो. सो तब तोकों व्रजलीलाको दर्शन होयगो. ता पाछें कालांतर करिकें वाकों व्रजलीलाको सम्बन्ध भयो. सो जेसें पुण्डरीक ब्राह्मणकों याही देहसों व्रजलीलाको दर्शन करवायो. सो तो श्रीविट्ठलनाथजीकी आज्ञासों वाको अधिकार विशेष हतो. ओर याको अधिकार न हतो. सो तातें जन्मांतर करिकें याकों व्रजलीलाको सम्बन्ध भयो. सो यह व्रजलीलामें प्राप्त भयो. सो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु वरदराजस्वामीकी आज्ञातें अपनी बेठकमें पधारे. सो तहां आप सात दिनलों श्रीभागवतकी सप्ताह कीए. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप विष्णुकांचीकी बेठकमें प्रगट कीए. ओर हूं अनेक कीए परन्तु यामें मुख्य हे सोई लिखे हे. इति श्रीविष्णुकांचीकी बेठकको चरित्र समाप्त. 40.

बेठक 41 मी

(अथ श्रीसेतुबंधरामेश्वरकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी आप विष्णुकांचीसों विजय कीए. सो सेतुबंधरामेश्वर पधारे. तब तहां सेतुबंधरामेश्वरमें एक छोंकरके नीचें आप बिराजे. तहां आप कृष्णदासमेघनसों आज्ञा कीए. जो श्रीरघुनाथजी आप लमा पधारे. ता समय समुद्रको सेतु बांध्यो. तब यहां श्रीरामेश्वरजीकी आपनें स्थापना कीए हें. सो श्रीरामेश्वरजी श्रीरामचन्द्रजीको स्वरूप हें. तातें विभीषण नित्य दर्शन करिवेकूं आवत हें. सो एसें कहकें आप तहां बिराजे. ता पाछें दूसरे दिन तहां श्रीभागवतकी सप्ताहको प्रारम्भ कीए. तब श्रीरामेश्वरजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी कथा सुनिवेकों पधारे. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें. जो आप परिश्रम करिकें क्यों पधारे. तब श्रीरामेश्वरजी कहें. जो आपनें जीवनपें बडो अनुग्रह कीयो हे. आपको दर्शन यहां कहांतें होय. तातें आप हमहूकों

श्रीभागवतको श्रवण कराइये. यह मेरो मनोरथ हे. तब श्रीआचार्यजी आप कहें. जो कथाको अवकाश कहांतें मिलेगो. परन्तु सप्ताह होयगी सो कृपा करिकें सुनिए. सो जहां तांई श्रीभागवतकी पारायण होती. तहां तांई श्रीरामेश्वरजी आप सुनिवेकों पधारते. सो श्रीआचार्यजीके निकट बिराजते. ओर कथाकी समाप्ति भए पीछे मन्दिरको पधारते. सो तहां एक श्रीरामेश्वरजीको कृपापात्र भक्त हतो. उनकों श्रीरामेश्वरजी आप साक्षात् दर्शन देते. ता पाछें वह खांन पांन करतो. सो एक दिन तीन प्रहर तांई मन्दिरमें वो बेठ्यो रह्यो. परि वाकों श्रीरामेश्वरजीको दर्शन न भयो. पाछें जब आप पधारे. तब वा भक्तने बिनती करी. जो महाराज अब तांई आपको दर्शन न भयो. ताको कारण कहा. तब श्रीरामेश्वरजी कहें. जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु यहां पधारे हें. सो में विनकी कथा सुनिवे गयो हतो. सो अबही आयो. तब तोकों दर्शन भयो हे. तातें अब तूं प्रातःकाल आयो करि. नांतर तीसरे प्रहर आयो करि. तब तोकों दर्शन होयगो. नहीं तो नहीं होयगो. सो जहां तांई श्रीआचार्यजी महाप्रभु वहां पारायण करते. तहां तांई श्रीरामेश्वरजी वहां बिराजे. ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु सप्ताह समाप्त करि चरणारविन्दकी रजद्वारा अनेक तामसी जीवनको अङ्गीकार कीए. ता पाछें पुरोहितकों बुलायकें तीर्थक्षेत्रमें विधिपूर्वक स्नान करि. पाछें श्रीरामेश्वरजीकी आज्ञा मांगि तहांतें आगें पधारे. सो मलयाचलपर्वतपें पधारे. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु सेतुबंधरामेश्वरकी बेठकमें कीए. ओर तो अनेक कीए परन्तु यामें मुख्य हे सोई लिखे हें. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी सेतुबंधरामेश्वरकी बेठकको चरित्र समाप्त. 41.

बेठक 42 मी

(अथ श्रीमलयाचलपर्वतकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक मलयाचलपर्वतपें हे. तहां आप बिराजे. सो तहां आसपास चन्दनको बन हे. सो तहां तामसी जीवनके उद्धारार्थ आप पधारे. तहां एक चन्दनके वृक्षके नीचें बिराजिकें कृष्णदाससों कहें. जो यहां श्रीहेमगुपालठाकुरजी बिराजत हें. तब श्रीहेमगुपालजीने जांनी जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे हें. तब वे मिलिवेकों आए. सो श्रीहेमगुपालजी ओर श्रीआचार्यजी परस्पर मिले. तब अनिर्वचनीय सुख भयो. ता पाछें श्रीहेमगुपालजीनें कह्यो. जो तुम एसी बिकट जगे पधारे हो. जो यहां तामसीजीव बहुत हें. सो वे आपसमें लडत हें. तातें आपके लिए फलाहार में लाऊंगो. आप वैष्णवकों मति पठाइयो. काहेतें जो यहांके तामसीजीव बहुत झेहेरी हें. तब श्रीआचार्यजी बिनती कीए. जो आप प्रसन्न रहिए. आपके प्रतापतें मेरे सेवकनकों कोऊ नांम न लेयगो. ओर महिनान तांई हम यहां बिराजेंगे. सो एसे श्रीमुखके वचन सुनिकें श्रीहेमगुपालजी बहुत प्रसन्न भए. ओर कहे जो यहां आसपास चन्दनको बन हे. तोहू मेरी गरमी नहीं मिटत हे. परन्तु आपके दर्शनमात्रतें मेरे रोम-रोम शीतल भये हें. सो आपको पधारनों यहां कहांतें भयो. आपतो केवल दैवीजीवनके लीये इहां पधारे हो. ओर तिनहीके लियें आपको भूतलपें प्रागट्य हे.

ओर मायामत खण्डनार्थ ओर भक्तिमार्ग स्थापनार्थ हे. सो पृथ्वीपरिक्रमाको मिस करि सकल तीर्थ सनाथ करत हो. फेरि ओर आप पूछे. जो श्रीगोवर्धननाथजीको प्रागट्य सब लीलासहित श्रीगिरिराजमें भयो हे. सो ये समाचार विधिपूर्वक हमकूं सुनाइये. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें सर्व समाचार विस्तारपूर्वक श्रीहेमगुपालजीकों सुनाये. तब श्रीहेमगुपालजी बहुत प्रसन्न भये ओर कहें. जो आप मन्दिरमें पधारिये. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु बिनती कीए. जो आप पधारो. में अरगजा सिद्धि करवायकें आपकों आयकें समरपूंगो. तब श्रीहेमगुपालजी अपने मन्दिरमें पधारे. ता पाछें श्रीआचार्यजी कृष्णदासमेघनसों आज्ञा कीए. जो तुम अरगजा सिद्धि करो. ओर दामोदरदाससों आज्ञा कीए. जो तुम केरा ओर नारियल संमारो. सो सामग्री ओर अरगजा सिद्धि भयो. तब श्रीआचार्यजी सब सेवकन सहित श्रीहेमगुपालजीके मन्दिरमें पधारे. सो श्रीहेमगुपालजीकों अरगजा समर्पे. ओर सामग्री आरोगाए. पाछें आज्ञा मांगि श्रीआचार्यजी अपनी बेठककों पधारे. ता पाछें दूसरे दिन आप श्रीआचार्यजी श्रीभागवतकी परायणको आरम्भ कीए. तब श्रीहेमगुपालजी ठाकुरजी कथा सुनिवे पधारे. तब श्रीआचार्यजीनें आपकुं आसनपें पधराए. तब श्रीहेमगुपालजी आज्ञा कीए. जो आपके श्रीमुखतें कथा सुनिवेकी बहुत इच्छा हती. सो समय मिल्यो हे. सो जहां तांई कथा होय तहां तांई आप श्रीहेमगुपालजी बिराजें. पाछें आप मन्दिरकों पधारे. सो जादिन श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कथाकी समाप्ति कीए. वादिन इन्द्र श्रीहेमगुपालजीके दर्शनकों आयो हतो. सो वादिन वाकों दर्शन न भयो. तब इन्द्र उहांई बेठि रह्यो. सो जब श्रीहेमगुपालजीठाकुरजी कथाकी समाप्ति पाछें मन्दिरमें पधारे. तब दर्शन भयो. सो तब इन्द्रनें साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकें बिनती करी. जो महाराजाधिराज अब तांई आप कहां पधारे हते. जो आपको दर्शन नहीं भयो. ताको कारण कहा. तब श्रीहेमगुपालजी आज्ञा कीए. जो यहां श्रीवल्लभाचार्यजी पधारे हें. तिनके श्रीमुखतें कथा सुनिवेकी बहुत इच्छा हती. सो समय आय मिल्यो हे. विननें श्रीभागवतकी सप्ताह कीए हें. सो में कथा सुनिवे गयो हतो. सो अबही आयो हूं. तब इन्द्रनें साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकें बिनती करी. जो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको केसो स्वरूप हे. सो आप कृपा करिकें कहिए. तब श्रीहेमगुपालठाकुरजी कहें. जो साक्षात् श्रीपूर्णपुरुषोत्तमके मुखारविन्दरूप हें. ओर तेरो यज्ञ मेंटिकें श्रीगिरिराजको प्रत्यक्ष स्वरूप धरि सहस्त्रभुजा धारण करिकें भोजन कीए. ओर श्रीगिरिराज उठायकें गोप गौ तथा व्रजभक्तनको रक्षण कीनो. तब तूं शरणि जाय पड्यो. तातें तेरी पीठिथाप स्वर्गलोकको पठायो. सोई साक्षात् भावात्मकपुरुषोत्तम दैवीजीवनके उद्धारार्थ भूतलपें प्रगट भये हें. तिननें मायामत खण्डन करि भक्तिमार्गको स्थापन कियो हे. तातें अपनों नाम श्रीवल्लभाचार्यजी धर्यो हे. सो चम्पारण्यमें आपको प्रागट्य भयो हे. तब ब्रह्मा ओर तुम सब दर्शनको गए हते. सोई अब तूं भूलि गयो. सो श्रीवल्लभाचार्यजी पधारे हें. तब एसें श्रीमुखके बचन सुनिकें इन्द्रनें दण्डवत् करी. ओर आज्ञा मांगी. जो महाराज में वहां आप श्रीआचार्यजीके दर्शनकों जाऊं. तब श्रीठाकुरजी कहें. जो तूं सुखेन जाइ. तब

इन्द्र पावन चलिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभु जहां बिराजे हते. तहां आयकें साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. ओर गदगद कण्ठ होयकें बिनती करी. जो महाराज आपके दर्शन कहां. येतो श्रीहेमगुपालजीकी कृपासों आपके दर्शन भए. तब श्रीआचार्यजीनें इन्द्रको समाधान करि स्वर्गकों पठायो. ता पाछें कृष्णदासमेघनसों आप आज्ञा कीए. जो इन्द्र दर्शनको आयो हतो. ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप सप्ताहकी समाप्ति करि चरणारविन्दकी रजद्वारा तामसी जीवनको उद्धार कीए. ता पाछें कछुक दिन बिराजे. फेरि श्रीहेमगुपालजीकी आज्ञा ले आगें दक्षणकों पधारे. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु मलयाचलकी बेठकमें प्रगट कीए. ओर हू अनेक कीये हे. इति श्रीमलयाचलकी बेठकको चरित्र समाप्त. 42.

बेठक 43 मी

(अथ श्रीलोहगढकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब मलबार देशमें लोहगढ जाकों अब कोकण गोवा केहेत हें. सो तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप आछी रमणीयजगे देखिकें बिराजे. तहां छोंकरको वृक्ष हे. ताके नीचें एक शिला हे. तहां हाथीके पांवको चिह्न हे. ओर आसपास बहुत गहवर बन हे. सो तहां तामसीजीव हजारन रेहेत हते. तहां आप दामोदरदाससों आज्ञा कीए. जो यह स्थल बहुत रमणीय हे. सो तातें यहां सप्ताह करिकें अनेक तामसी जीवनको तथा दैवीजीवनको अङ्गीकार करिये. तब कृष्णदासमेघननें बिनती करी. जो महाराजाधिराज इहां कोई जलको स्थल दिसत नांही हे. तब आप कहें जो या पर्वतके उपर झरनां बहूत झरत हें. ओर मेरे समीप एक पर्वतकी टेकरी हे. ताके नेंक दूरिपें एक बडो तलाव हे. ओर शिलापें हाथीके पांव हें. सो ताके पास एक बडी शिला हे. वा शिलाके नीचें एक बडी गुफा हे. तामें तीन कुण्ड हें. सो एकतो अप्सराकुण्ड हे. तहां नित्य अप्सरा स्नान करनकूं आवति हें. ओर एक गन्धर्वकुण्ड हे. तहां गन्धर्व स्नान करिवेकों आवत हें. ओर एक देवताकुण्ड हे. इन्द्र सबरे देवतान सहित पूर्णमासीके दिन स्नान करिवेकों आवत हे. ऐसें कहिकें आपनें वहां श्रीभागवतकी पारायणको प्रारम्भ कीए. ताकी सात दिनमें सप्ताह कीए. तब महाअलौकिक आनन्द भयो. ता पाछें श्रीआचार्यजीनें अपनें चरणारविन्दकी सुगन्ध फेलाए. सो सुगन्ध लेतमात्रही हजारन तामसी जीवनकी पशुयोनि छुटि गई. सो गोपालदासजी श्रीवल्लभाख्यानमें गाए हें (ते तामसनां अघ हर्यां परताप पदरज गन्ध) सो यह

महाअलौकिक माहात्म्य देखिकें सब भगवदीय दण्डवत् करिकें बिनती कीए. जो महाराज यह सामर्थ्य आपकी हे. जो एक क्षणमें हजारन जीवनको उद्धार कीए ता पाछें कछुक दिनमें तहांतें विजय कीए. सो आगें पधारे. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु लोहगढकी बेठकमें दिखाए. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी लोहगढकी बेठकको चरित्र समाप्त. 43.

बेठक 44 मी

(अथ श्रीताम्रपर्णीनदीके तीरकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक ताम्रपर्णीनदीके तीरपें छोंकरके नीचे हे. सो तहां श्रीआचार्यजी आप श्रीभागवतको पारायण कीए. तहांतें तीनकोसपें एक बडो शेहेर हे. ता शेहेरको राजा बहुत बीमार हतो. तब वा राजाने पण्डितनसों तथा जोतीशीनसों पुछी. जो मेरो शरीर आछो होय ऐसो उपाय बतावो. तब जोतीशीननें कही. जो राजाजी तुमारे तो सब ग्रह बिगडे हें. तातं विचारिकें कहेंगें. एसें कहिकें सब पण्डित अपनें घरकों गए. तब एक पण्डित तहां बेठ्यो रह्यो. वानें कही जो राजाजी में कहों सो तुम करो. तब बचो. तब वा राजानें कही जो तुम कहोगे सोई में करूंगो. तब वा पण्डितनें कही जो एक सोंनेको पूतरा अपनी बराबरिको बनवावो. वाको तुमारो गहनों पोशाख सब पहरावो. फेरि वा पुतराको दान ब्राह्मणको करो. सो जो ब्राह्मण दान लेयगो सो मरि जायगो. ओर तुम बचोगे. सो सुनिके ताही समय वा राजाने दोय मण सोंनां मंगवाय. सुनार बुलवाइके एक पुतरा बनवायो. वाकों आपनों गहनां पोशाख सब पहराए. तब अपनें पुरोहित समेत सब पण्डितनको बुलायके कही. जो या पूतराको दान लेउं. तब जो ब्राह्मण दान लेवेको जाय ताके सन्मुख वो कालज्वर आवे. तब सब पण्डितननें कही. जो हमको यह दान नांहि चहियत. तब राजाने अपनें पुरोहितको बुलायो ओर कही. जो तुम बिना यह दान कोंन ले सकेगो. तब वा पुरोहित दान लेनको ठाडो भयो. सो गिरि पर्यो. तब वा पुरोहितने कही. जो मोको तो यह दांन चहियत नांही. ता पाछें जा पण्डितने यह दान बतायो हतो. ताहीको राजानें बुलायो. ओर कही जो तुमही यह दान लेउ. तब वा पण्डितने वा पूतराके सामनें देख्यो. सो महाविक्राळ कालको स्वरूप देखि पर्यो. तब वो थरथर कांपिवे लग्यो. ओर राजातें कही जो तुमको मारनों होयतो वेसेई मारो. परि हमकों यह दान तो नांही चाहिये. तब राजा उसास लेके चूप होई रह्यो. ओर कह्यो जो अब काहूमें ब्रह्मतेज रह्यो नांही. अब मेरो मृत्यु निश्चे होयगो. सो यह निश्चे करिकें राजा ताम्रपर्णी नदीके किनारे गयो. सो तहां देखे तो कोटिकन्दर्पलावण्य श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप बिराजे हे. तब राजानें कही जो 'निर्विप्रमुर्वीतलं' या कालमें ब्राह्मणमें ब्रह्मतेज रह्यो नांही हे. सो सुनतही तत्काल श्रीआचार्यजी आप वा राजातें कहे. जो अरे राजा यह कहा बात करो हो. जो जगत कहा नास्तीक हे गयो हे. तब वा राजानें श्रीआचार्यजीतें बिनती करी जो महाराज आप तो साक्षात् ईश्वर दीखो हो. परन्तु राजाको दान करनो. ब्राह्मणनको दान लेनों. यह धर्म हे सो

में दान देत हुं सो कोउ लेते नांही. तब श्रीआचार्यजी आप वा राजासों कहें. जो अब या समयतो आप इहां सों घर जायो. सबेरे हम वहां आइकें तुमारो दान लेइंगे. तब वह राजा प्रसन्न होयकें अपनें घर गयो. पाछें प्रातःकाल श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप सब सेवकन सहित तहां पधारे. सो तब तहां राजाने खबर करनवारे तैयार राखे हते. तिननें खबर दई. तब राजानें श्रीआचार्यजीको वा पुतराके निकट पधराये. ओर समल्प कियो. तब पुतरानें श्रीआचार्यजीके सन्मुख एक अङ्गुरी बताई. तब आपनें हसिकें तीन अङ्गुरीयां दिखाई. तब पुतरानें मांथो नीचो कियो. ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें सुनार बुलाइकें वा पुतराके टूक करवाये. सो देखिवेकों जो हजारन ब्राह्मण आये हते. तिन सबनकों बांटि दीए. ता पाछें राजानें श्रीआचार्यजीसों बिनती करी. जो महाराज वा पुतरानें एक अङ्गुरी उंची करी. ओर आपनें वाके सामनें तीन अङ्गुरी उंची करी. ताको कारण कहा हे. तब श्रीआचार्यजी आप कहें. जो राजा तुम बडे साहसी हो. जो तुम अपनों प्राण बचाइवेके लीये ब्रह्महत्यातें नांही डरपे. सो जो ब्राह्मण मरिजातो तो तुमकों ब्रह्महत्या लगती. तो तबिनतीपातकी होते. फिर आपनें कही जो पुतरानें जो एक अङ्गुरी बताई. सो वानें यह पूछी. जो तुम एककाल गायत्री साधो हो. तब हमनें तीन बताई. जो हम त्रिकाल गायत्री साधें हें. तब वानें माथो नीचो कियो. सो एसो करडो दान कबहु न करनों. जो ओर कोऊ एसो दान लेतो तो मरिजातो. हमनें जो न्यारे-न्यारे टूक करवायकें बांटे. सो अब सब ब्राह्मण थोरो-थोरो भुगत लेइगें. परन्तु कोऊ मरेगो नाहीं. तब राजानें दण्डवत् करिकें बिनती करी. जो कृपानाथ मोकों शरणि लीजिये. तब आप राजाकों सेवक कीए. सो यह माहात्म्य देखिकें अनेकजीव श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी शरणि आए. यामें पण्डितनकों यह जताए. जो प्रतिग्रह लेनों महा कठिन हे. ता पाछें राजानें बहुत भेट करी. पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु ताम्रपर्णीनदीके तीरतें पधारे. सो आपकी बेठकमें पधारे. तहां तीन दिनलों आप गायत्री जप कीयो. तब सब सेवकननें बिनती करी. जो महाराजाधिराज आप तो ईश्वर हो. सो आपनें राजा ओर ब्राह्मण दोनोंको बचाए. तब आप कहें जो हमारी देखादेखी एसो दान कोइ लेईगो. ताको निश्चे मृत्यु होयगो. ता पाछें वहांके सब पण्डित आप श्रीआचार्यजीके सेवक भए. सो यह चरित्र ताम्रपर्णीनदीपें कीए. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी ताम्रपर्णी नदीके तीरकी बेठकको चरित्र समाप्त. 44.

बेठक 45 मी

(अथ श्रीकृष्णानदीकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक कृष्णानदीके तीरपें पीपरके वृक्षके नीचे हे. तहां आप बिराजे हे. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप दामोदरदासतें आज्ञा कीए. जो यहां तैलङ्ग ब्राह्मण मायावादी बहुत हें. सो तिनसों वाद विवाद करकें मायामत खण्डन करि भक्तिमार्गको स्थापन करेंगे. सो पहले तो यहां सप्ताह करेंगे. सो सुनिकें मायावादी आप सब यहां चले आवेंगे. तब सहजहीमें चर्चा होयगी. सो एसी इच्छा किये. पाछें

श्रीआचार्यजीनें वहां श्रीभागवतके पारायणको आरम्भ कियो. यह समाचार मायावादी पण्डितननें सुने. जो श्रीवल्लभाचार्यजी दिग्विजय करत इहां पधारे हें. सो कृष्णानदीके तीरपें बिराजे हें. तातें आसपासके सब पण्डित मिलिकें एकमतो करिकें चलो. सो तब विननें आसपासके सब पण्डितनकों बुलाए. ओर विचारी जो आपको तेज बडो भारी सुने हें. जो विनके सामनें काहूसों बोल्यो नाहीं जात. तातें सब मायावादी पण्डितनें विचारिकें एकमतो करिकें चले. सो कृष्णानदीपें आए. तहां चार्यो सम्प्रदायके वैष्णव हू सब आपके दर्शनकों आए. तिन सबननें बिनती करी. जो महाराजाधिराज ये मायावादी हमकों बहुत दुःख देत हें. यहां मायावादीनको बहुत जोर हे. ओर आप विष्णुस्वामीकी सम्प्रदायके आचार्य हो. तातें आप हमारो रक्षण करिकें मायामतको खण्डन कीजे. तब आप श्रीआचार्यजी कहें. जो हम याके लीये तो यहां आएही हें. आज सप्ताहकी समाप्ति हे चूकी हे. ओर मायावादी हू आवत हें. पाछें तहां थोरीसी बेरमें मायावादी पण्डित हू सब आय पोहोंचे. तिन सबनकों आप श्रीआचार्यजी महाप्रभु आदर करिकें बेठारे. ता पाछें चर्चा भई. तब प्रहर एकमें आप श्रीआचार्यजीनें सेमडान पण्डितनकों निरुत्तर कीए. सो तब मायामतको खण्डन करिकें भक्तिमार्गको स्थापन कीए. तातें चार्यो सम्प्रदायके वैष्णव मनमें बहुत प्रसन्न भये. पाछें विननें बिनती करी. जो महाराजाधिराज कृपा करिकें हमकों शरणि लीजिये. सो तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको माहात्म्य देखिकें अनेकजीव सेवक भए. तब मायावादीनको निश्चे भयो जो एतो वेद पुराणको निरूपण करत हें. सो एतो ईश्वर हें. तिनकें दर्शन आज हमकों भए. सो अब कृपा करिकें हमकों शरणि लीजिये. तब आप श्रीआचार्यजी आज्ञा कीए. जो रुद्राक्ष उतारिकें कृष्णानदीमें स्नान करी आवो. तब सब मायावादी रुद्राक्ष उतारिकें कृष्णानदीमें स्नान करी आए. तब आपनें कृपा करि सबनकों नांम सुनायो. ओर तुलसीकी माला पहराई. तब कृष्णानदीके तीरपें जेजेकार भयो. तब सब पण्डित दण्डवत् करिकें अपनें-अपनें घर गए. ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु कृष्णानदीके तीरसों विजय कीए. इति श्रीकृष्णानदीके तीरकी बेठकको चरित्र समाप्त. 45.

बेठक 46 मी

(अथ श्रीपंपासरोवरकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक पंपासरोवरपें वटके नीचें हे. तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु बिराजे. तहां श्रीहस्तसों पाक करत हते. तब कृष्णदासमेघनसों आज्ञा कीए. जो ढाकके पतौआ लावो. तब कृष्णदासमेघन पतौआ लेंनकों गए. सो दूरि निकसि गए. सो तहां देखें तो एक भयमर पक्षी पर्यो हे. वाकों कृष्णदासनें देख्यो. तब मनमें बिचार्यो. जो यह पक्षी कोई कालांतरको दीखे हे. वाकेही पास ढाकको वृक्ष हे. सो तहां जायकें ढाकके पतौआ तो ले आऊं. एसें बिचारिकें कृष्णदास तहां गए. तब वह पक्षी बोल्यो. जो में रामावतारको बेठ्यो हूं. सो में बहुत दुःख पावत हों. तातें तुम श्रीआचार्यजी महाप्रभुनसों बिनती करो. तो

मेरो उद्धार होय. तुम भगवदीय द्वारा मेरो उद्धार होयगो. सो सुनिकें बिनती सजीनें कही. जो हां में आपसों बिनती तो करूंगो. पाछें तो ईच्छा आपकी. ता पाछें कृष्णदासजी पत्ता लेकें गये. सो विननें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनसों बिनती करी. जो महाराज एक पक्षी रामावतारको बेठ्यो हे. वानें बिनती करी हे. जो मेरो उद्धार करो. अबमें बहुत दुःख पावत हों. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप तो परम दयाल हें. सो आज्ञा कीए जो चरणोदकको जल लेकें वाके उपर छिरको. तब कृष्णदासने चरणोदकको जल ले जायके वाके उपर छिरक्यो. तब ताही समय वाकी पक्षियोनि छुटि गई. ओर दैवी स्वरूप भयो. वाही समय वैकुण्ठतें विमांन आयो. सो विमांनमें बेठिकें वो पक्षी वैकुण्ठको गयो. तब कृष्णदासजीनें आपसों बिनती करी. तब आप कहें. जो तेरे द्वारा वाको उद्धार भयो. सो याके लीयेंही तोकों वहां पतौआ लेन पठायो हतो. फेरि श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप वहां सप्ताह कीए. तब महाअलौकिक आनन्द भयो. ता पाछें आपनें कटाक्ष द्वारा तामसी जीवनको उद्धार कियो. पाछें एक दिन बिराजिकें पंपासरोवरसों विजय कीए. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें पंपासरोवरकी बेठकमें प्रगट कियो. ओरतो अनेक चरित्र कीए. इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी पंपा सरोवरकी बेठकको चरित्र समाप्त. 46.

बेठक 47 मी

(अथ श्रीपद्मनाभजीकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक श्रीपद्मनाभजीमें हें. तहां एक रमणीय स्थल देखिकें छोंकरके नीचें आप श्रीआचार्यजी महाप्रभु बिराजे. तब दामोदरदासजीसों आज्ञा कीए. जो श्रीपद्मनाभजीके नाभीकमलमेंतें ब्रह्मा भयो. सोई पोढानाथको स्वरूप ये हे. सोई शेषशाई शेषकी सिज्यापें पोढे हें. यह कहिकें आप बिराजे हें. इतनेमें श्रीपद्मनाभजी पधारे. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप ठाडे होयकें प्रणाम कीए. जो श्रीपद्मनाभाय नमः. ता पाछें पद्मनाभजीकों आसनपें पधराए. आप हू श्रीआचार्यजी आसनपें बिराजे. फेरि आप श्रीआचार्यजीनें बिनती करी. जो महाराज आप परिश्रम करिकें यहां तांई क्यों पधारे. मेंतो आपके दर्शनके लीयेही यहां आयो हूं. सो मन्दिरमें दर्शन करिवेकों आवत हतो. तब श्रीपद्मनाभजी कहें. जो आप परिश्रम करिकें दक्षणतें यहां तांई पधारे. सो में यहां तांई आयो. यामें कहा बडी बात करी. आप जापें कृपा कटाक्ष करो ताके मनोरथ पूर्ण होय. पाछें श्रीआचार्यजी आप कहें. जो सबेरे में मन्दिरमें आऊंगो. तब श्रीपद्मनाभजी अपनें मन्दिरमें पधारे. पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कथा कहिकें आपनी बेठकमें पोढे. सो सबेरेमें उठि स्नान करि नित्यनेमसों पहूंचे. तब पद्मनाभजीको मुखिया आनन्दराम बडो कृपापात्र हतो. तासों आप श्रीपद्मनाभजी भाषण करते. ता मुखियासों आपनें कही. जो श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी यहां पधारे हें. सो विनकों भक्तिमार्गकी रीतीसों बिनती करिकें मन्दिरमें पधराय लाऊ. तब आनन्दराम मुखियाने आयकें श्रीआचार्यजीसों साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकें बिनती

करी. जो कृपा करिके आप मन्दिरमें पधारिये. तब श्रीआचार्यजी श्रीपद्मनाभजीकें मन्दिरमें पधारे. तब मुखियानें बिनती करी. जो महाराज सेवा शृङ्गार सब आप कीजे. तब श्रीआचार्यजी आपनें श्रीपद्मनाभजीको शृङ्गार कियो. सो तब अद्भुत दर्शन भयो. पाछें श्रीआचार्यजीनें दसरुपैया सामग्रीके दीए. जो याको बेगि थार साजिकें लावो. तब मुखिया थार साजिकें लाए. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप भोग समर्पे. तब श्रीपद्मनाभजीनें आज्ञा करी जो आप प्रसाद लेउ. तब आपनें परस्पर भोजन कियो. ता समें अनिर्वचनीय सुख भयो. सो अलौकिक दर्शन आनन्दराम मुखियाकों भए. तब मूर्छित भयो. सो ता समय वाकों व्रजलीलाको दर्शन भयो. सो श्रीगिरिराज तथा श्रीयमुनाजी तथा श्रीवृन्दावनके दर्शन भए. तहां श्रीआचार्यजी आप भोजन करि आचमन करि बीडा आरोगे. पाछें सिंघासनपें बिराजे. तब श्रीपद्मनाभजीकों श्रीगोवर्धननाथजीके प्रागट्यके समाचार कहे. ता पाछें श्रीआचार्यजीनें आनन्दराम मुखियाको सावधान कियो. तब वा मुखियानें कही. जो महाराज आपकी कृपासों महाअलौकिक दर्शन भयो. अब कृपा करिकें मोको शरणि लीजिये. तब श्रीआचार्यजीनें आज्ञा करी. जो तुमतो श्रीपद्मनाभजीके कृपापात्र हो. श्रीपद्मनाभजीकी सेवासों तुमको सुख प्राप्ति होयगो. तब श्रीआचार्यजीके एसे वचन सुनिकें आनन्दराम मुखिया अपनें मनमें बहुत प्रसन्न भयो. तब पद्मनाभजीनें श्रीआचार्यजीसों आज्ञा करी. जो यह जीव दैवी हे. आप याकों नांम सुनावो. तब श्रीआचार्यजी वा मुखियाकों नांम सुनाए. ता पाछें मुखियासों आज्ञा करी. जो आरती लाऊ. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें श्रीपद्मनाभजीकी आरती करी. पाछें श्रीठाकुरजीकी आज्ञा लेकें अपनी बेठकमें पधारे. पाछें श्रीआचार्यजीनें वहां एक सप्ताह करी. सो श्रीपद्मनाभजी नित्य सुनिवेकों पधारते. पाछें सप्ताहकी समाप्ति करि तामसी जीवनको अङ्गीकार कीए. पाछें कछुक दिन बिराजके श्रीपद्मनाभजीकी आज्ञा लेके तहांते आप आगें पधारे. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप श्रीपद्मनाभजीकी बेठकमें प्रगट कीए. इति श्रीपद्मनाभजीकी बेठकको चरित्र समाप्त. 47.

बेठक 48 मी

(अथ श्रीजनार्दनकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक जनार्दनजीमें कुण्डके पास हे. सो तहां एक छोंकरके नीचें आप बिराजे. सो दूसरे दिन आप श्रीजनार्दनजीके दर्शनकों पधारे. सो सब सेवकन सहित आपनें दर्शन कीए. तब श्रीजनार्दनजी आज्ञा कीए. जो आप भीतर पधारिये. तब श्रीआचार्यजी आप भीतर पधारे. सो तहां जनार्दनजीको कृपापात्र एक पण्डा हतो. ता पण्डासों आप आज्ञा कीए. जो तुम वस्त्राभूषण सब श्रीमहाप्रभुजीकों सोंपो. सो शृङ्गार श्रीमहाप्रभुजी करेंगे. ओर तुम जायकें रसोई सिद्धि करो. तब वह पण्डा रसोई बालभोगमें गयो. तब श्रीआचार्यजी आप शृङ्गार कीए. सो अद्भुत शृङ्गार भयो. तब श्रीजनार्दनजीनें

कही. जो शृङ्गारके मिस करि आपके श्रीहस्तको स्पर्श करायो. नांतर हमकूं इतनेदूर आपके श्रीहस्तको स्पर्श कहांतें होतो. तब पण्डानें बिनती करी. जो महाराजाधिराज सामग्री सिद्धि भई हे. तब श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीये. जो थार साजिकें लावो. तब पण्डा थार साजिकें लायो. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप भोग समर्पे. तब श्रीजनार्दनजीनें आज्ञा करी. जो मुखारविन्दरूप तो आप हो. तातें आप बिनां भोजन केसें करें. तातें आप भोजनको बिराजो. तब श्रीआचार्यजी आप बिनती कीए. जो एसें केसें बनें. तब श्रीजनार्दनजीनें बहुत आग्रह करिकें कही. तब श्रीआचार्यजी मनमें बिचारे. जो भगवद आज्ञा हे सो सर्वोपरी हे. सो उलङ्घन न करनी. तब परस्पर भोजन कीए. तब अनिर्वचनीय सुख भयो. सो वा समयकों दर्शन पण्डाको भयो. तब वा पण्डाको मूर्च्छा आई. पाछें श्रीआचार्यजी अचवाईकें परस्पर बीडा आरोगे. तब जनार्दनजीनें आज्ञा करी. जो श्रीगोवर्धननाथजीके प्राकट्यकी वार्ता सब कहिए. सो मोकों सुनिवेको बहुत अभिलाखा हे. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें श्रीजीके प्राकट्यकी सब वार्ता कही सुनाई. तब श्रीजनार्दनजी बहुत प्रसन्न भए. ता पाछें पण्डाकों ऊठाए. पाछें श्रीआचार्यजीनें श्रीजनार्दनजीकी आरती करि आज्ञा लेकें अपनी बेठकमें पधारे. सो तहां सप्ताहको आरम्भ कीए. तब तहां श्रीजनार्दनजी आप कथा सुनिवेकों पधारे. तब श्रीजनार्दनजीनें कही. जो मोकों आपके श्रीमुखतें कथा सुनिवेकी बडी अभिलाखा हती. सो समय आज मिल्यो हे. तब श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजीके वचन सुनिकें बहुत प्रसन्न भए. पाछें आप सप्ताहकी समाप्ति कीए. सो तहां महाअलौकिक आनन्द भयो. ता पाछें श्रीआचार्यजी आपनें चरणारविन्दकी रजसों अनेक तामसी जीवनको उद्धार कीए. तहां सहजमें मायामत खण्डन करि भक्तिमार्गको स्थापन करे. तब श्रीजनार्दनजीमें जेजेकार भयो. सो यह माहात्म्य देखिकें अनेक जीव शरण आए. पाछें आप श्रीजनार्दनजीकी आज्ञा ले आगें पधारे. इति श्रीजनार्दनजीकी बेठकको चरित्र समाप्त. 48.

बेठक 49 मी

(अथ श्रीविद्यानगरकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक विद्यानगरमें विद्याकुण्डके उपर हे. सो तहां प्रथम आपनें या रीति सों मायामत खण्डन कियो हे. जो एकसमें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप बिचारें. जो दक्षणमें कृष्णदेवराजा महापण्डित हे. जाके यहां चार्यो सम्प्रदायके आचार्यसों मायावादी झगडो करत हें. सो तहां मायावादी प्रबल होय रहे हें. तातें वहां पधारनों. एसो बिचारी आप दक्षिणमें पधारे. सो बीचमें दामोदरदासको गांम हतो. तामें विनके घरके नीचे होयके जायवेको राजमार्ग हतो. सो वे दामोदरदास पूर्वके बिछुरे हते. सो गोखमें बेठे-बेठे श्रीआचार्यजीके दर्शनको विरह करत हते. तब विनके पिता तो भगवदचरणकों प्राप्त भए हते. विन दामोदरदासके बडे भाई तीन हते. सो ऊननें बिचार्यो जो द्रव्य हे. सो क्लेशको मूल हे. तातें याकों बांटि लेंय. तो भैयानमें हित रहेगो. सो बट करिए तो आछो हे. एसो विचारिके

ता पाछें अपने द्रव्यके चार बांट कीए. तब दामोदरदासतें कहें. जो तुम अपनें बांटेको द्रव्य लेऊ. तब दामोदरदासनें कह्यो. जो तुम आछो जानों सो करो. वे दामोदरदासतो यही बिचारते. जो कब श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे ओर कब मोकुं दर्शन होय. सो तब ईतनेंहीमें श्रीआचार्यजी आप राजमार्गमें दामोदरदासकी गोखके नीचे होयके पधारे. तब दामोदरदासकों श्रीआचार्यजीको दर्शन कोटिकन्दर्पलावण्यको भयो. सो देखतहीं दामोदरदास गोखतें नीचे उतरिके भाजिकें श्रीआचार्यजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् कीए. तब आप श्रीमुखतें कहें. जो दमला तूं आयो. ता पाछें आप शेहेरके बाहिर पधारे. सो तब दामोदरदास हूं आपके चरणारविन्द पीछेपीछे चले. सो तहां एक सुन्दर चोतरा हतो. ता उपर आप जायकें बिराजे. तब दामोदरदास दण्डवत् करिकें सामनें बेठे. ओर बिनती करी. जो महाराज अब तुरत मोकों आपनों कीजे. तब श्रीआचार्यजीनें दामोदरदासकों नांम सुनाए. ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप दामोदरदासको सङ्ग लेकें विद्यानगर पधारे. सो तहां प्रथम श्रीआचार्यजी अपनें मांमांके घर पधारे. तब मांमांने अति हर्षसों पधराय. ओर कह्यो जो या राजाके दांनांध्यक्ष हम हें. ओर ईहां साम्प्रत बहुत मत मिले हें. ओर तुम हू बहुत पढे हो. तातें में राजासों तुमारो मिलाप कराऊंगो. तब आप मुसिकाईकें चूप करि रहे. ता पाछें रात्रिकों मांमांनें बिनती करी जो ऊठो भोजन करो. तब श्रीआचार्यजी आप कहें. जो हमतो स्वयंपाकी हें. सो अपनें हाथसों करिकें लेत हें. तब यह सुनिके मांमांकों बहुत बुरी लागी. ओर कह्यो. जो तुमारे बडे-बडे लेत हते. ओर तुम एसे बढिके बोलत हो. तब आपतो साक्षात् ईश्वर हें. सो सब सहन कीए. कछू उत्तर न दीयो. तब ताही समय मांमांनें राजद्वारमें जायकें राजासों कह्यो. जो कल्हि कोऊ नयो ब्राह्मण न आवन पावे. ओर नए ब्राह्मणसों चर्चा न होय. क्यों जो बहुत दिननसों मायावादी ओर वैष्णवनको झगडो होय रह्यो हे. ओर बारह वर्षसों सिरकारमेंतें खरच उठत हे मायावादी अति प्रबल हे. तातें अब वैष्णव सम्प्रदायको खण्डन होयगो. ओर मायामतको तिलक होयगो. सो तब यह सुनिके राजानें खवासतें कह्यो. जो कल्हि कोऊ. नयो ब्राह्मण मति आवन दीजियो. ओर दरवांनते कही देऊ जो काल्हि कोऊ नयो ब्राह्मण न आवन पावे. सो मांमां सब बातको बन्दोबस्त करि अपने घर आयो. तब इल्लमागारुजीने आपतें बहुत कही. जो सब तैयारी कराय देउं. सो श्रीहस्तसों रसोई करिकें भोजन करो. तब श्रीआचार्यजी कहें. जो अबतो सबेरे बात. या बिरियां तो कछू नहीं खायगे. ता पाछें आपतो पोढे. तब अर्धरात्रके समय श्रीगोवर्धननाथजी आप तहां पधारे. सो श्रीआचार्यजीकों जगायकें कहे. जो तुम एसे गर्वित बचन सुनिकें याके घर क्यों रहे. मेंतो तिहारे पीछेंपीछें डोलत हों. एसे कोटानकोटि राजा आपके चरणारविन्दकी अभिलाखा करत हें. सो यह कोंन हे जों आपको राजासों मिलाप करवावेगो तातें आप विद्याकुण्डपें पधारिये. एसी आज्ञा करि श्रीगोवर्धननाथजी तो पधारे. तब ताही समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु ऊठिकें कृष्णदासकों ओर दामोदरदासकों सङ्ग लेकें आप विद्याकुण्ड उपर पधारे. तब तहां देहकृत्य करि स्नान करि नित्यनेम कीए. ता पाछें आप प्रातःकाल अपने

कमण्डलुकों आज्ञा कीए. जो तुम राजा कृष्णदेवकी सभामें खबरी करो. तब कमण्डलु ताही समय राजाकी सभामें अन्तरिक्षसुं गयो. तब राजा सब सभासहित ऊठि ठाडो भयो. ओर कमण्डलुको साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. तब वा कमण्डलुको तेज देखिकें राजानें विचार्यो. जो यहतो साक्षात् ईश्वरको कमण्डलु हे. तब पाछें राजानें वा कमण्डलुसों बिनती करी. जो अब तुम अपनें स्वामीकों पधरायकें लावो. तब फेरि कमण्डलु श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके पास आईकें ध्वनी करी. जो महाराज आप पधारिये. तब श्रीआचार्यजी आप सब सेवकनकों साथ लेकें राजा कृष्णदेवकी सभामें पधारे. सो राजा कृष्णदेवनें शतमण सुवर्णको सिंघासन बनाईकें कर्यो हतो. सो वा राजाके मनमें यह अभिलाखा हती. जो मायामतको खण्डन करि ब्रह्मवादको स्थापन करेगो. ताकों या सिंघासनपें पधरायके कनकाभिषेक करूंगो. तब ईतनेमें श्रीआचार्यजी आप हू दरवाजेके पास पधारे. सो कोटानकोट सूर्यको तेज देखिकें पोरिया दोरे. तिननें राजासों जायकें कही. जो साक्षात् ईश्वर पधारे हें. तब राजा ऊठिकें दोर्यो. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको तेज देखिकें साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकें बिनती करी. जो महाराजाधिराज कृपा करिकें वेग पधारिये. ओर मायामत खण्डन करिये. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप गजगती चालसों वेगि पधारे. तब सब सभा ऊठिके ठाडी भइ. तब राजानें बिनाहीं वाद किए बिनती करी. जो महाराज कृपा करिकें सिंघासनपें बिराजिये. तब श्रीआचार्यजी आप कहें. जो बहुत आछो. पाछें आप सिंघासन उपर बिराजे ओर कहें. जो राजा यह कहा झगडो हे. तब राजानें बिनती करी. जो महाराज वैष्णवनकी ओर मायावादीनकी चर्चा होत हे. तब श्रीआचार्यजी कहें. जो वैष्णव सम्प्रदायतो हमारी हे. सो जाकों चर्चा करनी होय. सो हमारे समीप आयकें बेठो. तब राजानें मायावादीनसों कही. जो अब तुम सब बेठिकें चर्चा करो. तब विननें प्रश्न कीए. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप एक उत्तरमें सब मायावादीनकों निरुत्तर कीए. तब सब पण्डित हाथ जोरिकें कहे. जो महाराजाधिराज आपतो साक्षात् ईश्वर हो. जो आपको दर्शन हमकों आज भयो हे. सो या प्रकार आप विद्यानगरमें मायामत खण्डन करि ब्रह्मवादको स्थापन कीए. तब तहां जेजेकार भयो. तातें राजा कृष्णदेवनें बहुत सेवक करवाए. ओर आप हू सेवक भयो. तब राजा कृष्णदेवनें श्रीआचार्यजीकों कनकाभिषेक करायो. ओर बिनती करी. जो महाराजाधिराज यह सब द्रव्य आपको हे. तब आप आज्ञा कीए. जो यहतो स्नानजल भयो. सो तातें आप सुनार बुलाइकें टूक-टूक करवायकें हजारन ब्राह्मण आए हें. तिन सबनकूं बांटि देउ. सो सुनिकें सब ब्राह्मण कहें. जो यह ईश्वर बिनां कोन करे. तब शतमण सुवर्ण बांटि दीए. तब प्रशंसा करत सब ब्राह्मण अपनें घर गए. तब कृष्णदेवराजानें बिनती करी. जो महाराजाधिराज कृपा करिकें हमकों शरण लीजिये. तब आप राजा कृष्णदेवकों नांम सुनाए. तब राजा कृष्णदेवनें मोहोरनको थार भरि आपकें आगें धर्यो. वामेंतें आप सात मोहोर काढि लीए. तब राजानें बिनती करी. जो महाराज सात मोहोर आप क्यों उठाए. येतो सब मोहोरें आपकी हें. तब आप आज्ञा कीए. जो इन मोहोरनकी हमारी आडीसों

कटिमेखला बनवाईकें श्रीजगन्नाथरायजीकों अङ्गीकार करवावो. सो एसो माहात्म्य देखिकें अनेक जीव श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी शरण आए. ता पाछें आप विद्याकुण्डपें पधारे. तहां सांझकों माधवाचार्य ओर रामानुजाचार्यनें आयकें बिनती करी. जो महाराज आपनें हमारे धर्मकी रक्षा करी. तातें आप भक्तिमार्गके रक्षक भए. सो तातें आप हमारी गादीपें बिराजो. हम सब आपकी आज्ञामें रहेंगे. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु विचारे. जो चार्यो सम्प्रदायके मूर्द्धन्य विष्णुस्वामी हे. तातें विष्णुस्वामि सम्प्रदायके लियें तो हमारो प्रागट्य हे. ओर विष्णुस्वामीके शिष्य बिल्वमङ्गल भए हें. तब इतनेमें बिल्वमङ्गलजी हू आए. तब आईकें श्रीआचार्यजीकों नमस्कार करिके कही. जो कृपासागर विष्णुस्वामी सेवामार्ग प्रगट करिकें बहुत दिना तांई वे भूतलपें बिराजे परि कोई एसो शिष्य न भयो. जो वो मार्ग चलावे. तब या बातको विष्णुस्वामीकों बहुत ताप रह्यो. पाछें आप विष्णुस्वामीतो स्वधांमको पधारे. तब मोसों आज्ञा कीये. जो मेरे शिष्य तो सब ऐसे भए. जो अपनें-अपनें देहके सुखार्थीं भए. सो प्रभुनकों न बिचारें. ओर सम्प्रदायके ग्रन्थनको हू अवलोकन न किये. सेवकनको तो मुख्य धर्म यह हे. जो स्वामी जासों प्रसन्न होयसो करनों. सो या प्रकार विष्णुस्वामीको बहुत विरह भयो. तब स्वप्नद्वारा उनकों भगवदआज्ञा भइ. जो दक्षणमें तैलङ्गकुलमें साक्षात् श्रीपूर्णपुरुषोत्तमको प्रागट्य होईगो. सो बहुतकालतें जो दैवीजीव बिछुरे हें. तिन दैवीजीवनके उद्धारार्थ ओर भक्तिमार्ग-धर्ममार्ग स्थापनार्थ आप पधारेंगे. तिनको भूतलपें संवत् 1535 माधवमास कृष्ण 11 मध्याह्नकालके समय जेष्ठानक्षत्र रविवारके दिन स्वईच्छातें चम्पारण्यमें अग्निकुण्डमेंतें प्रादुर्भाव होयगो. सो तिनको नांम श्रीवल्लभाचार्यजी होयगो. सो सेवामार्ग प्रगट करेंगे. एसी भगवदआज्ञा भई. तब मोसों आप श्रीविष्णुस्वामी कहें. जो मेंतो स्वाधांमकों जात हों. परि तुम रहियो. तुमकों काल बाधा न करेगो. सो जब आप श्रीवल्लभाचार्यजी प्रगट होईकें आप विद्यानगर पधारेंगे. सो वे सभा जितिकें जब दिग्विजय करि भक्तिमार्गको स्थापन करेंगे. ओर मायामतको खण्डन करेंगे. तब तुमकुं अनुभव होयगो. सो तातें तुम विद्यानगरमें विद्याकुण्डपें जैयो. तहां तोकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको दर्शन होयगो. ता दिन तिनसों तूं बिनती करी विष्णुस्वामीके मार्गको अङ्गीकार कराईयो. सो यह मोकों आज्ञा करि श्रीविष्णुस्वामी निजधांम पधारे हें. सो यह वृत्तांत कहिकें बिल्वमङ्गलनें अपनो वृत्तान्त कह्यो. जो महाराजमें श्रीविष्णुस्वामीकी आज्ञातें वृन्दावनमें ब्रह्मकुण्डके उपर ईमलीके वृक्षके नीचें बेठिके आपको स्मरण करत हतो. सो मोकों बेठे-बेठे साढेसातसें वर्ष भए हे. तब अब मोको भगवद आज्ञा भई. जो तूं विद्यानगर जाई. सो अब तोकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको दर्शन होयगो. सो में यहां आयो हूं. एसो बिल्वमङ्गलको वृत्तान्त सुनिकें. श्रीआचार्यजी आप श्रीबिल्वमङ्गलजीके उपर बहुत प्रसन्न भए. ओर कही. जो श्रीविष्णुस्वामीके लिये तो मेरो प्रागट्य हे. तब विष्णुस्वामीकी आडीतें श्रीबिल्वमङ्गलजीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकों तिलक कियो. ता पाछें चार्यो सम्प्रदायके आचार्य मिलिकें श्रीवल्लभाचार्यजी नांम धरे. ओर बिनती करी. जो महाराज चार्यो सम्प्रदाय

आपकी हे. ओर अब हम आपके आज्ञाधारी हें. सो महाराज हमारी सम्प्रदायके दीक्षित आप हो. तब बिल्वमङ्गलनें बिनती करी. जो अब में स्वधांमको जात हों. एसें कहि वाही समें बिल्वमङ्गल स्वधामको पधारे. तब विद्यानगरमें जेजेकार भयो. तब यह माहात्म्य देखिके अनेक जीव शरण आए. ता पाछें चार्योसम्प्रदायके आचार्य अपने-अपनें घरकों गए. पाछें श्रीआचार्यजी आप कछुक दिन बिराजिके विद्यानगरसों विजय कीए. इति श्रीविद्यानगरकी बेठकको चरित्र समाप्त. 49.

बेठक 50 मी

(अथ श्रीत्रिलोकभानजीकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक त्रिलोकभानजीमें हे. सो तहां एक रमणीय स्थल देखिकें छोंकरके नीचे आप बिराजे. सो तहां मायावादी बहुत हते. वे सब शक्तिके उपासक हते. तब श्रीआचार्यजी आप दामोदरदासतें आज्ञा कीए. जो यहां मायावादी बहुत प्रबल हें. तातें मायामतको खण्डन करि भक्तिमार्गको स्थापन करेंगे. सो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप तहां श्रीभागवतकी सप्ताहको आरम्भ कीए. तब महाअलौकिक आनन्द भयो. सो मायावादीननें सुन्यो. जो श्रीवल्लभाचार्यजी यहां पधारे हें. तब मायावादी मिलिकें श्रीआचार्यजीके पास आए. तब आप सबनकों सत्कार करिकें बेठारे. ता पाछें चर्चा भई. सो घडी एकमें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप सब मायावादीनकों निरुत्तर कीए. सो या प्रकार सहजमें मायामत खण्डन करि भक्तिमार्गको स्थापन कीए. तब तहां जेजेकार भयो. तब पण्डाननें बिनती करी. जो महाराज कोई मनुष्य होय वासों जीत्यो जाय. आपतो साक्षात् ईश्वर हो. सो अब कृपा करिके हमकों शरण लीजिये. जब आप उद्धार करोगे तब होयगो. सो महाराज अबतो हम आपकी शरणाङ्गत हें. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आपतो परमदयालु हे. तातें आज्ञा कीए. जो स्नान करि आवो. सो सब स्नान करि आए. तब आप सबनकों नांम सुनाए. ओर तुलसीकी माला पहराए. तब तहां जेजेकार भयो. ता पाछें दण्डवत् करिकें सब अपनें घरकों गये. तब श्रीत्रिलोकभांनजी ठाकुरजी श्रीआचार्यजीके पास पधारे. सो तब आचार्यजी ठाडे होयके दर्शन कीए. ओर प्रणाम करि बिनती कीए. जो महाराज पट्टापें बिराजिये. तब श्रीठाकुरजी वहां बिराजे. तब श्रीठाकुरजीनें कह्यो. जो मायावादतो आप खण्डन कीए हो. तब श्रीआचार्यजी आप कहें. जो यह सब आपको प्रताप हे. जापें आप कृपा कटाक्ष करो. सो सनाथ होय. तब श्रीठाकुरजी कहें. जो आप मन्दिरमें पधारिये. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप श्रीठाकुरजीसों बिनती करी. जो आप मन्दिरमें पधारीए. मे हूं पाछें ते आवत हों. तब श्रीठाकुरजी अपनें मन्दिरमें पधारे. पाछें श्रीआचार्यजी कृष्णदासमेघनसों कहे. जो हर्यो मेवा सिद्धि करो. तब सामग्री सिद्धि करिकें कृष्णदासमेघननें श्रीआचार्यजीकों बिनती करी. जो महाराज पधारिये. सामग्री सिद्ध भइ हे. सो तब श्रीआचार्यजी सब सेवकन सहित पधारे. सो जायकें श्रीत्रिलोकभानजीके दर्शन

कीए. तब त्रिलोकभानजी आज्ञा कीए. जो आप शृङ्गार करिये. तब श्रीआचार्यजी शृङ्गार किये. ता समय आप सबनकों अद्भुत दर्शन भयो पाछें आप श्रीठाकुरजीकों सामग्री आरोगाई. पाछें श्रीठाकुरजीकी आज्ञा ले आप श्रीआचार्यजी अपनी बेठकमें पधारे. सो तहां कछुक दिनलों बिराजिकें तहांतें विजय कीए. सो तोताचलपर्वतपें पधारे. इति श्रीत्रिलोकिभानजीकी बेठकको चरित्र समाप्त. 50.

बेठक 51 मी

(अथ श्रीतोताद्रीपर्वतकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको बेठक तोताचलपर्वतके पास बहुतसो वन हे. तहां बटके नीचे आप बिराजे हे. तहां कृष्णदासमेघननें बिनती करी जो महाराज जलको स्थल कहूं दिसत नांहीं. तब श्रीआचार्यजी आज्ञा कीए. जो मेरे समीप यह कदम्बको वृक्ष हे. ता कदम्बके दक्षण आडी एक बडी शिला हे. ता शिलाकों ऊठावो. सो ताके नीचें एक कुण्ड निकसेगो. वा कुण्डमें बहुत जल हे. तब कृष्णदासनें जायकें वह शिला ऊठाई. तब ताके नीचें एक बडो कुण्ड निकस्यो. तामें सिढी बहुत सुन्दर बनीही. तब सब सेवकननें वा कुण्डको नांम वल्लभकुण्ड धर्यो. सो ये समाचार सब मायावादीननें सुने. जो श्रीवल्लभाचार्यजी यहां पधारे हे. सो विननें दक्षणके विद्यानगरमें तथा काशीमें मायामत खण्डन करि भक्तिमार्गको स्थापन कियो हे. ओर सुनीहे जो अग्निकुण्डमेंसों आपको प्रागट्य हे. तातें अग्निसरीखो आपको तेज हे. सो आपनमेंतें द्वे पण्डित जायकें देखि आवो. जो आपको डेराको नसी जगे हे. एसो विचारिकें विनमेंतें द्वे पण्डित गए. सो जायकें आगें देखें तो एक बटके नीचें आप बिराजे हें. सो तहां आय विननें दर्शन करिकें बिनती करी. जो महाराज यहां निर्जल स्थलमें कहां आए बिराजे. सो सुनिकें आप श्रीआचार्यजीके सेवक कृष्णदासने कही. जो तुम वा कदम्बके नीचें जायकें देखो तो सही. जो केसो सुन्दर कुण्ड जलसों भर्यो हे. सो तब तो वे मायावादी मनमें विस्मय होयकें नमस्कार कर अपनें स्थलकों गए. सो आयकें विननें सब समाचार अपनें साथ केनतें कहें. जो वेतो साक्षात् ईश्वर हें. सो सुनिकें सब पण्डित वहां श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके दर्शनकों आए. तब वहां नयो कुण्ड देखिकें बहुत प्रसन्न भए. तब सबननें यह विचारी. जो इन पथरानमें जल कहांतें भयो. जो आपननें तो कोई दिन देख्यो नांही. ओर बडेनके मुखतें हू सुन्यो नाहीं. जो यहां जल हे. तातें यह तो ईश्वरको अंश हें. ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके निकट जाय आपको साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकें बिनती करी. जो महाराज हमकों तो अब शरण लीजिये. तब श्रीआचार्यजी आज्ञा कीए. जो अब तुम रुद्राक्ष उतारिकें कुण्डमें स्नान करि आवो. तब वे सब रुद्राक्ष उतारिकें स्नान करि आए. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप विनकों नांम सुनाए. ओर तुलसीकी माला पेहेराए. तब तोताचलपर्वतपें जेजेकार भयो. तहां आप मायामत खण्डन करि भक्तिमार्गको स्थापन कीए. ता पाछें सब पण्डित दण्डवत् करिकें अपनें-अपनें घरकों

गए. तब तहां श्रीआचार्यजी आप सप्ताह कीए. तब महाअलौकिक आनन्द भयो इति श्रीतोताचलकी बेठकको चरित्र समाप्त. 51.

बेठक 52 मी

(अथ श्रीदरवसेनजीमेंकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक दरवसेनजीमें हे. सो तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप पधारे. तहां बहुत विकट जगे हे. ओर तहां सर्प व्याघ्रादिक तामसीजीव हू बहुत रेहते हते. ओर आसपास झाडी हू बहुत हे. तहां एक रमणीय स्थल देखिकें आप बिराजे. तब तहां श्रीदरवसेनजीठाकुर पधारे. तब श्रीआचार्यजीनें श्रीठाकुरजीकों प्रणाम कियो. ओर आसनपें पधरायकें बिनती करी. जो महाराज आप परिश्रम करिकें यहां क्यों पधारे. तब श्रीठाकुरजी कहें. जो एसी विकट जगेमें आप जीवनके उद्धारार्थ पधारे हो. नांतर आपको प्रसङ्ग हमकों कहां तें होतो. परन्तु यहां विकट जगे बहुत हे. तातें मेरी बिनती हे जो यहां जीतने दैवीजीव हे सो सबनको उद्धार आप करीये. फेरि दैवीजीव या वनमें कोऊ आवे नाहीं. कारन जो आपके वंशमें सबही पुरुषोत्तम होयंगे. सो जो यहां दैवीजीव होयतो विनके उद्धारके लीये आपके वंशके बालक पधारे तामें मोकोंतो दरशनको लाभ होय परन्तु आपको परिश्रम होय सो ठीक नाहीं. सो एसी आप श्रीठाकुरजीकी वात्सल्यता देखिकें बहुत प्रसन्न भए. तातें तहां चरणारविन्दकी रजद्वारा हजारन जीवनको उद्धार कीए. ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप सप्ताह कीए. सो तहां श्रीठाकुरजी आप नित्य पधारते. तासों अनिर्वचनीय सुख भयो. ता पाछें श्रीआचार्यजी आप सुरत पधारे. इति श्रीदरवसेनजीकी बेठकको चरित्र समाप्त. 52.

बेठक 53 मी

(अथ श्रीसुरतकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कामरवाड होयकें पाण्डुरङ्ग श्रीविट्ठलनाथजीके दर्शन करिकें पञ्चवटी होयकें सुरत पधारे. सो तहां तापीके किनारे अश्विनीकुमारके आश्रमके पास बिराजे. सो तहां तापीमें स्नान कीए. ता पाछें तहां श्रीभागवतको पारायण कीए. तब तहां एक स्त्री अकस्मात आई. सो तापीमें स्नान करि श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करि वामभुजाकी ओर ठाडी होयकें पंखाकी सेवा करन लागी. तब ताकूं कृष्णदासजी बरजे. तब श्रीआचार्यजी कृष्णदासकों नांहीं कीए. सो वो जहां तांई कथा होय. तहां तांई पंखा करे.

ओर आपको श्रीमुखारविन्द निरखे. सो जब कथा होय चूके. तब दण्डवत् करि अपनें आश्रममें जाय. सो वाकी कृष्णदासने बहुत चौकशी करी. परन्तु निश्चे न भयो. जो वे स्त्री कहांतें आवे हें. ओर कहां जाय हे. सो यारीतिसों सात दिन तांई वानें सेवा करी. सो जब पारायणकी समाप्ति होय चूकी. तब वे श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको दण्डवत् करि चरणोदक ले अपने आश्रमको गई. तब कृष्णदासनें श्रीआचार्यजीसों बिनती करी. जो महाराजाधिराज वह यहां जो स्त्री आयकें कथामें पंखाकी सेवा करत हती. सो तो लौकिक स्त्रीतो नांहीं ही. वह तो अलौकिक स्त्री ही. सो कोन ही सो आप कृपा करिकें कहिये. तब श्रीआचार्यजी आप मुसिकाईकें कहें. जो वह तो श्रीतापीजी नदी ही. सो वह श्रीसूर्यनारायणकी पुत्री हे. सो इनकों सप्ताह सुनिवेकी महा अभिलाखा हती. सो यहां सप्ताह सुनिवेकों आवती. तब यह सुनिकें सब सेवक साष्टाङ्ग दण्डवत् कीए. ओर बिनती कीए. जो महाराज आपको अभिप्राय तो आप कृपा करिके बतावो तब ही जान्यो जाय. यह माहात्म्य देखिकें वहां अनेक जीव श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके सेवक भए. इति श्रीसुरतकी बेठकको चरित्र समाप्त.

बेठक 54 मी

(अथ श्रीभडोच्च (भरुच)की बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक भडोचमें नर्मदानदीके किनारे भृगुक्षेत्रमें हे. तहां छोंकरके नीचे आप बिराजे. सो तहां अकस्मात एक स्त्री आई. सो नखतेंलगाय शिख तांई हिरा मोतिनके आभरण पहरे ही. तानें अति हर्षसों आपकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. ओर बिनती करी. जो महाराजाधिराज आपको जो प्रागट्य हे. सो दैवीजीवनके उद्धारार्थ. मायामत खण्डनार्थ. ओर सकल तीर्थ सनाथ करणार्थ हे. सो आप कृपा करि नर्मदास्नान करिवेको पधारिये. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कहें. जो बहोत आछो. अबही हम स्नान करिवेकों आवत हें. तब वह स्त्री दण्डवत् करी अपनें स्थानकों गई. तब दामोदरदासनें बिनती करिकें श्रीआचार्यजीतें पूछी. जो महाराज वह स्त्री बिनती करी गई हे. सो वह कोन हती. सो आप कृपा करिकें कहिये. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कहें. जो वह श्रीनर्मदाजी नदी ही. सो बिनती करि गई हें. पाछें आप नर्मदानदीमें स्नान करनेको पधारे. तब श्रीनर्मदानदी बहुत प्रसन्न भई. तहां स्नान किये. पाछें आप नित्यनेम करिकें अपनी बेठकमें पधारे. ता पाछें आप वहां सप्ताह कीए. तब महाअलौकिक आनन्द भयो. ता पाछें वहां मायावादी पण्डित सब जुरिके आए. तब उनसों चर्चा भई. सो घडी एकमें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप सबनकों निरुत्तर कीए. तहां आपनें मायामतको खण्डन करि भक्तिमार्गको स्थापन कीए. तब भडोंचमें जेजेकार भयो. ता पाछें आप तहांतें विजय कीए सो मोरबी पधारे. इति श्रीमहाप्रभुजीकी भडोंच (भरुच)की बेठकको चरित्र समाप्त.

बेठक 55 मी

(अथ श्रीमोरबीकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी आप मोरबी पधारे. सो तहां कुण्डके उपर छोंकरके वृक्षके नीचे बिराजे. तब कृष्णदासमेघनसों आज्ञा कीए. जो यह राजामयुरध्वजको गांम हे. सो वो राजा बडो सत्यवादी हरिभक्त हतो. तातें यहां श्रीकृष्णचन्द्र अर्जुन सहित पधारे हे. तातें यहां सप्ताह होयगी. सो ता पाछें आप वहां सप्ताह कीए. सो तहां बाला ओर बादा नामके दोउ भाई पुष्करणा ब्राह्मण हते. वे बडे भगवदीय हते. सो वे दोऊ श्रीआचार्यजीके दर्शनको आए. तब उनकों साक्षात् दर्शन भयो. तब उन दोउ भाईनने आपसों बिनती करी. जो महाराज हम बहुत कालतें भटकत फिरत हें. आपतो परम कृपालु हो. सो हमारो उद्धार कीजीये. तब श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए. जो तुम स्नान करी आवो. तब वे स्नान करि आए. पाछें आप कृपा करिकें दोनोकों भगवन्नाम सुनाए ता पाछें ब्रह्मसम्बन्ध करवाए. पाछें बालाको नांमतो बालकृष्णदास ओर बादाको नांम बादरायणदास धर्यो. पाछें विनकों श्रीआचार्यजीने एतन्मार्गीय ग्रन्थ पढाए. ता पाछें विननें आपसों बिनती करी. जो महाराज कृपा करिकें हमकूं सेवा पधराय दीजिये. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें विनकों सेवा पधराय दई. ताको विस्तार चोराशी वैष्णवकी वार्तामें लिख्यो हे इति श्री मोरबीकी बेठकको चरित्र समाप्त. 55.

बेठक 56 मी

(अथ श्रीनवानगरकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक नवानगरमें नागमतीनदीके तीरपें हे. सो तहां एक रमणीय स्थल देखिकें छोंकरके नीचें आप बिराजे. तहां श्रीभागवतको पाठ कीए. ता समय राजा जामतमांचीनें आयकें साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. ओर बिनती करी. जो महाराजाधिराज मेरो धन्य भाग्य हे. जो आपके दर्शन मोकों भए. साक्षात् जाकों वेद शास्त्र निरुपण करत हे. ताके दर्शन मोकूं भए. सो आपके दर्शन मात्रतें मेरी बुद्धि निर्मल भई. अब कृपा करिकें मोकों शरण लीजिये. हम बहुतकालतें भटकत फिरत हें. तब राजाकी आर्ति देखिकें श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए. जो स्नान करि आवो. तब वो राजा स्नान करि आयो. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कृपा करिकें वा राजाकों नांम सुनायो. ता पाछें ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. ओर तुलसीकी माला गरेमें डारी. तब राजानें बिनती करी. जो महाराज मोकों यहां शेहेर बसावनों हे. सो आप आज्ञा देउ तहां बसाऊं. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें. जो याही समय मुहूर्त आछो हे. तातें तुम जायकें अबही शेहेर बसायवेको मुहूर्त करो. जातें तुमारो राज्य निर्भय होईगो. सो तब राजा दण्डवत् करिकें अपनें घर जाय शेहेरको मुहूर्त कियो. सो शेहेर अद्यापी बसत हे. ता पाछें श्रीआचार्यजी आप तहांतें विजय कीए. सो खंभालिया पधारे. सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप नवानगरकी बेठकमें प्रगट

कीए. ओर हू अनेक कीए. परि मुख्य हे सोई लिखे हें. इति श्रीआचार्यजीकी नवानगरकी बेठकको चरित्र समाप्त. 56.

बेठक 57 मी

(अथ श्रीखंभालियाकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक खंभालियामें कुण्डके उपर छोंकरके वृक्षके नीचें हे. तहां आप बिराजे. तहां आप दामोदरदासतें आज्ञा कीए. जो यह स्थल बहुत रमणीय हे. तातें यहां सप्ताह करेंगे. सो तहां सांझके समय एक ब्राह्मणनें आईकें साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. ओर बिनती करी. जो महाराज ईहां रात्रिकों आप मति रहियो. ईहां ईमलीपें एक प्रेत रहेत हे. सो रात्रिकों ईहां जो रेहेत हे. ताकों वह प्रेत खाय जात हे. तातें मेरी यह बिनती हे. जो रात्रमें आप शेहेरमें बिराजो. सो एसें कहि वह ब्राह्मणतो चल्यो गयो. ता पाछें आप रात्रिकों वहां कथा कहिवेकों बिराजे. ता समय कृष्णदास अपरस धोइवेकों गये. तहां वह प्रेत आयो. सो वह आसपास चार्यो बगलकों डोले. तब कृष्णदासनें कह्यो. जो तूं ईतऊत चार्यो ओर क्यों डोलत हे. जो तोकों आवनों होय तो आउ. में ईहांई ठाडो हों. तब वह प्रेत बोल्यो. जो तुमतो बडे महापुरुष हो. तातें मेरे उपर कृपा करो. जो मेरो उद्धार होय. अब में बहुत दुःख पावत हों. ता पाछें कृष्णदास अपरस धोईकें आए. सो सुकाईकें श्रीआचार्यजीतें बिनती करी. जो महाराजाधिराज वह प्रेत आयो हे. सो बिनती करत हे. जो मेरो उद्धार करो. तब श्रीआचार्यजी आप कहें. जो तूं चरणोदक लेकें वाके उपर छिरकि. सो तब कृष्णदासने वेसेंही कियो. तब वाकी प्रेतयोनि छूटि गई. ओर दैवीस्वरूप भयो. तब वैकुण्ठतें विमांन आयो. सो विमांनमें बेठिकें वो वैकुण्ठकों गयो. तब वह श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी जे जे बोलत गयो. तब सब सेवकनने साष्टाङ्ग दण्डवत् कीए. तातें भगवदीय गाए हें जो (चरणोदक लेत प्रेत ततक्षणतें मुक्ति भए करुणामय नाथ सदा आनन्दनिधि कन्दे) ता पाछें श्रीआचार्यजी आप तहां सप्ताह कीए. तब महाअलौकिक आनन्द भयो. ता पाछें आप तहांसों विजय कीए सो पिण्डतारक पधारे. इति श्रीखंभालियाकी बेठकको चरित्र समाप्त. 57.

बेठक 58 मी

(अथ श्रीपिण्डतारकमेंकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक पिण्डतारकपें छोंकरकें नीचें आप बिराजे तहां हे. सो तहां दामोदरदासतें आज्ञा कीए. जो जब श्रीकृष्णचन्द्र द्वारिकामें आयके बिराजे. तब सर्व तीर्थ श्रीद्वारिकाजीके आसपास आपके दर्शन करणार्थ रहे. ओर दुर्वासाॠषी हू यहां रेहेत हें. यह आज्ञा करिकें आप श्रीआचार्यजी तहां बिराजे. सो तहां श्रीभागवतको पारायण कीए. तब एक ब्राह्मण नित्य कथा सुनिवेकों आवतो. वासों आप आज्ञा कीए. जो तुम कहां

रेहेत हो. तब वा ब्राह्मणनें बिनती करी. जो महाराजाधिराज में तीर्थक्षेत्र रहेत हों. सो आपके श्रीमुखतें कथा सुनिवेको बहुत दिननतें मेरो मनोरथ हतो. सो आज समें मिल्यो हे. सो सुनिकें आप मुसिकाईकें चूप करि रहे. सो जहां तांई सप्ताह होइ तहां तांई वो रहें. फेरि दण्डवत् करिकें पाछें जांय. सो काहूकों न दिसें. तब एक दिन कृष्णदासनें बिनती करी. जो महाराजाधिराज वह ब्राह्मण आवे हे. सो वह कोंन हे. सो आप कृपा करिकें कहिये. तब आप आज्ञा कीए. जो वादिन हमनें कही सो तूं समझ्यो नाहीं. जो यह तीर्थक्षेत्रमें रेहेत हें. सो वह पण्डित स्वरूपसों तीर्थराज आवत हें. सो जितनें तीर्थ हें. सो साक्षात् स्वरूपात्मक हें. सो सुनिकें सब सेवक दण्डवत् कीए. पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप अपनें कटाक्षद्वारा अनेक पशु पक्ष्यादि जीवनको उद्धार कीए. ता पाछें आप तीर्थक्षेत्रमें स्नान कीए. तब तीर्थपुरोहित आयो. तासों कृष्णदासनें पूछी. जो तूं कोंन हे. तब वानें कह्यो. जो में तीर्थपुरोहित हों. सो वा तीर्थपुरोहितनें श्रीआचार्यजीको प्रताप देखिकें कही. जो महाराज मेरो उद्धार करिये. में आपकी शरण हूं. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप आज्ञा कीए. जो तेरो उद्धार तीर्थराज करेंगे. और जाकी तूं पीठिकापें हाथ धरेगो. ताके हाथसों पिण्ड तरेंगे. ता पाछें आप वा पुरोहितकों भलीभांतिसों दक्षणा दीए. पाछें आप तहांतें विजय किये. सो मूलगोमतीपें पधारे. इति श्रीपिण्डतारककी बेठकको चरित्र समाप्त. 58.

बेठक 59 मी

(अथ मूलगोमतीजीकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक मूलगोमतीके किनारेपें एक छोंकरके नीचें आप बिराजे हते तहां हे. सो तहां कृष्णदासमेघननें बिनती करी. जो महाराज यह मूलगोमती केसें बाजे हे. तब श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए. जो मूलगोमती श्रीवैकुण्ठतें पधारी. सो राजाके इहां प्रगटी. तब अपनें पितातें कहें. जो मेरो ब्याह मेरी इच्छातें होयगो. पाछें विनकों श्रीद्वारिकानाथजीकी आज्ञा भई. जो तुम यहां तांई आऊ. सो तब विननें पितासों कही. जो अब में जलरूप होयकें समुद्रसों जायकें मिलोंगी. सो या मिसतें श्रीकृष्णचन्द्रके चरणारविन्दको सम्बन्ध मोको होयगो. यह कहि श्रीगोमतीजी जलरूप होय श्रीद्वारिकाजी पधारे. तासों यह मूलगोमती बाजत हें. ता पाछें श्रीआचार्यजी आप वहां बिराजे हते. सो तहां एक संन्यासी आयो. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको दण्डवत् करिकें बेठ्यो. तब श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए. जो यहां तुम कहां रेहेंत हो. ओर कहांसों आए हो. तब वा संन्यासीने बिनती करी. जो महाराज पहलें में दक्षणमें रेहेत हतो. ओर श्रीविष्णुस्वामीको शिष्य हो. सो गृहस्थ हतो. सो मेरे बेटा लुगाई सब मरि गए. तब में गृहस्थसों बेरागी भयो.

तब मेंनें मनमें बिचार्यो. जो अब तो अपनों कल्याण होय तेसें करनों. सो में घर छोडिकें श्रीद्वारिकापुरी आयो. सो यहां आयके श्रीद्वारिकानाथजीके दर्शन कीए. ता पाछें एकांत स्थल देखिकें बेठ्यो. सो तहां श्रीभागवतको पाठ करतो. तब द्वे चार बिरियां काल आयो. सो में नही गयो. मोको इहां बेठे सातसो वर्ष भए. ता पाछें श्रीभगवदआज्ञा भई. जो वर मांगि. तब मेंनें यह वर मांग्यो. जो मोको श्रीकृष्णचन्द्रकी बाललीलाके दर्शन होय. ओर श्रीगिरिराजकी तरहटीमें वास होय. तब फेरि आज्ञा भई. जो यहतो तेनें बहुत कठिन वर माग्यो. जो बडेनको हूं दुर्लभ हे. परन्तु हमारो वर खाली न जायगो. जब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप यहां पधारेंगे. तब तेरो मनोरथ पूर्ण करेंगें. सो अब आप पधारे हो. सो मोको स्वप्नमें आज्ञा भई हे. जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे हें. सो सुनिके श्रीआचार्यजी आप संन्यासीसों कहें. जो तुम साधनमें परि गये. तातें तुमको इतनी ढील भई. अब तुंम स्नान करि आवो. तब वह बेरागी श्रीगोमतीजीमें स्नान करि आयो. तब श्रीआचार्यजी आप वाको नाम सुनाए. ता पाछें आप सप्ताह पूर्ण कीए. तब महाअलौकिक आनन्द भयो. ता पाछें आप वा संन्यासीसों आज्ञा कीए. जो आजतें तीसरे दिन तेरो मृत्यु होयगो. ता पाछें तेरो जन्म श्रीगिरिराजमें व्रजवासीके घरमें होईगो. तहां हरजाग्वाल तेरा नाम धरेंगे. सो तहां हमारे पुत्र श्रीगुसांईजी आप तेरो उद्धार करेंगे. सो सुनिके वह संन्यासी साष्टाङ्ग दण्डवत् करी अपनी पर्णकूटीको गयो. ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप तहांसो विजय कीए. सो श्रीद्वारिकाजी पधारे. इति श्रीमुलगोमतीजीकी बेठकको चरित्र समाप्त. 59.

बेठक 60 मी

(अथ श्रीद्वारिकाजीकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी श्रीद्वारिकाजी पधारे. सो तहां गोमतीजीके किनारे छोंकरके निचे बिराजे. पाछें श्रीद्वारिकानाथजीसों मिलिवेकों मन्दिरमें पधारे. तब श्रीआचार्यजी ठाडे होयके प्रणाम कीए. तब आप श्रीद्वारिकाधीश आगें आय मिले. तब आप श्रीआचार्यजी कहे. जो प्रभु इतनों परिश्रम क्यों कीए. में तो आपतें मिलिवेको आवत हतो. तब श्रीद्वारिकानाथजी कहें. जो आप इतनो परिश्रम करिकें यहां पधारे. ओर हम सामनें आए. यामें हमकूं कहा बडो परिश्रम भयो. अबतो चातुर्मास आप यहांई बिराजो. तब श्रीआचार्यजी कहें. जो आप प्रसन्न होउगे सो करेंगे. तब श्रीद्वारिकानाथजी आप प्रसन्न भए. ओर आज्ञा कीए. जो मन्दिरमें बेगि पधारिये. तब आप बिनती कीए. जो आप पधारो. में हूं पाछेंतें आवत हूं. तब श्रीद्वारिकानाथजी अपनें मन्दिरमें पधारे. पाछेंतें श्रीआचार्यजी आप कृष्णदासमेघनसों कहे. जो सामग्री सिद्धि करो तासमें श्रीद्वारिकानाथजीको कृपापात्र सेवक गोविन्ददास ब्रह्मचारी हतो. तासों श्रीद्वारिकानाथजी आप आयकें कहें. जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु यहां पधारे हें. सो वे साक्षात् श्रीपूर्णपुरुषोत्तमको अवतार हें. तातें तूं सामें जायकें भक्ति भावसों विनको पधराय लाउ. तब गोविन्ददासब्रह्मचारीनें आयकें श्रीआचार्यजीको साष्टाङ्ग दण्डवत् करी.

ओर बिनती करी. जो राजमन्दिरमें बेगि पधारिये. आप प्रभुने मोकों पठाए हे. तब श्रीआचार्यजी ताही समय पधारे. तब ब्रह्मचारीनें बिनती करी. जो महाराज सेवा शृङ्गार सब आपही कीजे. क्यों जो श्रीठाकुरजी आप आज्ञा कीए हें. तब श्रीआचार्यजी आप श्रीद्वारिकानाथजीको शृङ्गार कीए. सो तब सबनकों अद्भुत दर्शन भयो. ता पाछें श्रीआचार्यजी भोग धरि भोग सराय आरती करिकें अपनीं बेठकमें पधारे. तहां श्रीद्वारिकानाथजी नित्य आपकी बेठकमें पधारते. ता पाछें गोविन्ददासब्रह्मचारी नित्य आप श्रीआचार्यजीतें बिनती करे. जो महाराज आपके श्रीमुखतें कथा सुनिवेकी बडी अभिलाखा हे. सो कृपा करिकें सुनाइये. सो ता दिनसों गोविन्ददासके आग्रहतें आप श्रीआचार्यजी पुस्तक खोलिकें कथा कहिवे बिराजते. पाछें तहां श्रीगोवर्धननाथजी पधारिकें श्रीद्वारिकानाथजीसों कहें. जो गोविन्ददासब्रह्मचारी तो राजलीला सम्बन्धी सेवक हे. सो जब आपके श्रीमुखतें कथा सुनेगो. तब वाकों व्रजलीलाको सम्बन्ध होयगो. तातें आप जायकें विनसों बातें करो. तब श्रीद्वारिकानाथजी गोविन्ददासतें बातें करन लागे. सो सुनिकें श्रीआचार्यजी पुस्तक बांधे. ता पाछें श्रीद्वारिकानाथजी मन्दिरमें पधारे. तब श्रीआचार्यजी गोविन्ददासके उपर अप्रसन्न भए. ता पाछें फेरि गोविन्ददासनें श्रीआचार्यजीसों कथाकी बिनती करी. परन्तु आप कथा न कहें. ओर आप श्रीआचार्यजीके सेवक नित्य थारकी जूठनि लेकें पीछें महाप्रसाद लेते. सो वादिन कृष्णदासमेघनसों आप श्रीआचार्यजी आज्ञा कीए. जो आज काहूकों जूठनि मति दिजो. तब कृष्णदासनें थार मांजिकें धरि दियो. सो वादिन काहू सेवकनें महाप्रसाद नाहीं लियो. पाछें श्रीआचार्यजी जब श्रीद्वारिकानाथजीके मन्दिरमें पधारे. तब श्रीद्वारिकानाथजी आज्ञा किये. जो यामें सेवकनको अपराध कहा जो आपनें आज जूठनिकों नाहीं करी. मोसों तो श्रीगोवर्धननाथजीनें आज्ञा कीए. जो गोविन्ददासब्रह्मचारी राजलीला सम्बन्धी हे. सो आपके श्रीमुखतें कथा सुनेगो. तब व्रजलीलामें अङ्गीकार होयगो. तातें तुम जायकें वातें बातें करो. सो तातें मेनें विनतें बातें करी. तब श्रीआचार्यजी आप श्रीद्वारिकानाथजीके बचन सुनिकें प्रसन्न भये. सो पाछें अपनी बेठकमें पधारे. तब आप दामोदरदासतें कहें. जो दमला तुमारी सिफारस तो बडी ठोरसों भई हें. पाछें कृष्णदासमेघनसों आप आज्ञा कीये. जो अब सबनको जूठनि दीजो. ता दिनतें फेरि पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कथा कहेंनकों पधारे. सो जब कथा केहेन लागे. तब श्रीसुबोधिनीजीमेंको फल प्रकरण कहें. तब बडो रसावेश भयो. तातें काहू सेवककों देहानुसन्धान न रह्यो. इतनेमें एक मेघघटा चढि आई. तब श्रीआचार्यजी बिचारें. जो कथामें बहुत रसावेश भयो हे. सो तामें प्रतिबन्ध नहीं होयतो आछो. तब आपकी इच्छा जांनि तहां शेषजी सहस्रफनसों आय छत्रकीनांई छाया कीए. सो तहां चारि घडी तांई वर्षा भई. परन्तु आप श्रीआचार्यजीके सेवकनपें एक बूंद हू न परी. सो जब आप कथा कहि चूके. तब सब सेवक सावधान भए. सो देखें तो वर्षा बहुत भई हे. ओर आसपास जल बहुत बर्स्यो हे. सो देखिकें दामोदरदासनें बिनती करी. जो महाराज बेरबेर आप इतनों परिश्रम क्यों करत हो.

यहां आसपासतो वर्षा बहुत भई हे. ओर इहांतो एक हू बूंद नाहीं परी. तब आप कहें. जो यामें हमनें कछू परिश्रम नाहीं कियो. यहतो शेषजीनें सेवा कीनी हे यह सुनिकें सब सेवक साष्टाङ्ग दण्डवत् कीए. ता पाछें श्रीआचार्यजी अन्नकूट ओर प्रबोधिनी वहांही कीए. सो यह माहात्म्य देखिकें अनेक जीव आपकी शरण आए. ता पाछें आप श्रीद्वारिकानाथजीसों बिदा होयके तहांसों विजय कीए. सो गोपीतलैया पधारे. इति श्रीद्वारिकाजीकी बेठकको चरित्र समाप्त. 60.

बेठक 61 मी

(अथ श्रीगोपीतलैयाकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी गोपीतलैया पधारे. सो तहां छोंकरके नीचें बिराजे. सो तब कृष्णदासमेघननें बिनती करी. जो महाराज यह गोपीतलैया बाजत हे. ताको कारण कहा हे. श्रीगोपीजन तो सदैव ब्रजमेंहीं बिराजत हें. ओर गोपीचन्दन तो यहां होत हें. सो याको कारण आप कृपा करिकें कहिये. तब श्रीआचार्यजी आप कहें. जो यह पुरातनी कथा हे. जो एक समय श्रीद्वारिकाधीशनें श्रीरुक्मिणीजीके आगें ब्रजभक्तनकी बहुत सराहनां करी. तब श्रीरुक्मिणीजीनें कही. जो महाराज हमतो राजाकी बेटी हें. ओर आपकी स्वकीया हें. तातें आपकी आज्ञामें तत्पर हें. तब श्रीठाकुरजी कहें. जो सब कछू हो. परन्तु व्रजभक्तनकी होड कोऊ न करेगो. जो जिननें लोक वेदकी दृढ सांकरी तृनवत करि तोरी डारी. ओर जब मेनें वेणुनाद कर्यो. तबही सब व्रजभक्त पधारे. सो तुम स्वकीया हो. तोहू तुमसों आयो न जाय. तब श्रीरुक्मिणीजीनें कही. जो आप वेणुनाद करोगे. तहां हम आवेंगे. हमकों कोनको डर हे. तब श्रीद्वारिकानाथजी गोपीतलैयापें आय वेणुनाद कीए. तब श्रीरुक्मिणीजी आदि देकें अष्ट पटराणी ओर सोलहहजार स्त्री सब आभूषण साजिकें बेठी हती. सो वेणुनाद सुनिकें त्वरासों ठाडी होयकें चलीं. तब उग्रसेन सहित सब यादवनको समाज देखीकें मनमें समोच भयो. जो ए पूछेंगे तो हम कहा जुवाब देयंगी. सो एसी लज्जासों आपुसमें समोचित होय सब अपनें मन्दिरमें जाय बेठी. तब वेणुनाद सुनिकें व्रजमेंतें कुमारिकानके युथे युथ पधारे. तब विनसों श्रीठाकुरजीनें रमण कीयो. पाछें विन कुमारिकाननें हू लीलामें प्रवेश कियो. सो विन कुमारिका भक्तनके पास यहां सदैव आप बिराजत हें. तातें यहां गोपीचन्दन होत हे. तब कृष्णदासजीनें बिनती करी. जो महाराज यह दर्शन तो अवश्य करे चाहियें. तब श्रीआचार्यजीनें भगवदीयनकों दिव्यचक्षु दीए. तातें श्रीद्वारिकानाथजी अलौकिक कुमारिकानसों रास करत हें. एसो दर्शन करवाए. तब भगवदीयनकों महाअलौकिक आनन्द भयो. तातें काहूकों शरीरकी सुधि रही नांही. ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप सबनकों सावधान कीए. तब सेवकनने दण्डवत् करिकें बिनती करी. जो महाराज आप यहां सप्ताह कीए. सोहू महाअलौकिक आनन्द दिये. ता पाछें आप गोपीतलैयासों विजय कीए. सो शंखोद्धार पधारे. इति श्रीगोपीतलैयाकी बेठकको चरित्र समाप्त. 61.

बेठक 62 मी

(अथ श्रीशंखोद्धारकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक शंखोद्धारमें शंखतलैयाके किनारे छोंकरके वृक्षके नीचें हे. तहां आप बिराजे. सो तब आप दामोदरदासतें आज्ञा कीए. जो इहां श्रीठाकुरजीनें शंखासुर दैत्यको वध करिकें शंख लियो. तब शंखतलैयामेंसों प्रगट भए. तातें श्रीशंखनारायणजी नामतें इहां बिराजत हें. सो यहांके मालिक श्रीशंखनारायणजी हें. ओर यह रमणकद्वीप हू बाजत हें. तातें श्रीद्वारिकानाथजी यहां सदैव रमण करत हें. तातें यह जांनि परत हें. जो कोईक दिन पीछें श्रीद्वारिकानाथजी यहां बिराजेंगे. एसें कहिकें आप श्रीआचार्यजी महाप्रभु शंखतलैयामें स्नान कीए. पाछें श्रीशंखनारायणजीके दर्शन कीए. ता पाछें श्रीशंखनारायणजीको शृङ्गार करि भोग धरि भोग सराय बीडी अरोगाय आरती करि. पाछें अपनी बेठकमें पधारे. तब श्रीशंखनारायणजी श्रीआचार्यजीके पास पधारे ओर कही. जो आपनें श्रीभागवतकी टीका श्रीसुबोधिनीजी कीनी हे. तामेतें वेणुगीतको प्रकरण सुनाइये. तब श्रीआचार्यजी आप बिनती कीए. जो एक श्लोककी व्याख्या तीन दिनलों कहेंगे. पाछें आपनें एक श्लोकको व्याख्यान कीए. सो तीन दिन तीन रात्रि व्यतीत भए. काहूकों देहानुसन्धान न रह्यो. एसो रसावेश भयो. पाछें जब सब सावधान भए. तब श्रीआचार्यजीसों श्रीठाकुरजी कहें. जो यह बात तो आप सोंई बने. ता पाछें श्रीआचार्यजी आप सप्ताह कीए. तब महाअलौकिक आनन्द भयो. सो तहां श्रीशंखनारायणजी नित्य कथा सुनिवेकों पधारते. पाछें सप्ताहकी समाप्ति करि श्रीशंखोनारायणजीकी आज्ञा ले आप श्रीआचार्यजी तहांसो विजय कीए. सो नारायणसरोवर पधारे. इति श्रीबेटशंखोद्धारकी बेठकको चरित्र समाप्त. 62.

बेठक 63 मी

(अथ श्रीनारायणसरोवरकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक नारायणसरोवरपें मार्कंडेयऋषिजीके आश्रमके पास छोंकरके वृक्षके नीचें आप बिराजे तहां हे. सो तहां दामोदरदाससों आप आज्ञा कीए. जो यहां श्रीआदिनारायणजी बिराजे हें. सो वे नारायणसरोवरमेंतें प्रगट भए हें. तातें हम यहां सप्ताह करेंगे. एसें कहिकें श्रीआचार्यजी आप नारायणसरोवरमें स्नान करि सप्ताहको प्रारम्भ कीए. तब अनिर्वचनीय सुख भयो. तहां श्रीकोटेश्वरजीमहादेवजी नित्य कथा सुनिवेकों पधारते. सो तहां श्रीमहादेवजीको एक बडो कृपापात्र सेवक हतो. वाको साक्षात् श्रीमहादेवजी दर्शन देते. ता पाछें वो खांन पांन करतो. सो एक दिन वाकों सांझ तांई दर्शन न भए. सो जब रात्रिको श्रीमहादेवजी पधारे. तब वानें दर्शन कीए. सो तब वा भक्तनें बिनती करी. जो महाराज अब तांई आपके दर्शन न भए. सो ताको कारण कहा हे. तब

श्रीमहादेवजी कहें. यहां श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी पधारे हे. सो में विनकी कथा सुनिवेकों जात हों. तातें तोकों दर्शन करनों होयतो बेगो आयो करि. पाछें श्रीआचार्यजी आप दामोदरदासतें आज्ञा कीए. जो सिंध प्रांतमें दैवीजीव बहुत हें. परन्तु वहां हमारो पधारनों न होईगो. ताको कारण यह हे. जो सरस्वतीजीको उल्लङ्घन हम कब हू न करेंगे. कारण वोतो श्रीभगवद्वाणीको प्रवाह हें. तातें चरणारविन्दकी रजद्वारा वहांके लक्षावधि दैवी जीवनकी तामसी योनी छुट जायगी. फीर पाछें हमारे वंशजद्वारा सबनको अङ्गीकार करेंगे. तब दामोदरदासनें बिनती करी. जो महाराज आपकी ईच्छामें आवे सोई करो. पाछें चरणारविन्दकी रजकी सुगन्धी फेलाय सिंधसों लगाय पंजाब देश तांईके लक्षावधि जीवनकी तामसी योनी छुट गई. इति श्रीनारायणसरोवरकी बेठकको चरित्र समाप्त. 63.

आ स्थळे वादो ने बालो ए बे भाइने शरणे लीधा छे. तेमज नगरठठ्ठाना दिवान नारायणदासने पण अहींज शरणे लीधा छे.

(जुओ अमारा तरफथी प्रगट थयेली चोराशी वैष्णवनी वार्ता.)

वळी अहींथी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुी नगरठठ्ठा, रोहरी तथा बीजे स्थळे सिंधमां पधार्यानुं श्रीवल्लभचरित्रना पुस्तक उपरथी जणाय छे. वधु विगत माटे जुओ अमारा तरफथी प्रगट थयेल "तीर्थयात्रानो हेवाल" ए पुस्तक.

बेठक 64 मी

(अथ श्रीजुनागढकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक जुनागढमें गिरनारपें रेवतीकुण्डके किनारे छोंकरके नीचें हे. तहां आप बिराजे हे. तब गिरनार पर्वत ओर रैवताचल विप्रको स्वरूप धरिकें आए. तानें साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. ओर कह्यो. जो महाराज आपको प्रागट्य सकल तीर्थनको सनाथ करणार्थ हे. तातें या रैवताचल पर्वतको सनाथ कीजे. तब आप आज्ञा कीए. जो रैवताचल हमतो तुमारेही लीयें आए हें. तब आप पधारिकें एक शिलापें बिराजें. तब रैवताचलको परम आनन्द भयो. तब वो नवनीततें हूं अधिक कोमल भयो. तातें आपके चरणारविन्दके चिह्न उपर आए. ता पाछें श्रीआचार्यजी दामोदरकुण्डमें स्नान करिवे पधारे. तब स्नान करतमें श्रीदामोदरजीको स्वरूप आपकों प्राप्ति भयो. सो अब जुनागढमें श्रीरुगनाथलालजीके मांथे बिराजत हें. ता पाछें श्रीआचार्यजी अपनी बेठकमें पधारे. तहां सप्ताहको आरम्भ कीए. तब एक योगेश्वरनें आईकें साष्टाङ्ग दण्डवत् करी ओर कही. जो महाराज आपके श्रीमुखतें कथा सुनिवेको बडी इच्छा हती. सो कृपा करिकें सुनाइए. तब आप सप्ताह कीए. सो वह योगेश्वर नित्य कथा श्रवण करवेकों आवतो. तब एक दिन

कृष्णदासमेघननें बिनती करी. जो महाराज वह योगेश्वर आवत हे. सो कोन हे. तब श्रीआचार्यजी कहें. जो वे द्रोणाचार्यजीके पुत्र अस्वस्थामां यहां गिगिनारमें रहत हें. सो वे कथा सुनिवेकों आवत हे. तब कृष्णदासजी साष्टाङ्ग दण्डवत् कीए. सो यह आज्ञा करि आपनें चरणारविन्दकी रजद्वारा तहां अनेक जीवनको अङ्गीकार कीए. इति श्रीजुनागढकी बेठकको चरित्र समाप्त. 64.

बेठक 65 मी

(अथ श्रीप्रभासक्षेत्रकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी प्रभासक्षेत्र पधारे. सो तहां देहोत्सर्गके उपर छोंकरकें नींचे गुफामें बिराजे. तब आप आज्ञा कीए. जो यादवास्थली यहांही भई हे. यहां श्रीदाऊजी शेषरूप पधारे हे. सो ईहां सप्ताह अवश्य होयगी. ता पाछें आप त्रिवेणीजीमें स्नान करि नित्यनेम कीए. ता पाछें आप सप्ताह कीए. तहां श्रीसोमनाथमहादेवजी नित्य कथा सुनिवेको पधारते. सो एकआडी बिराजते. सो जहां तांई कथा होती. तहां तांई बिराजते. पाछें अपनें स्थानकों पधारते. तहां श्रीमहादेवजीको एक कृपापात्र हतो. ताकों श्रीमहादेवजी साक्षात्कार हते. सो वाकों दर्शन होतो. तब वह महाप्रसाद लेतो. सो एक दिन तीनप्रहर तांई मन्दिरमें बेठ्यो रह्यो. ता पाछें श्रीमहादेवजी पधारे. तब वाकों दर्शन भए. तब वा भक्तनें बिनती करी. जो महाराज अब तांई आपको दर्शन न भयो. ताको कारण कहा. तब वासों श्रीमहादेवजी आज्ञा कीए. जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु यहां पधारे हें. तहां में कथा सुनिवे गयो हतो. सो अब आयो. तब तोकुं दर्शन भयो. तब भक्तनें बिनती करी. जो महाराज मोकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको दर्शन करवाईये. तब श्रीमहादेवजी कहें. जो तूं देहोत्सर्गतीर्थपें जाय. तहां तोको दर्शन होयगो. ओर तूं उनकी शरण जैयो. तब वह भक्त श्रीआचार्यजीके दर्शनकों आयो. सो आयके श्रीआचार्यजीके दर्शन कीए. तब साष्टाङ्ग दण्डवत् करिके बिनती करी. जो महाराज कृपा करिकें मोकों शरण लीजिये. तब श्रीआचार्यजी आप कहे. जो तुम श्रीमहादेवजीके कृपापात्र होयकें हमारे शरण आयवेकी क्यों केहेत हो. तब वानें बिनती करी. जो महाराज मोकों श्रीमहादेवजीनेंही पठायो हे. तब आप आज्ञा कीए. जो तुम स्नान करि आउ. तब वह स्नान करि आयो. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप वाकों नाम सुनायकें वैष्णव कियो. ता पाछें श्रीआचार्यजी आप सप्ताहकी समाप्ती कीए. तब महाअलौकिक

आनन्द भयो. ता पाछें श्रीआचार्यजी आप प्रभासक्षेत्रकी पंचतीर्थी कीए. तहां माहात्म्य देखिके अनेक जीव आपके शरण आये. इति श्रीप्रभासक्षेत्रकी बेठकको चरित्र समाप्त. 65.

बेठक 66 मी

(अथ श्रीमाधवपुरकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक माधवपुरमें कदम्बकुण्डके उपर हे. सो तहां आप बिराजे. तब दामोदरदासतें आज्ञा कीए. जो यहां श्रीरुक्मिणीजीतें श्रीकृष्णको ब्याह भयो हे. सो चौर्यतासों भयो हे. वा ब्याहकी ठोर यह हे. ओर जो आप श्रीकृष्ण रुक्मिणीजी सहित गठजोरासों स्नान कीए. सो येही कदम्बकुण्ड हे. पाछें सब ऋषिमण्डलनें स्नान कीयो हे. एसें कहि पाछें श्रीआचार्यजी आपनें श्रीमाधवरायजीके दर्शन कीये. तब आप श्रीआचार्यजीनें साष्टाङ्ग प्रणाम करिकें बिनती किये. जो महाराज आप इहां कहां बिराजत हो. तब श्रीमाधवरायजी कहे. जो एक ब्राह्मण यहां मोकों नित्य एकलोटा जलसों स्नान करावत हे. सो वाकों आप सेवाप्रकार सिखावो. तब दूसरे दिन फिर श्रीआचार्यजी आप गांममें पधारे. सो तहां माधवरायजीके दर्शन कीए. तब बह ब्राह्मण आयो. तब तासों आप आज्ञा कीए. जो इन श्रीमाधवरायजीको आछी जगे पधरावो. ओर सेवा श‍ृङ्गार आछी रीतसों करो. तातें इनके पीछें तुमारो हू निर्वाह आछी भांतिसो चलगो. तब वा ब्राह्मणनें बिनती करी. जो महाराज मोतें कछू नही बने हें. तातें जेसे आप कहो तेसें करों. तब आपनें छोटीसी जगे बनवाई दई. तामें आपकी आज्ञा प्रमाण श्रीमाधवरायजीकों पधराए ओर धोती उपरणा धराए पागको श‍ृङ्गार कीयो. तब वा ब्राह्मणसों आपनें कही. जो तुम याही रीतसों सेवा करियो. ओर जो मिले ताको भोग धरियो. पाछें श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजीकी आज्ञा लेकें अपनी बेठकमें पधारे. सो कदम्बकुण्डमें स्नान करि सप्ताहको आरम्भ कीए. सो तहां श्रीठाकुरजी नित्य श्रवण करिवेको पधारते. सो तहां महाअलौकिक आनन्द भयो. एसो माहात्म्य देखिके अनेक जीव शरण आए. पाछें तहांसो आप श्रीमाधवरायजीकी आज्ञा लेकें विजय कीए. सो प्रयागक्षेत्रमें पधारे इति श्रीमाधवपुरकी बेठकको चरित्र समाप्त. 66.

बेठक 67 मी

(अथ श्रीगुप्तप्रयागकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक माधवसरस्वतीपें हे. सो तहां आप स्नान कीए. ता पाछें श्रीमाधवरायजीके दर्शन करि आप मूलद्वारिकाको पधारे. तहांतें गुप्तप्रयाग पधारे. तहां प्रयागकुण्डके उपर छोंकरके नीचे बिराजे. तब दामोदरदासतें आज्ञा कीए. जो सारस्वतकल्पमें मुख्य प्रयागराज एही हते. यहां गङ्गा यमुना कुण्ड हें. पाछें आप प्रयागराजमें स्नान करि अपनी बेठकमें पधारे. पाछें दूसरे दिन सबेरे आपनें श्रीभागवतकी पारायणको आरम्भ कीयो. सो तब एक ब्राह्मण आयो. वानें आयके साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. ओर बिनती

करी. जो महाराज में बहुत दिननसों आपको भजन स्मरण करत हतो. सो सब दिननको फल आजि सिद्धि भयो हे. तब आप आज्ञा कीए. जो तूं पहलें कहां रेहेत हतो. ओर यहां कब आयो हे. तब वा ब्राह्मणने बिनती करी. जो महाराजमें पहलें पंढरपुरमें रेहेत हतो. तब अपने मनमें यह बिचार्यो. जो सब शास्त्रनमें मुख्य श्रीमद्भागवत हे. सो श्रीमद्भागवतकोमें नित्य पाठ करतो. तब श्रीविट्ठलनाथजी प्रसन्न भये. ओर आज्ञा कीए. जो तूं वर मांगि. तब मेनें यह वर मांग्यो. जो मोकों व्रजलीलाके दर्शन होंय. तब आप आज्ञा कीए. जो तेंनें एसो वर मांग्यो हे. जो काहूतें दियो न जाय. परन्तु मेरो वरदान खाली न जाय. तातें प्रभासक्षेत्रके पास गुप्तप्रयाग हे. तहां तूं जायके बेठ. सो थोरेसे दिनमें श्रीपूर्णपुरुषोत्तमको अवतार होयगो. तिनको नाम श्रीवल्लभाचार्यजी जगतमें प्रसिद्ध होयगो. सो वे पृथ्वीपरिक्रमाके मिस तें सकल तीर्थनकों सनाथ करेंगे. तब तेरो मनोरथ पूर्ण करेंगे. तब मेनें बिनती करी. जो महाराज में केसें जांनुगो. तब आप श्रीविट्ठलनाथजी आज्ञा कीए. जो जादिन श्रीवल्लाभाचार्यजी पधारेंगे. ता दिन हम तोकों जतावेंगे. सो में वाही दिनसों आपको भजन स्मरण करत हों. सो आज मोकों श्रीविट्ठलनाथजीनें जताए. जो तूं जाकेलीयें भजन स्मरण करत हे. सोई श्रीवल्लाभाचार्यजी यहां पधारे हें. सो तेरो सर्व मनोरथ पूर्ण करेंगे. सो तातें महाराज अब में यहां आयो हूं. सो मेरी यह बिनती हे. जो आप मेरो उद्धार कीजे. तब श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए. जो अब तुं प्रयागकुण्डमें स्नान करि आव. सो तब वह ब्राह्मण स्नान करि आयो. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप वाकों नाम सुनाए. ओर आज्ञा कीए. जो आजतें आठमें दिन तेरो काल होयगो. तब श्रीगिरिराजकी तरहटीमें तेरो जन्म होयगो. तब तहां गोपीनाथदास ग्वाल तेरो नाम होईगो. तब श्रीगुसांईजी तेरो अङ्गीकार करिकें श्रीनाथजीकी गायनकी सेवामें राखेंगे. तब तोकों श्रीनाथजी आप सब लीलाको अनुभव करावेंगे. एसी आप श्रीआचार्यजी आज्ञा किये. तब वा ब्राह्मणनें साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकें कह्यो. जो (निजेच्छातःकरिष्यति) ता पाछें आप सप्ताहकी समाप्ति कीए. तब महाअलौकिक आनन्द भयो. तब वह ब्राह्मण दण्डवत् करिकें अपनें आश्रमकों गयो. ता पाछें वाको काल भयो. पाछें श्रीआचार्यजी अपनें चरणारविन्दकी रजद्वारा तहां अनेक तामसीजीवनको अङ्गीकार कीए. फेरि आप गुप्तप्रयागसों विजय कीए. सो गुजरातमें तगडीमें पधारे. इति श्रीगुप्तप्रयागकी बेठकको चरित्र समाप्त. 67.

बेठक 68 मी

(अथ श्रीतगडीकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक तगडीमें हे. तहां एक ब्राह्मण गृहस्थ हतो. ताके घरके आगें एक चोतरा बहुत सुन्दर हतो. तापें आप बिराजे. ओर रात्रकों वहांहीं पोढें. तब वा ब्राह्मणकें दस पांच गाय तथा दस पांच भेंसि हती. तातें वाकें पांचशेर मांखन नित्य होतो. तब शीतकालके दिन हते. सो सवारेंई ऊठिकें वा ब्राह्मणकी स्त्री मंथन करिकें कूवापें

जलभरनकों गई. सो कूवा दूरि हतो. तातें विनकों आवत विलम्ब भयो. तब वा ब्राह्मणके लरिका दोय हते. सो एकतो वर्ष पांचको. ओर एक वर्ष सातको हतो. सो वे दोऊ लरिका जागे. सो वे जायकें मथनियांमेंतें मांखन खायवे लगे. सो देखिकें वा ब्राह्मणकों प्रेम उत्पन्न भयो. तब वा ब्राह्मणनें बाहिर आयकें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकें बिनती करी. जो महाराज आप भीतर पधारिकें देखिये. जो श्रीकृष्णचन्द्र ओर बलदाऊ मांखन खात हें. तब श्रीआचार्यजी आप पधारिकें देखें तो वे दोऊ लरिका मांखन खाय रहे हे. तब आप आज्ञा कीए. जो तुमकों भगवदलीला स्फूर्ति भई हे. तातें तुम स्त्रीके सांमे जाऊ. सो काहेतें. जो स्त्रीको स्वभाव लोभी होत हे. तातें रञ्चक मांखनके लीए बालकनकों मारेगी. सो ठीक नाहीं. ओर तुमकों श्रीकृष्ण बलदाऊको स्नेह प्रगट भयो हे. तातें अब तुम जायकें स्त्रीकों समुझावो. जो वह इन बालकनकों कण्ठसों लगाय प्यार करीकें कहे. जो बलिजाऊं श्रीकृष्ण बलिरांम जो तुमनें भली करी. जो मांखन खायो. सो तब वह ब्राह्मण स्त्रीके सामनें गयो. सो वानें स्त्रीकों समुझायकें सब वृत्तान्त कह्यो. ओर यह कही जो अपने द्वार महापुरुष पधारे हें. सो उनकी कृपातें यह भाग्योदय भयो हे. तब वा स्त्रीनें कह्यो. जो ठीक हे. में प्यार करिकें वेसेंई करुंगी. तब वह स्त्री आई. सो वानें जल एक आडी धरि उन स्त्रीपुरुषने श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. ता पाछें वा स्त्रीनें घरके भीतर जायकें ऊन बालकनकों कण्ठसों लगायकें कह्यो. जो बलिजाऊं लाल तुमनें भली करी. जो मांखन खायो. सो ता समय उन स्त्री पुरुषनकों तथा श्रीआचार्यजीके सब सेवकनकों अलौकिक लीलाको दर्शन भयो. ता पाछें वा ब्राह्मणनें बिनती करी. जो महाराज कृपा करिकें हमकों शरण लीजिये. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कृपा करिकें उन स्त्री पुरुषनकों तथा उन दोऊ बेटानकों नाम सुनाए. ओर निवेदन करवाए. ता पाछें आप तहां सप्ताह कीए. तब अनिर्वचनीय सुख भयो. ता पाछें उन चार्योनकों लीलामें प्राप्त कीए. तब दामोदरदासनें बिनती करी. जो महाराज थोरेही दिनमें आपनें आज्ञा दीनीं. तब श्रीआचार्यजी आप कहें. जो वे जीव लीलासम्बन्धी हते. सो लीलामें प्राप्त भए. ता पाछें श्रीआचार्यजी त्रगडीतें विजय कीए. सो गुजरातमें नरोडामें पधारे. इति श्रीत्रगडीकी बेठकको चरित्र समाप्त. 68.

बेठक 69 मी

(अथ श्रीनरोडाकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक नरोडामें गोपालदासके घरमें आप बिराजे तहां हे. सो तहां आपने गोपालदासकों साक्षात् स्वरूपानन्दको अनुभव करवाए. ता पाछें आप नाम देवेकी वाकों आज्ञा दीए. तब गोपालदासनें बिनती करी. जो महाराज अब कृपा करिकें मोकों एक भगवद्स्वरूप पधराय दीजीये. तब आप श्रीठाकुरजीकोञ्च्इ1ञ्च्अ स्वरूप पधराय दीए. सो विन गोपालदासनें श्रीआचार्यजीप्रभुनकी बधाई तथा चोखडा बहुत कीए

हें. सो वे गोपालदासजी आनन्दमें मग्न रहते. ता पाछें श्रीआचार्यजी आप सप्ताह कीए. सो तब अनिर्वचनीय सुख भयो. ता पाछें आप नरोडासों विजय किए. सो गोधरा पधारे. इति श्रीनरोडाकी बेठकको चरित्र समाप्त. 69.

(1.आ श्रीठाकोरजी ते श्रीराजनगर-अमदावादमां बिराजता श्रीश्यामलालजी छे जुओ "तीर्थयात्रानो हेवाल")

बेठक 70 मी

(अथ श्रीगोधराकीञ्च्इ1ञ्च्अ बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब गोधरामें राणा व्यासके घरमें आप बिराजे हते. सो विन राणा व्यासको छेओ शास्त्रनको ज्ञान हतो. सो वे बडे पण्डित हते. तातें दक्षिणमें तथा काशीमें सब पण्डितनकों जीते हते. तातें विनके मनमें बहुत गर्व भयो. जो मेरे समांन कोऊ पण्डित नहीं हे. तब फेरि विननें काशीमें सभा करी. तब राणा व्यास हारि गए. तब मनमें बडो ताप क्लेश भयो. जो अब में मुख कहा दिखाऊं. तातें श्रीगङ्गाजीमें डुबि मरूं. सो यह निश्चय करिकें श्रीगङ्गाजीके तट उपर जाय बेठ्यो. ता समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कृष्णदासमेघनकों साथ ले सक्ध्यावन्दन करिवे श्रीगङ्गातटपें पधारे हते. सो तहां राणा व्यास बेठे हते. तब भगवद इच्छासों कृष्णदासनें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनसों बिनती करी. जो महाराज जो प्राणी आपघात करिकें श्रीगङ्गाजीमें डूबिकें मरत हे. ताकों कहा फल सिद्धि होत हे. तब श्रीआचार्यजी आप कहें. जो आत्महत्यावारेकों तो श्रीगङ्गाजी हू मुक्त न करें. वो सात जन्म तांई वेसेइ कियो करे फेरि नरक प्राप्ति होय. ओर ताको यह लोक परलोक दोऊ बिगरें. ओर उद्धार कब हूं न होय. यह सब बात राणा व्यासनें सुनी. तब राणा व्यासनें आयकें श्रीआचार्यजीको साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकें बिनती करी. जो महाराज आप तो साक्षात् ईश्वर हो. आपनें यह आज्ञा तो केवल मेरे अर्थ करी हे. नहीं तो में अबही गङ्गाजीमें डूबिकें मरत हतो. तब श्रीआचार्यजी आप कहें. जो एसो तोपें कहा समट हतो. तब राणा व्यासनें बिनती करी. जो महाराज में दक्षणमें तथा पूरबमें सब पण्डितनकों जीत्यो हूं. सो अब मेंनें काशीमें सभा करी. तब में हारि गयो हूं. तातें मेंनें अपनें मनमें यह विचार कियो. जो अब श्रीगङ्गाजीमें डुबि मरनों. तब श्रीआचार्यजी कहें. जो यहतो तेरो बडो अज्ञान हे. मरेतें कहा होय. जो जीवेगो तो फेरि जीतेगो. ता पाछें आप कहें. जो अब तूं श्रीगङ्गाजीमें स्नान करि आऊ. तब वह श्रीगङ्गाजीमें स्नान करि आयो. तब श्रीआचार्यजी आप वाकूं नाम सुनाए. पाछें आपनें चतुःश्लोकी ग्रन्थ पढायो. ओर आज्ञा कीए. जो अब तूं सबेरेमें जाईकें सभा करियो. सो तूं जीतेगो. तब प्रातःकालही वह राणा व्यास श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको दण्डवत् करिकें सभामें गयो. सो तहां जायकें बेठ्यो. तब वहांके पण्डितननें कही. जो

काल्हितो हारि गयो हतो. ओर आज फेरि क्यों आय बेठ्यो हे. तब वानें कही. जो कालि हारि गयो तो कहा भयो. आज फिर बाद करूंगो. ता पाछें समग्र सभा भेली भई. तब वादारम्भ करिकें क्षणमात्रमें राणा व्यासनें सब पण्डितनको निरुत्तर करि दीए. तातें वो अपनें मनमें बहुत प्रसन्न भयो. ओर जांनी जो. यह सब प्रताप श्रीआचार्यजीको हे. तब वा राणा व्यासनें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके पास आयकें. साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकें बिनती करी. जो महाराज आपकी कृपातें मेनें सब पण्डितनकूं निरुत्तर कीए. तब आप कहें. जो तूं गङ्गाजीमें डुबतो तो सभा कोंन जीततो. जो तूं जीयो तो जीत्यो. ता पाछें राणा व्यासनें श्रीआचार्यजीसों बिनती करी. जो महाराज मोकूं आप श्रीभगवदस्वरूप पधराय दीजिये. तब आप श्रीबालकृष्णजीको स्वरूप पधराय दीए. तिनकी वो राणा व्यास गोधरामें सेवा करते. सो जब श्रीआचार्यजी आप गोधरा पधारते. तब राणा व्यासके घर बिराजते. तहां रजपुतानीको आपनें अङ्गीकार कीयो. ओर श्रीवेणुगीतकी श्रीसुबोधिनीजीको प्रसङ्ग राणा व्यासनें पूछयो. तब श्रीआचार्यजी आप व्याख्यान कीए. सो व्याख्यान करत-करत तीन दिन ओर तीनरात्रि व्यतीत भई. ओर एसो रसावेश भयो. जो काहूकों देहानुसन्धान न रह्यो. ता पाछें श्रीआचार्यजी आप सबनको सावधान कीए. ओर सप्ताह कीए. तब महाअलौकिक आनन्द भयो. पाछें श्रीआचार्यजी आप गोधरासों विजय कीए. सो खेरालू पधारे. इति श्रीगोधराकी बेठकको चरित्र समाप्त. 70.

बेठक 84 मी

(अथ श्रीचरणाद्रीकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बेठक चरणाटमें हे. सो तहां आप बिराजे. सो पहलेंतो आप सप्ताह कीए. तब अहाअलौकिक आनन्द भयो. ता समें श्रीगङ्गाजीके तीरपें एक ब्राह्मण रेहेत हतो. सो नित्य विष्णुसहस्त्रनामको पाठ कियो करतो. सो वानें बारह वर्षलों पाठ कियो. ओर श्रीगङ्गाजीके तीरपें बेठ्यो रह्यो. तब एक दिन श्रीठाकुरजीको स्वरूप श्रीगङ्गाजीके प्रवाहमेंतें प्रगट भयो. सो देखिकें वा ब्राह्मणनें बिनती करी. जो महाराज मेंतो बेरागी हों. ओर आपतो महाअलौकिक हो. सो कोई गृहस्थके वहां बिराजो. तो भलीभांतिसों सेवा होय. ओर मेरेतो नित्य आधसेर दूध आवत हे. सो भोग धरूंगो. ओर स्नान कराऊंगो. तब श्रीठाकुरजी आज्ञा कीए. जो एक मास तेरे यहां बिराजुंगो. पाछें में कहूं तहां मोकों ले चलियो. तब मेरी इच्छा होयगी तहां बिराजुंगो. तब वा ब्राह्मणनें एक मासलों श्रीठाकुरजीको सेवा करी. ता पाछें श्रीगुसांईजीके प्रागट्यतें एक दिन पहलें रात्रिमें श्रीठाकुरजी वा ब्राह्मणसों आज्ञा कीए. जो ईहांसों तीनकोसपें चरणाट हे. सो तहां मोकों ले चलि. वहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप बिराजे हें. तहां मोकों पधराईयो. तब वा ब्राह्मणनें कही. जो मेंतो जानत नांही. जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहां बिराजत हे. तब श्रीठाकुरजी कहें. जो वेतो जगतमें प्रसिद्ध हे. सो तूं जासों पूछेगो. सोई बताय देगो. ओर में तेरे सङ्ग हूं. सो तलावके उपर आप बिराजे हें. तहां चलिकें तुं श्रीआचार्यजी महाप्रभुनसों कहियो. जो

श्रीठाकुरजी आज्ञा करिके तुमारे ईहां पधारे हें. तब वे आप वाही समय मोकों पधराय लेंईगे. ओर तेरे उपर बहुत प्रसन्न होंईगे. तब वह ब्राह्मण ताही समय उठिके स्नान करि सक्ध्यागायत्री करि श्रीठाकुरजीको झांपीमें पधरायके तहांतें चल्यो. सो प्रहर दिन चढे चरणाटमें जाय पहुंच्यो. तब तहां जायकें श्रीआचार्यजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करिके बिनती करी. जो महाराज छोटे मोहोडे बडी बात हे. सो कही नही जात हें. तब आप आज्ञा कीए. जो तूं कहीतो सही. तब वा ब्राह्मणनें कही. जो महाराज श्रीठाकुरजी आपके यहां पधराईवेकी आज्ञा कीए हे. सो तब आप कहें. जो सुखेन पधरावो. तब वा ब्राह्मणनें आपके ईहां झांपी पधराय दई. तब आप बहुत प्रसन्न भए. सो तब वा ब्राह्मणकों भलिभांतिसों समाधान करिकें बिदा कियो. पाछें मध्याह्नकालके समय संवत् 1572 ब्रज पौषवदी 9 भृगुवार वृषभलग्नके समय श्रीविट्ठलनाथजीको प्रादुर्भाव भयो. ता समय भूमण्डलपें बडो जेजेकार भयो. सो गोपालदासजी गाए हें. (पौष नोमे श्रीविट्ठलनाथजी श्रीअक्काजी उर ऊपन्यो आनन्द. आ चन्द श्रीवृन्दावनतणो प्रगटियोए) ओर भगवदीयजन बधाई गाय रहे हें. तहां एक कूप हे. तामेंतें श्रीयशोदाजी, श्रीनन्दरायजी, श्रीवृषभानजी, श्रीकीर्तिजी, नन्द, उपनन्द, गोप, ग्वालन सहित दूधदधीके गगरा लेकें पधारे. ओर तहां भगवदमायातें रत्नजडित मेहेल, डोढी दरवाजे सब बनि गए. पलनांपें मांणिकजडाऊ झूंमका. हीरामोतीनकी झालरि. सोंनेरूपेके भांतिभांतिके खिलोना धरे हें. श्रीगुसांईजीको श्रीमुख निरखिके श्रीचन्द्रावलीजी कस्तूरीको तिलक करत हें. ओर अपने भावसों सूचित करत हें. ओर श्रीस्वामिनीजी दोऊ कपोल परसिके केसरिके कमलपत्र लिखत हें. ओर अनेक भावसों सूचित करत हें. पाछें श्रीयशोदाजी, श्रीकीर्तिजी, श्रीविट्ठलनाथजीकों पलनापें पधराय व्रजभक्तन सहित खिलोंनानसों खिलावत हें. ओर नानाप्रकारके मङ्गल गावत हें. पाछें श्रीनन्दरायजी, श्रीवृषभानजी, नन्द, उपनन्द, श्रीमहाप्रभुजीके पास गोप ग्वाल सहित वाजिंत्र बजावत आये. ओर सब भगवदीय हू समाज सहित आये. तब व्रजभक्तननें श्रीमहाप्रभुजीकों अक्षत दूर्वासों बधाए. पाछें नन्दमहोत्सव भयो. ता समय बडो अनिर्वचनीय सुख भयो. तब भगवदीयननें बधाई गाई. तामेंके एक पदको सङ्क्षेप हे. सो पद

(राग सारङ्ग)
पौष निर्दोष सुखकोष सुन्दर मास कृष्ण नौमी सुभ घडी दिन आज॥
श्रीवल्लभ सदन प्रगट गिरिवरधरन चार्यो विधु वदन सुछबि श्रीवल्लभविट्ठलराज॥1॥
सो एसी अनेक बधाइ गाए हें. पाछें शेषजी पधारे. सो छाया कीए. ओर ब्रह्माजी पधारे. सो वेद पढिवे लगे. ओर श्रीमहादेवजी आप ठाडे होयकें ताण्डव नृत्य करिवे लगे. ओर इन्द्र तेत्रीसकोटि देवतान सहित आयो सो निशांन बजावत हे. ओर फूलनकी वर्षा करत हें. देवाङ्गना गुनगांन करत हें. श्रीव्यासजी, श्रीशुकदेवजी, आदिदेकें अठ्यासीहजार

ऋषीमण्डल आए हें. सो वेदकी ध्वनी करत हें. सो मेघकिसी गर्जना होय रही हे. अप्सरा आयकें नृत्य करत हें. ओर गन्धर्व गांन करत हें. बंदी, मागध, भाट, याचक, बहुत आए हें सो सबको श्रीमहाप्रभुजी सन्मान करत हें. ओर दूध दधीकी मांनो सरिता बही हे. सो एसो नन्दमहोत्सव भयो. ता समय काहूकूं देहकी सुधि रही नांही. अष्ट महासिद्धि नवनिधि द्वार बहारत हें. ओर लक्ष्मीजी द्वारद्वारपें बन्दरवार बांधत हें. जगे-जगे मङ्गल कलश साजे हें. भुवन-भुवन प्रति ध्वजापताका फेहेरात हें. सो महाअलौकिक आनन्द होय रह्यो हे. ता समें भगवदीयननें बधाई गाई. तिन बधाइनकी एक-एक तुक कही हे सो. राग आसावरी. जुरिचलि हें बधाये श्रीवल्लभगृह सुन्दर व्रजकी बाला. ओर जुरि चलि हें बधाये श्रीवल्लभगृह प्रगटे श्रीविट्ठलराय ओर श्रीविट्ठलप्रभु प्रगट भए श्रीगोकुल सुख दाई. सो एसी-एसी अनेक बधाई भगवदीयजन गाए हें. सो यहां ग्रन्थविस्तारके भयसुं सङ्क्षेपमात्र लिखी हें. पाछें श्रीमहाप्रभुजी मङ्गलस्नान करनकों पधारे. सो रुपैया मोहोरनकी न्योछावरि होत पधारे. सो श्रीगङ्गाजीमें स्नान करि पाछें अपनें स्थानपें पधारे. पाछें दांन देवेकों आप श्रीनन्दरायजी, श्रीवृषभानजी बडे-बडे गोपन सहित श्रीआचार्यजी आयकें बिराजे. सो आपके यहां हीरा माणेकके अनेक भण्डार भरे हें. हजारन गाय भेंसनके ठाठ ठाडे हें. जानें जो मांग्यो सो ताकों देत हें. तुरङ्गल, हस्ती, रथ, सुखपाल दीए. ओर भण्डार सबरे खोलि दीए. तब बन्दीजन सब बेठिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको यश बोलत हें. जेजे शब्द उच्चार होय रहे हें. ओर मागध, सूत सिद्ध, चारण, भाट, सबनको मन भायो दांन देत हें. तब कुलगुरु श्रीगर्गाचार्यजी आये. तिननें श्रीगुसांईजीकी जन्मपत्रिका बांची. सो संवत् 1572 व्रज पौष वदी 9 भृगुवार वृषलग्न मध्याह्नसमय श्रीवल्लभात्मज श्रीविट्ठलनाथजीको प्रादुर्भाव भयो. सो ए अनेक कांमना पूर्ण करेंगे. इनकें दोय बहूजी होंईगी. ओर सातलालजी होंईगें. याके वंशके सबही पुरुषोत्तम होयगे. सो मायामत खण्डन करि ब्रह्मवादको स्थापन करेंगे. दैवीजीवनको उद्धार करेंगे. ओर सब तीर्थनकों सनाथ करेंगे. इनको अपारयश होयगो सो एक जिह्वातें हम कहां तांई वर्णन करें. शेष सहस्रमुखसों पार नहीं पावत हे. ता पाछें कुलगुरु श्रीमहाप्रभुजीनसों बिदा होइकें पधारे. पाछें इन्द्र, व्यासजी, शुकदेवजी, अप्सरा, गन्धर्व, ब्रह्मा, महादेवजी, सब दण्डवत् करिकें अपनें-अपनें धामकों पधारे. शेषजी हू अपनें लोककों पधारे. तब भगवदीयनको समाज ले आप भीतर भवनमें पधारे. सो श्रीठाकुरजी तथा श्रीगुसांईजी इन दोऊ स्वरूपनकी एकही छबि ही. सो आप देखि-देखि कें मंद-मंद मुसिकात हें. सो भगवदीय गाए हें. (आनन्द फेल्यो चहूंदिश छबि निरखि श्रीवल्लभ हसे. वेउ कछू मुसिकाय चितये दोऊ हसनि मेरे मन बसे. तिलक मृगमद छप्यो हरखत कहांलों गुन गाइये. कृपातें उछलित निजरस छिपत नाहीं छिपाइये) ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें श्रीस्वामिनीजी तथा श्रीचन्द्रावलीजी, श्रीयमुनाजी, चतुर्थयूथाधिपति ओर श्रीव्रजभक्त इन सबनको सब प्रकारतें सन्मान करि मन्दिर भीतर पधराये. ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीगुसांईजीकों पालनें झुलाए. तब बडो अनिर्वचनीय सुख भयो. सो

ता समय व्रजभक्त तन, मन, धन, वारत हें. पाछें श्रीगुसांईजीकों तिलक करि आरति वारति हें. सो ता समय श्रीगुसांईजी हाव भाव करत हें. व्रजभक्तनकों कटाक्ष करि भावको सम्बोधन करत हें. श्रीयशोदाजी, श्रीकीर्तिजी, पालनें झुलावें हें. पाछें श्रीनन्दरायजी, श्रीवृषभानजी, आदि सब श्रीमहाप्रभुजीसों बिदा होयकें आशीष दीये. जो सदां आपको घर सूबस बसो. ओर आपके वंशमें सबही पुरुषोत्तम होईंगे. सो पुष्टिमार्गको प्रकाश करेंगे. ओर सारस्वतकल्पकी नित्यलीला करि दैवीसृष्टिको अनुभव करावेंगे. श्रीगोकुल फीर बसावेंगे. दिन-दिन अधिक प्रताप होइगो. एसी आज्ञा करि गोलकको पधारे. ओर श्रीआचार्यजीकों आज्ञा कीए. जो आप बेगि पधारोगे. पाछें व्रजभक्त गोकुलकों पधारे. ता पाछें सब अलौकिक भगवदलीला अन्तरध्यान भइ. तब भगवदमायातें जो मेहेलादिक अलौकिक वैभव भयो हतो. सो सब गुप्त होयकें पूर्वजेसो स्थल हे गयो. ता पाछें श्रीआचार्यजी तथा श्रीगुसांईजीनें सबनके माथें मायाको आवरण किये. तातें सब पिता, माता, पुत्र, या भावसों जानन लगे. पाछें श्रीआचार्यजी अलौकिक भगवदीयनको सब मनोरथ सिद्धि कीए. सो यह चरित्र आप श्रीचरणाटकी बेठकमें प्रगट कीए. इति श्रीचरणाटकी बेठकको चरित्र समाप्त. 84.

इति श्रीगोकुलनाथजीकृत वनयात्रा तथा पृथ्वी प्रदक्षिणा गर्भित श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीकी चोराशी बेठकके चरित्र समाप्त.

॥श्रीकृष्णाय नमः॥

॥श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः॥

॥श्रीगुसांईजीपरमदयालवे नमः॥

श्रीमत्प्रभुचरण-श्रीगुसांईजी-श्रीविट्ठलनाथजीकी॥28 बेठकनके चरित्र प्रारम्भः॥

अथ श्रीकृष्णलीलारसाविष्ट-श्रीमत्प्रभुचरण-श्रीगुसांईजी-श्रीविट्ठलनाथजीकी

॥28 बेठकनके चरित्र प्रारम्भः॥

॥श्रीमङ्गलाचरणम्॥

यः कृष्णसेवार्थमगाधबोधं जगाद शास्त्रं भगवत्प्रणतिम्॥
निश्चित्य तद्भावमनन्यभावं तं वह्निसूनुं शरणं प्रपद्ये॥1॥
यः प्रार्थितो भक्तजनैः समस्तं करोति कार्यं करुणाकटाक्षः॥
क्षणं विना कृष्णकथां न चास्ति तं वह्निसूनुं शरणं प्रपद्ये॥2॥
सायं कुञ्जालयस्थासनमुपविलसत्स्वर्णपात्रं सुधौतं राजद्यज्ञोपवितं परितनुवसनं गोरमम्भाजवक्त्रम्॥
प्राणानायम्य नासापुटनिहितकरं कर्णराजद्विमुक्तं वन्देऽर्धोन्मीलिताक्षं मृगमदतिलकं विट्ठलेशं सुकेशम्॥3॥
श्रीमद्वल्लभसागरसमुदितकुमुदौघजीवदानपरः॥
विश्वसमुध्धृतदीनो जगति श्रीविट्ठलौ जयति॥4॥
मायावादतमः कुलनाशनकरणे प्रसिद्धदिननाथः
अपरः कृष्णवतारो जगति श्रीविट्ठलो जयति॥5॥

अथ श्रीविट्ठलेश्वरस्य जन्मपत्रिका
वर्षे नेत्राश्वभूतद्विजपतिगणिते पौषकृष्णे नवम्यां हस्तर्क्षे तैतिलेऽहन्यधिकृतभृगुजे शोभने गोविलग्ने॥
रंघ्रस्थेऽर्के सचान्द्रे कविकुजशनिषु द्यूनगेष्वात्मजस्थे सोमे जीवे धनस्थे तमसि सहजगे विट्ठलः प्रादुरासीत्॥1॥
शुक्रारार्किषु सप्तमेषु धनगे जीवे च कर्के तमस्यर्कें धन्विनि चान्द्रिणा सह सहस्याशुक्लपक्षे वृषे॥

अब्दे नेत्रमुनीषु चन्द्रगणिते हस्ते नवम्यां भृगौ विश्वोद्धारकृते स्फुटोऽभवदिह श्रीविट्ठलशो हरिः॥2॥
संवत् 1572 शके 1437 पौषकृष्णे 9 शुक्रे हस्तनक्षत्रे शोभनयोगे तैतिलकरणे एवं पचांगे. श्रीसूर्योदयात् गतघट्यः 21 पलानि 25 वृषलग्ने श्री 6 श्रीविट्ठलनाथजीप्राकट्यम्. स्थिति वर्ष 70 दिन 28 पर्यन्तम्. संवत् 1642 माघकृष्णे 7 दिने अन्तर्धानम्.

(अथ श्रीगोविन्दस्वामी कृत जन्मपत्रिका गर्भित बधाइको पद)

(पद राग धनाश्री)
वधावो श्रीवल्लभरायकें ग्रह प्रगटे श्रीविट्ठलनाथ श्रीवल्लभरायकें॥ध्रु0॥
तैलङ्गतिलक श्रीलक्ष्मणभट्टसुत गृह जन्मलियोहे आय॥
पुरुषोत्तम वासों कहियतहें निगम सदा गुण गाय॥1॥
पौषमास शुभ नौमी भृगुदिन हस्तनक्षत्र हे सार॥
वृषभलग्न शुभयोग करण हे धन्यशिशु निर्धार॥2॥
धनगुरु तृतीये राहू पंचमे राकापती नवमें केत॥
सप्तम शुक्र भौमशनी शोभित अष्टम रविबुध लेत॥3॥
गिरिचरणाट सुरसरिके तट फिर लिनों द्विजरूप॥
ज्ञातिकर्म सब होत विविधविधि बेठे श्रीवल्लभभूप॥4॥
पंचशब्द बाजे बाजतहें गावत गीत सुहाये॥
मङ्गल कलश बिराजत द्वारें बन्दनवार बंधाय॥5॥
मागध सूत पुरोहित मिलिकें सुभग आशीष सुनाये॥
देत दान महाराज श्रीवल्लभ फुले अङ्ग न समाये॥6॥
महामहोत्सव होत आंगनमें नांचत गुनी अनेक॥
विविधभांति पाटम्बर भूखन देत न आवत छेक॥7॥
नवग्रहकी महिमा कहिये जो कहत सबें द्विज आय॥
पाखण्डधर्म सब दूरि करिहें प्रभु वेद धर्म प्रकटाय॥8॥
निराकार मायामत खण्डन करेंगे सुखदाय॥
पुरुषोत्तम साकार भजनविधि करि शिखवेंगे आय॥9॥
दैवीजीव उद्धारण कारण महामन्त्रको दान॥
शरण गये गिरिधररति उपजत करत कथारस पान॥10॥
जे हरि ब्रह्म रुद्रके हृदये आवत नांहिन ध्यान॥
सो निजजन गृह वसत निरन्तर अभय करतहें दान॥11॥
प्राकृतरूप दिखाय मोहित किये आसुर मानव जेह॥

कृपासुदृष्टि उद्धार कियो हे स्त्री शूद्रादिक देह॥12॥
पतितजन पावन करिहें प्रभु अनेक देश परवेश॥
हस्तकमलधरि दुर करेंगे अन्यधर्मको क्लेश॥13॥
गोवर्धनधरसों रति लीला करेंगे तहां जाय॥
भोग सिंगार बनाय करेंगे निरखि निरखि सुख पाय॥14॥
व्रजमण्डल खग मृगकी महिमां करेंगे विस्तार॥
श्रीयमुना गोवर्धनद्रुम वेली केहेत सबे निर्धार॥15॥
प्रेमलक्षणां दे दासनकों कीनों भवनिस्तार॥
श्रीवल्लभराज तुमारे सुतकी कीर्ति अपरंपार॥16॥
आनन्दमग्न भए सुर नर मुनि गुनीगण सुनि सुखपाय॥
निरखि मुखारविन्दकी शोभा चरनकमल शिरनाय॥17॥
सुखसागर उमड्यो भूमीऊपर बरनत बरन्यो न जाय॥
श्रीवल्लभपदरज महिमातें गोविन्द यह यश गाय॥18॥

इति श्रीगुसांईजीकी जन्मपत्रिका ओर बधाईको पद समाप्त.

(राग सारङ्ग)
दक्षण गति तरण अति सुखद हेमंत ऋतु पोष शुभ मास मध्य पक्ष अंध्यारो॥
द्योसनौमी युगल याम गत वृष लग्न वार भृगु योग शुहस्त तारो॥1॥
धन भवन देव गुरु सहज बैठ्यो राहु सुभग सुत भवन मध्य वारनिधि बारो॥
शुक्र शनि भौम जाहमित्र तनु पुष्टिकरि भानु युत बुध वसु ग्रह सारो॥2॥
धर्मको केतु यह हेतु सुखदेतहे तरण भव जलधिको सेतभारो॥
भक्त दुख दमन द्विजराज वल्लभ सुवन प्रकट व्रजईश यशुमति दुलारो॥3॥

(राग सारङ्ग)
चक्षुमुनि तत्त्वविधु असित निधियाम गुण समय प्रकट वल्लभ तनुज॥
धन्य चरणाट धन्य धन्य दैवी भाग्य सकल सौभाग्य बिराजत गोपीश अनुज॥1॥
लग्न वृष मिथुन गुरु सहज गति राहु चन्द्र पंचम सुत स्थान राजे॥
भौम कवि मन्द दधि भानु बुध युक्त वसु धर्म गृह केतु समेत छाजे॥2॥
हस्त शोभन योग करण तैतिल धरण वरण नीरद अङ्ग रूप सोहें॥
द्वारकेशाधिपति श्रीविट्ठलाधीश प्रभु नन्द सुत प्रीतिकों और कोहे॥3॥

बेठक चरित्र (1-28)

बेठक 1 ली

(अथ श्रीगोकुलकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक श्रीगोकुलमें दोइ हे. तामें एक बेठकञ्चइ1ञ्चअ श्रीनवनीतप्रियजीके मन्दिरमें हें. तहां श्रीगिरिधरजी ओर श्रीगोकुलनाथजीको श्रीगुसांईजीके साक्षात् दर्शन भये हते. श्रीगिरिधरजी गादीके सामें बिराजीके सक्ध्यावन्दन करत हते. गादी उपर बिराजीके न करते. तब एक दिन श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीगिरिधरजीसों बिनती कीनी. जो दादा! आपको गादी उपर बिराजवेको अधिकार हें. सो आप क्यों नांही बिराजते हो. तब श्रीगिरिधरजी आप आज्ञा कीये जो मोकों या बेठकमें गादीपें बिराजे श्रीगुसांईजीके दर्शन होत हें तुमहुं देखो. तब श्रीगोकुलनाथजीको श्रीगुसांईजीके साक्षात् दर्शन भये. सो ता समय आप श्रीगुसांईजी सक्ध्यावन्दन करत हते. सो भगवदीयननें हु गायो हे. जो-मानिकचन्द प्रभु सर्वदा, श्रीगोकुल करत विहार. सदाव्रजहीमें करत विहार. युग युग राज करो श्रीगोकुल. यह सुख भजन प्रताप तेजतें छीन इत उत न टरो. एप्ते भगवदीयननें अनेक बधाइन में गायो हे. जो आप श्रीगोकुलमें सदा सर्वदा बिराजमान हे. यह चरित्र श्रीगुसांईजीने श्रीगोकुलमें श्रीनवनीतप्रियजीके मन्दिरकी बेठकमें कीये हे. ओर तो अनेक कीये हें परन्तु यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीगोकुलकी बेठकको चरित्र समाप्त. 1.

(1.आ बेठक श्रीगोकुलनाथजीना मन्दिरमां छे.)

बेठक 2 री

(अथ श्रीगोकुलमें बडी बेठकमेंकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी दुसरी बेठक श्रीमहाप्रभुजीकी बडी बेठकमें श्रीमहाप्रभुजीके सामे बिराजे हे. जहां श्रीगुसांईजीने श्रीनवनीतप्रियजीकोञ्चइ1ञ्चअ पालने झूलाये हें. ता समय नन्दमहोत्सवके महाअलौकिक दर्शन सब भगवदीयनको श्रीगुसांईजीनें करवाये. तब सब भगवदी आनन्दमें मग्न भये. काहुको देह दिशाकी शुद्धि रही नांही. तब श्रीगुसांईजीने सबनको सावधान कीये. जब तक श्रीनवनीतप्रियजीको मन्दिर बन्यो न हतो. तब तक श्रीमहाप्रभुजीकी बेठकमें बिराजे. ता समें आपनें सहेज आज्ञा करी. जो या समें मन्दिरकी

नीम खोदे तो मुहूर्त आछो हे. सो मन्दिरकी नीम अविचल होय. यह आज्ञा करी आप पोढवेको पधारे या समें यादवेन्द्रदासञ्च्इ2ञ्च्अ ठाडे हते. सो वो वाही समे नीम खोदवे लगे जो एक रात्रमें सगरे मन्दिरकी नीम खोदी. सवेरे श्रीगुसांईजी जागे. देखे तो रजके बडे-बडे ढेर पडे हें. तब श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी जो यह ढेर काहेको हे. तब वैष्णवननें बिनती कीनी जो महाराजाधिराज यादवेन्द्रदासने यह मन्दिरकी नीम खोदी हे. तब आपनें यादवेन्द्रदाससुं पुछी जो यह नीम कोनसे समें खोदी हे. तब वानें बिनती कीनी जो राज. आपनें आज्ञा कीनी वाही समें खोदी हे. तब आप बहोत प्रसन्न भये. पाछें वहां श्रीनवनीतप्रियजीकोञ्च्इ3ञ्च्अ मन्दिर सिद्ध भयो. यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें बडी बेठकमें प्रकट कीयो. ओर तो अनेक कीये हें परन्तु यामें मुख्य सोई लीखे हे. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीगोकुलकी बेठकको चरित्र समाप्त. 2

(1.प्रिया नवनीत पलना झूले. श्रीविट्ठलनाथ झूलावे हो. ए कीर्त्तन आ बेठकमां आ वखते गवायु होय एम जणाय छे.
2.जुओ अमारा तरफथी प्रगट थयेल “84 वैष्णवनी वार्ता” ए पुस्तक.
3.आ मन्दिरमां हाल राजाठोकर बिराजे छे.)

बेठक 3 री

(अथ श्रीवृन्दावनमें बंसीबटकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीवृन्दावनमें बंसीबटमें श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीकी बेठकके पास श्रीगुसांईजी बिराजते हते. तहां वृन्दावनके महन्त हरिवंश आदी बेठे हते. तब हरिवंशने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी जो आप सक्ध्यावन्दन करत हो? तब श्रीगुसांईजीने आज्ञा कीये जो हमारे मारगमें तो सक्ध्या, उपासन मुख्य हें. जो एतन्मार्गीय भक्त हे सो सक्ध्याकी अपेक्षा करत हे. जो नन्दालयसों प्रभु प्रातःसमय गो चारनको वनमें पधारते. तब एतन्मार्गीय भक्तनको विप्रयोग होत हें. तब सायंकाल आप जब वनमें तें पीछें पधारत हे तब संयोग रसको दान करत हें. सो यामें यह आज्ञा कीये जो हमारो मार्ग हे सो व्रजभक्तनके भावात्मक हें. सो इतनेमें एक ढढेरो भगवद् स्वरूप लेके श्रीगुसांईजीके पास आयो. सो ताको श्रीगुसांईजी देखे. सो सब देखतमें वे स्वरूप पुरुषोत्तमकी क्रीडा करवे लगे. जो कोउतो वेणुनाद करत हें. कोउ घुटरुवनलीला करत हें सो एसे सब स्वरूप अपनी-अपनी लीला करवे लगे. सो यामें यह जताये. जो ओर कोई तो प्रतिष्टा करे तब पुरुषोत्तम होय हें ओर हमारी दृष्टिसोंही पुरुषोत्तम होय हें. यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीवृन्दावनमें महन्तको दीखाये हें. तब सब महन्तनें साष्टाङ्ग दण्डवत् कीये. यह माहात्म्य देखीके अनेक जीव श्रीगुसांईजीके शरण

आये. यह चरित्र श्रीगुसांईजीने श्रीवृन्दावनकी बेठकमें प्रगट कीये. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीवृन्दावनकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 3.

बेठक 4 थी

(अथ श्रीराधा-कृष्णकुण्डकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक श्रीराधा-कृष्णकुण्डके उपर श्यामतमालके नीचे आप बिराजत हें तहां हे. यहां पर एक दीन आप बिराजते हते तब तहां रघुनाथदास गोडीयानें आयकें आपको दण्डवत् करिकें बिनती कीनी. जो महाराज तुमारे श्रीस्वामिनीजीको स्वकीयत्व माने हें. तब आप आज्ञा कीये जो हा! हा! हमारे स्वकीयत्व माने हें. तब वानें कही जो हमारे तो परकीयत्व मानें हें. तब आपनें आज्ञा करी जो. एक कागद लावो ओर ये कुण्डमें डारो सो तहांतें श्रीस्वामिनीजी श्रीहस्ताक्षर लीखी पठावे सो प्रमाण मानें. तब एक कोरो कागद लेकें कुण्डमें डार्यो. सो तत्काल वह डुबी गयो. सो निकुञ्जमें श्रीस्वामिनीजी आप बिराजते हते तहां ललिताजीनें बिनती करी. जो यह कागद श्रीगुसांईजीने पठायो हे जो गोडीयानसों वाद भयो हे. तब श्रीस्वामिनीजीनें एक श्लोक लीखी दीनों. तब श्रीगुसांईजी एक वैष्णवसों कही जो वह कागद ले आवो. तब वा वैष्णवनें कागद लायकें श्रीगुसांईजीको दीयो. वह कागद श्रीस्वामिनीजीकी इच्छातें भीज्यो नांही. सो वह कागद मेंते वा श्लोक वांच्यो सो श्लोक "जयति व्रषभांन कुलकी मुदी राधिके जयति, कृष्ण परमानन्द कुल चन्द्रमा" श्रीगुसांईजीने वह श्लोक बांचतेही सब गोडीया निरुत्तर होय गये. पहले जो श्रीगुसांईजीनें उत्तर दीयो हतो सोई श्रीस्वामिनीजी लीखी पठायो. तब सब गोडीया जानें जो श्रीठाकोरजी ओर श्रीस्वामिनीजी श्रीगुसांईजीके वश हें. यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीराधा-कृष्णकुण्डकी बेठकमें प्रकट कीये. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीराधा-कृष्णकुण्डकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 4.

बेठक 5 मी

(अथ श्रीचन्द्रसरोवरकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी चन्द सरोवरमें दोय बेठक हे. प्रथम बेठक श्रीमहाप्रभुजीके पास आप बिराजे. जब कृष्णदास अधिकारीनें श्रीनाथजीके दरशन बन्ध कीने. तब श्रीगुसांईजी परासोलीमें बिराजीके विप्रयोग रसको अनुभव कीयो. तब श्रीनाथजी निज मन्दिरमें एक छोटीसी जारी हे तामेंसुं श्रीगुसांईजीको दरशन देते. बाकी कृष्णदासकुं खबर परी तब वानें वो जारीहु बन्ध करि दीनी. तब श्रीगुसांईजी विज्ञप्तीञ्च्इ1ञ्च्अ लीखीके पठावते. सो श्रीनाथजी बांचीके रामदासको देते. ओर श्रीनाथजीहु विज्ञप्ती लीखीकें रामदासकों देतें सो रामदास वा पत्र श्रीगुसांईजीको देते सो पत्र श्रीगुसांईजी बांचीके फीर पानीमें घोरीके आरोगी जाते-पीजाते. एसें छ महिना तांई आपनें विप्रयोग रसको अनुभव कीयो हें. यह

चरित्र आपनें श्रीचन्दसरोवरकी बेठकमें प्रगट कीयो. इति श्रीगुसांईजीकी चन्दसरोवरकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 5.

(1.आ स्थळे वैष्णवोने विज्ञप्तीनुं पुस्तक तथा कृष्णदास अधिकारीनी वार्ता वांचवा विनंती करुं छुं.)

बेठक 6 ठ्ठी

(अथ श्रीचन्दसरोवरमें फुलघरकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीचन्दसरोवरमें श्रीगुसांईजीकी दुसरी बेठक फुलघरमें हे. तहां श्रीगुसांईजी विप्रयोगमें बिराजते. सो फुलघरकी सेवा करते. सो वा फुलघरमें बिराजीकें श्रीगुसांईजी फुलकी माला सिद्ध करिकें श्रीनाथजीकें लीये नित्य पठावते. सो श्रीनाथजी राजभोग आरोग चुके तब “माला बोली हे” यों करके (जो मालाको बेग पधराओ याही भावसों) एक पुकार कीयो जाय. सो वाही समें वा शब्द सुनकें श्रीगुसांईजी वो फुलकी माला पठावते. जासुं वाहीदीनासुं अब तक ये मालाञ्च्इ1ञ्च्अ बोलवेको प्रचार पर्यो हे. ओर वहांसे माला आये पाछें श्रीनाथजी अङ्गीकार करे ता पाछें राजभोगके दरशन खुलते. सो दरशन होय चुके तब रामदासजी श्रीनाथजीकी प्रसादी माला ओर बीडा नित्य श्रीगुसांईजीकुं देवेकों जाते. वाही बीरीयां श्रीनाथजी जो पत्र श्रीगुसांईजीके उपर लीखते वो दे आवते ओर श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीके उपर जो विज्ञप्ती पत्र लीखते सो ले आवते. यह चरित्र श्रीगुसांईजीने चन्दसरोवरमें फुलघरकी बेठकमें प्रकट कीये हें. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीचन्दसरोवरमें फुलघरकी दुसरी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 6.

(1.हाल पण श्रीनाथजीमां माला बोलाय छे तेने माटे केटलाक वैष्णवो श्रीएकलीङ्गजी महादेवजी दरसन माटे पधारवानुं करी कहे छे ते खोटुं छे.)

बेठक 7 मी

(अथ श्रीगोपालपुर-श्रीगिरिराजजीकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक श्रीगोपालपुर (श्रीगिरिराजजी)में श्रीमथुरेशजीके मन्दिरमें हे. तहां श्रीगुसांईजी बिराजते. तब एक दिन श्रीगोकुलनाथजीनें बिनती कीनी जो महाराजाधिराज श्रीमहाप्रभुजीनें सवाशेर भातको अन्नकुट करायो? तब श्रीगुसांईजीने आज्ञा कीये जो हा. श्रीमहाप्रभुजीकी लीला नित्य अखण्ड हें. एसें कहीकें श्रीगोकुलनाथजी ओर श्रीशोभाबेटीजीको श्रीमहाप्रभुजीके अन्नकुटके अलौकिक दर्शन करवाये. यह चरित्र

श्रीगुसांईजीनें श्रीगोपलपुरमें श्रीमथुरेशजीके मन्दिरमें प्रकट कीये. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीगोपालपुरकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 7.

बेठक 8 मी

(अथ श्रीकामवनमें श्रीकुण्डकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक कामवनमें सुरभीकुण्ड (श्रीकुण्ड)के उपर हे. तहां आपनें श्रीमहाप्रभुजीके परोक्ष दिशामें श्रीगुसांईजीको सेवक मधुसुदनदासको श्रीमहाप्रभुजीके साक्षात् दर्शन करवायो. सो मधुसुदनदास श्रीमहाप्रभुजीकी सेवा नित्य करते. ओर श्रीसर्वोत्तमजीको जप नित्य करते ओर दुध पान करके रहते. सो याके मनमें यह मनोर्थ हतो जो मोकों श्रीमहाप्रभुजी साक्षात् दर्शन देइंगे तब उठुंगो. एसें करत एक मास भयो. तब श्रीगुसांईजी तहां पधारे. सो तीन दीन तांई बिराजे ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे. पाछें छ मास भये तब श्रीमहाप्रभुजीनें कोटिकन्दर्पलावण्य मय. स्वरूपके दर्शन दीये ओर आज्ञा कीए. जो मधुसुदनदास तोको इतनी विलम्ब नहोती परन्तु श्रीगुसांईजी यहां पधारी तोकूं दर्शन दीयो तो हुं तेनें श्रीगुसांईजीमेंञ्च्इ1ञ्च्अ ओर मोमें भेद बुद्धि करी ओर बेठ्यो रह्यो प्रथम तो वैष्णवको-दासको हठ करवेको धर्म नांही हे तासुं तोकों इतनो विलम्ब भयो हे. जो विरह होय तो मेरे वंशके बालक जहां विराजे तहां जायके दर्शन करे. मुख्य यही उत्तम हे. यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीकामवनमें सुरभीकुण्ड उपर प्रकट कीये. ओर तो अनेक कीये हे यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीकामवनकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 8.

(1.वैष्णवोए श्रीमहाप्रभुजी, श्रीगुसांईजी तथा तद्वंश बालकोमां भेद बुद्धि राखवी नहि. भगवदीओए गायुं छे. के "एइ तेइ तेइ एइ कछु न सन्देह" अने "बालक सब ब्रह्मजानीये जाको वेद विमल यश गाय" तेमज श्रीसर्वोत्तमस्तोत्रमां कह्युं छे के "स्ववंशेस्थापिताशेष स्वमाहात्म्य स्मयापहः" आथी श्रीवल्लभकुलना सर्व बालकोमां वैष्णवोए श्रीमहाप्रभुजी वत् भावना राखवी.)

बेठक 9 मी

(अथ श्रीप्रेमसरोवरकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक प्रेमसरोवर उपर हे. तहां श्रीगुसांईजीनें प्रेमसरोवरमें स्नान कीये. ओर गोविन्दस्वामीकों युगल स्वरूपको दर्शन श्रीगुसांईजीनें करवायो. ओर आपनें

श्रीस्फुरत्कृष्णप्रेमामृतकीञ्च्इ1ञ्च्अ टीका यहां बिराजकें करी. ओर एक मास पर्यन्त आप यहां बिराजे. सो सबनको अनिर्वचनीय सुख भयो. सो यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें प्रेमसरोवरकी बेठकमें प्रगट कीये. ओर तो अनेक कीये हे यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीप्रेमसरोवरकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 9.

(1.आ ग्रन्थनी टीका माटे जुओ 'श्रीकृष्णस्तोत्ररत्नाकर' ए पुस्तक.)

बेठक 10 मी

(अथ श्रीसमेतबटकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक श्रीसमेतबटमें समेतदेवीके पास हे. सो आपको एक सेवक गुजराती ब्राह्मण रेण्डाञ्च्इ1ञ्च्अ हतो सो याको आपनें दिव्य चक्षु देकें व्याह खेलको अलौकिक दर्शन करवायो. सो वा रेण्डा वैष्णव दर्शन करके रसमें मग्न होय गयो. सो देहानुसन्धानहु न रह्यो. तब श्रीगुसांईजीनें सावधान कीयो. यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीसमेतबटकी बेठकमें प्रगट कीये. ओर तो अनेक कीये हे यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीसमेतबटकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 10.

(1.आ रेण्डा वैष्णव कपडवणज गामना रहीश हता तेमनी वार्ता माटे जुओ. "252 वैष्णवनी वार्ता" तथा तेमनी वधु माहीतीवाळी हकीकत माटे जुओ "तीर्थयात्रानो हेवाल" ए पुस्तक.)

बेठक 11 मी

(अथ श्रीरीठोराकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक रीठोरामें हे. तहां श्रीचन्द्रावली कुण्डमें आपनें स्नान कीये. ओर आज्ञा कीये. जो यह श्रीचन्द्रावलीजीकी निकुञ्ज हे. सो तातें तहां तीन दिनको पारायण कीयो. सो महाअलौकिक सुख भयो. पाछें श्रीगुसांईजीनें वहां दानलीला ग्रन्थ प्रकट कीयो. यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें रीठोराकी बेठकमें प्रकट कीये. ओर तो अनेक कीये हे परन्तु यामें मुख्य हें सोई लीखे हे. इति श्रीगुसांईजीकी रीठोराकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 11.

बेठक 12 मी

(अथ श्रीकरहलाकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक करहलामें श्रीनाथजीकें जलघराके पास हे. तहां आप तीन दीन तांई बिराजे हें. ओर तहां आपनें श्रीरासपंचाध्यायीकी श्रीसुबोधिनीजी उपर श्रीटीप्पणीजी

ग्रन्थ लीखकें प्रगट कीयो हे. तहां रासोलीमें श्रीललिताजीको स्वरूप हें. सो श्रीगुसांईजी वा स्वरूपको एक पुष्पकीमाल पहेरायवे लगे. तब श्रीललिताजीनें वह माला हाथमें लेलीनी पहरी नांही. तब आप चुप होय रहे. सो यह माला काहुनें देखी नांही. पाछें सांझके समें जब आप दरसनको पधारे तब ललिताजीने कही जो तुमारी माला श्रीस्वामिनीजीको पहराइ हे. सो प्रसादी करके श्रीस्वामिनीजीने मोकों दीनी हे ओर आज्ञा करी हे जो यह माला श्रीगुसांईजीको दीजो. सो यह माला आप पहेरोगे. तब श्रीगुसांईजीने वह माला पहरीकें यह श्लोक कह्यो.
निकुञ्जे पुष्पालीरचितशयनात्केलिजनित श्रमांभः संक्रान्ताननकमलशोभाहृतमानाः॥
समुत्थायायांती सहजकृपया केलिदलितस्रजं दातुं राधे स्मरसि यदि मां त्वं किमपरैः॥1॥
सो यह श्लोक कहकें आप बहोत प्रसन्न भये. ओर श्रीललिताजीहु प्रसन्न भये. यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें करहलाकी बेठकमें प्रकट कीये. ओर तो अनेक कीये हे यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीकरहलाकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 12.

बेठक 13 मी

(अथ श्रीकोटवनकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक कोटवनमें कदमखण्डीमें शीतलकुण्डके उपर हें. तहां गोविन्दस्वामी श्रीगुसांईजीके सङ्ग हते. सो अर्ध रात्रिके समे श्रीगुसांईजी गोविन्दस्वामीसों आज्ञा कीये. जो तुम देखो. या समय कदमखण्डीमें कहा लीला होत हें. तब गोविन्दस्वामी देखे तो युगल स्वरूप विहार करत हें. सो ता समें रसमत्ततासों श्रीप्रभुजीनें श्रीस्वामिनीजीको मोतिनको हार तोरी डार्यो. तब सब मोती भुमिमें बिखरे. तब श्रीठाकोरजी मोती बीनकें अपनें श्रीहस्तसों हार पोइकें श्रीस्वामिनीजीकों पहरायो. सो श्रीगुसांईजीनें यह लीलाके दरशन गोविन्दस्वामीकों करवायो. तब गोविन्दस्वामीनें यह पद गायो. सो पद. राग केदारो. कदमवन विथन करत विहार. मदनमोहनपिय अति रसमातें तोर्यो प्रिया उरहार॥1॥ कनिकभूमि विथुरे गजमोती. कुञ्जकुटीके द्वार. गोविन्द प्रभु श्रीहस्तसां प्रोई. सुन्दर व्रज राजकुमार॥3॥ यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें कोटवनकी बेठकमें प्रकट कीये. ओर तो अनेक कीये हें. परन्तु यामें मुख्य हे सोई लीखे हे. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीकोटवनकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 13.

बेठक 14 मी

(अथ श्रीचीरघाटकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक चीरघाट उपर हे. तहां आप बिराजे. तब आपनें आज्ञा कीये जो अज्ञीकुमारीकाको अलौकिक रात्रिके दरशन श्रीठाकोरजीनें करवाये. ओर वरदान दीयो. जो शरदकी रात्रिमें बुलायकें रास करिकें रसदान करुंगो. यह आज्ञा करिकें श्रीगुसांईजीनें

व्रतचर्या ग्रन्थ प्रकट कीयो. ओर तीन दीन तांइ बिराजे. सो अनिर्वचनीय सुख भयो. यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें चीरघाटकी बेठकमें प्रगट कीये. ओर तो अनेक कीये हें. परन्तु यामें मुख्य हे सोई लीखें हे. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीचीरघाटकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 14.

बेठक 15 मी

(अथ श्रीबच्छवनकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक बच्छवनमें छोंकरके वृक्षके नीचे हें. तहां आप बिराजे. ओर आज्ञा कीये. जो ब्रह्माजीने यहां बच्छ हरे हे. यहां ब्रह्माजीनें स्तुति कीये हे. एसे आज्ञा करी. पाछें आपनें यहां श्रीवेणुगीतकी श्रीसुबोधिनीजी उपर श्रीटीप्पणीजी प्रकट कीये. सो महाअलौकिक आनन्द भयो. यह चरित्र श्रीगुसांईजीने बच्छवनकी बेठकमें प्रकट कीये. ओर तो अनेक कीये हे यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीबच्छवनकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 15.

बेठक 16 मी

(अथ श्रीबेलवनकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक श्रीबेलवनमें श्रीयमुनाजीके कीनारे हें. तहां आप बिराजे. तहां भगवानदासको अलौकिक रासके दरशन करवाये. पाछें तहां श्रीगुसांईजीनें पुरुषोत्तम हुल्लास ग्रन्थ प्रकट कीयो. सो अनिर्वचनीय सुख भयो. ता पाछें आपनें तीन दीनको पारायण कीयो. पाछें आप तहांसों विजय कीयो. यह चरित्र आपनें श्रीबेलवनकी बेठकमें प्रगट कीयो. ओर तो अनेक कीये हे यामें मुख्य हें सोई लीखे हें. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीबेलवनकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 16.

बेठक 17 मी

(अथ श्रीचरणाटकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक चरणाटमें हे. तहां आपको छठ्ठी पुजन भयो हतो. तहां श्रीगुसांईजीनें अलौकिक चरित्र दीखायो. ता समें श्रीगुसांईजीनें लीला सृष्टि ओर लीला सामग्रीको अङ्गीकार कीयो हे. सो लक्षावधि जीवनको कटाक्षद्वारा अङ्गीकार कीये हे. सो देखीकें श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी बहोत प्रसन्न भये. जब श्रीगुसांईजी मास एकके भये तब गङ्गापूजन भयो. जब गङ्गाजी बहोत बढे. तब श्रीगुसांईजी श्रीअक्काजीकी गोदमें बिराजे हे. तब श्रीगङ्गाजीनें चरण परस कीये. ओर कही जो. महालक्ष्मीजी आप बडभागी हो. आपके पति साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम हे. ओर पुत्रहु पूर्णपुरुषोत्तम हे. ओर आपके वंशके

सबही पूर्णपुरुषोत्तम रूप प्रगटेंगे. यह आज्ञा करकें श्रीगङ्गांजी पधारे. तब श्रीअक्काजी अनेक सखीयन सहित मङ्गल गावत बेठकमें पधारे. तब श्रीमहाप्रभुजीनें श्रीगुसांईजीको स्वरूप देखीकें आज्ञा कीये. जो पुत्ररूप ओर ठाकोर स्वरूप होयकें आपही पधारे हें. तब श्रीठाकोरजीको ओर श्रीगुसांईजीको नाम श्रीविट्ठलनाथजी धर्यो. ता पाछें चरणाटसों विजय कीयो. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी श्रीगुसांईजीको लेकें श्रीअडेल पधारे तब अडेलमें जयजयकार भयो. यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीचरणाटकी बेठकमें प्रकट कीये. ओर तो अनेक कीये हे यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीचरनाटकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 17.

बेठक 18 मी

(अथ श्रीअडेलकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक श्रीअडेलमें हें. तहां आपनें बालक्रीडा करी हे. तहां महादेवजी आपकुं नित्य खीलोनां लेकें खीलायवेकों आवते. ओर सींगीनाद बजावते, नृत्य करते. सो देखके आप बहोत प्रसन्न होते. ओर आपके कृपापात्र अन्तरङ्ग भगवदीय आपकुं नित्य खीलावते. सो आपहु हावभाव कटाक्ष करी रसदान करत हें. तब आपकी कृपा कटाक्षद्वारा सहस्रावधि जीवनको अङ्गीकार कीये हे. एसे-एसे अनेक चरित्र श्रीगुसांईजीनें प्रकट कीये हें. ओर तो अनेक कीये हे यामें मुख्य हे सोई लीखे हे. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीअडेलकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 18.

बेठक 19 मी

(अथ श्रीगोडदेशकीज्च्इ1ज्च्अ बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक गोडदेशमें नारायणदासजीके घरमें हे. तहां नित्य श्रीगुसांईजी बिराजते. एक समें श्रीगुसांईजी आप गोडदेश पधारे सो बगीचेमें बिराजे. सो नित्य नारायणदासजी सवेरमें दरशनको जाते. सो सांजकु आवते. बादशाहके पास एकबेर मीलाप करकें चले आवते. राजकाजको काम चलावते नहि. सो एकदीन बादशाहनें याद कीये जो आजकाल दीवान नांही दीसत हे ताको कारण कहा हे. तब काहू चुगलखोरनें कही जो हजरत श्रीगोकुलके श्रीगुसांईजी पधारे हें सो वे रात्रदीन वहांही रहत हें. तब बादशाहनें हलकारासों कही जो नारायणदासजीको बुलालाओ. तब उहां जायकें हलकारीनें नारायनदासजी सों कही जो बादशाह याद करत हें. सों नारायनदासजी कचेरीमें आये. तब बादशाहनें पुछी जो तुम आजकाल दीसो नहीं हो याको कारन कहा. तब दीवाननें कही जो मेरे गुरु पधारे हे सो जहां तांई बिराजेंगे तहां तांई मेरो आयवो नही बनेगो. तब बादशाहनें कही जो सुखेन सों जाओ. ओर मेरी आडीसों अरज करो जो मोकों दरशन होय. तब दीवाननें कही जो कहेंगे तब दीवान श्रीगुसांईजीके दरशनकों आये ओर बिनती करी तब

आपनें आज्ञा करी जो बादशाहकों दरशनकों बुलाय लाइयो. तब दीवाननें साष्टाङ्ग दण्डवत् करी पाछें घर आयो. बादशाहसों कही जो तुमको दरशन होयगो. तब दुसरे दीन दीवानके सङ्ग बादशाह दरशनको आयो सो बादशाहको श्रीगुसांईजीके साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दरशन भये. तब बादशाहनें साष्टाङ्ग दण्डवत् करी ओर दश सहस्त्र रुपीआ श्रीगुसांईजीके आगे धरे. तब श्रीगुसांईजी समाधान करवे लगे तब बादशाहनें बिनती करी जो महाराज मेरे मस्तकपें सदैव बिराजे एसी कृपा कर दीजे. तब श्रीगुसांईजीनें श्रीहस्तसों उपराणो उढायो. तब बादशाहनें दण्डवत् करी मस्तक पर पागमें बांध्यो ओर बिनती करी. जो महाराजमें आपकी शरण हुं कृपा कर मेरो उद्धार कीजे. तब आपनें आज्ञा कीये. जो हम गोडदेशमें पधारे हें तबतें तेरो उद्धार होय गयो हे. पाछें बादशाह दण्डवत् करी अपनें घर गयो. यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें गोडदेशमें नारायणदासजीके घरकी बेठकमें प्रकट कीये. ओर तो अनेक कीये हे यामें मुख्य हें सोई लीखे हे. इति श्रीगुसांईजीकी गोडदेशकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 19.

(1.आ बेठक श्रीजगन्नाथरायजी तरफ कोइ गाममां होवो जोइए पण तेनी खबर मळती नथी कोइ अनुभवी वैष्णव कृपा करी जणावशो तो नवी आवृत्तिमां सुधारो करीशुं.)

बेठक 20 मी

(अथ श्रीसोरमजीकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक श्रीसोरमजीमें श्रीमहाप्रभुजीकी बेठकके पास हे. तहां श्रीगुसांईजी बिराजे. सो सोरमघाट स्नान करकें अपनी बेठकमें पधारे. पाछें आपने सप्ताह कीये. सो महाअलौकिक आनन्द भयो. पाछें श्रीगुसांईजीनें अपनी कृपा कटाक्षद्वारा अनेक जीवनको उद्धार कीये. यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीसोरमजीकी बेठकमें प्रगट कीये. ओर तो अनेक कीये हें. यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीसोरमजीकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 20.

बेठक 21 मी

(अथ श्रीगोधराकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक गोधरामें नागजीभाइके घरमें हे. जब श्रीगुसांईजी गोधरा पधारते तब नागजीभाइके घरमें बिराजते. एक समय नागजीभाइए युगलगीतको प्रसङ्ग पूछयो तब श्रीगुसांईजी व्याख्यान कीये सो तीन दीन तीन रात्र तांई चल्यो एसी अद्भुत रसकी बरखा आपनें कीनी. ता समें सब भगवदीनको देहदशाको अनुसन्धान न रह्यो. तब आपनें सबनको सावधान कीयो. यह माहात्म्य देखिकें अनेक जीव श्रीगुसांईजीकी शरण

आये. यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीगोधराकी बेठकमें प्रगट कियो. ओर तो अनेक कीये हें यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीगोधराकी बेठकको चरित्र समाप्त. 21.

बेठक 22 मी

(अथ श्रीअलीणाकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक अलीणामें महीधरजी फुलबाइके घरमें हे. पहेलें नरहर जोशी जब श्रीगुसांईजीको अलीणामें पधरायलाये तब महीधरजी सामनें पधरायवेको चले. सो रस्तामें रुपीआ ओर महोर न्योंछावर करत-करत अपने घर पधराय लाये. पाछें सहकुटुम्ब श्रीगुसांईजीके सेवक भये. ओर गामके लोक ओर हु बहोत वैष्णव भये. तब महीधरजी फुलबाइनें बिनती कीनी. जो राज कृपा करकें श्रीठाकोरजी पधराय दीजे. तब श्रीगुसांईजीनें श्रीमदनमोहनजीको स्वरूप पधरायदीनें ओर सेवाकी रीती सब बताई. ओर आज्ञा किये जो नरहर जोशी कहे सो करीयो. पाछें महीधरजी ओर फुलबाइनें श्रीगुसांईजीकी भलीभांतीसों सेवा कीनी. पाछें श्रीगुसांईजी वहांसे विजय किये. यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीअलीणाकी बेठकमें प्रकट कीये. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीअकीणाकी बेठकको चरित्र समाप्त. 22.

बेठक 23 मी

(अथ श्रीअसारवाकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक असारवामें भाइला कोठारीकेञ्च्इ1ञ्च्अ घरमें हे. जब आप राजनगर पधारते तब भाइला कोठारीके घरमें बिराजते. लाछबाइ भाटञ्च्इ2ञ्च्अ श्रीगुसांईजीकी सेवक हती. सो याको भाइ हाकीमके पास रहतो सो यानें हाकीमसों चुगली कीनी जो मेरी बहेन श्रीगोकुलके श्रीगुसांईजी असारवामें बिराजे हे विनके पास रहत हें. सो घर आवत नांही. तब हाकीमनें कही जो असारवा चलो. तब हाकीम असवारी करीके आयो. ता समें श्रीगुसांईजी बेठकमें गादीतकीयापें बिराजे हें. लाछबाइ पंखाकी सेवा करत हें. तब श्रीगुसांईजीसों वैष्णवनें बिनती कीनी. जो महाराज हाकीम आवत हें. तब आपनें आज्ञा कीये आयवे दो. तब हाकीम आयके देखेतो साक्षात् ईश्वर बिराजत हें. तब हाकीमनें साष्टाङ्ग दण्डवत् कीनें ओर बिनती कीनी जो महाराजाधिराज में आपकी शरण हुं. तब हाकीमनें दशहजार रुपीआ भेट कीने. तब श्रीगुसांईजी प्रसादी वस्त्र देवे लगे तब हाकीमनें बिनती कीनी जो महाराजाधिराज कृपा करकें एसी वस्तु दीजे जो मेरे मस्तकपें सदैव बिराजे. तब श्रीगुसांईजीनें प्रसादी सुपारी (सोपारी) दीनी तब वानें दण्डवत् करी पागमें राखी. पाछें यानें बिनती कीनी जो महाराज सात बरसतें यहां बरखा नांही भइ हे. सो यहांके लोक बहोत दुःखी हे सो आप कृपा कीजे. तब आपनें आज्ञा कीये जो तुम दरवाजामें भीजकें जाओगे. तब हाकीम दण्डवत् करकें घोडा पर सवार भये. ओर वाही समे घटा चढ

आई सो बरखा बहोत भई. सो भीजीकें शहेरमें गयो. पाछें वा हाकेमनें वा भाटपें बडी रीस कीनी ओर कही जो चुगलखोर. साक्षात् ईश्‌वर सों तुं लडावतो. परन्तु आपनें कृपा करके मेरो अपराध क्षमा कीयो. ओर ईनकी कृपातें बरखा भइ. सो सब देशमें आनन्द भयो. तोकोंतो ठोर मारुंगो. यह खबर श्रीगुसांईजीको पहुंची. तब आपनें हाकीमसों कहवाइ जो याको दण्ड कछु न होय एसी मेरी आज्ञा हे. तब हाकीमनें कही देखो प्रभुकी दयाळताको पार नही हे. ओर एसे जीवकी दुष्टताको पार नहि. पाछें या हाकेमनें चुगलखोरतें हुकम कीयो जो अबतो श्रीगुसांईजीकी आज्ञासों छोडत हे नहीतो ठोर मारतो. जो आज पीछें काहुकी चुगली मती करीयो. एसें कहीके घर पठायो. यह माहात्म्य देखीके अनेक जीव श्रीगुसांईजीकी शरण आये. यह चरित्र श्रीगुसांईजीने असारवा-राजनगरकी बेठकमें प्रकट कीये. ओर तो अनेक कीये हे यामें मुख्य हे सोई लीखे हे. इति श्रीगुसांईजीकी असारवाकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 23.

(1.आ भाइला कोठारी चार भाइ हता. 1.भाइलाकोठारी. एमने घेर पोते बिराजता. 2.हरजीकोठारीने त्यां रसोई करता. 3.कृष्णदासकोठारीने त्यां पोढता. 4.जेताकोठारीने त्यां पण बिराजता. हाल पण त्रण भाइनां त्रण घर बेठकमां छे ते जुदां-जुदां जणाय छे. आ पैकी हरजी कोठारीए श्रीगुसांईजीनां हजारनामनो ‘श्रीविट्ठलसहस्र’ नामनो ग्रन्थ कर्यो छे. (कोइ अनुभवी वैष्णव जाणता हो तो कृपा करी अमने ग्रन्थ मोकली आपशो अथवा खबर आपशो.)
2.‘252 वैष्णवनी वार्तामां’ भाइलाकोठारीनी वार्ता छे, तेमां लखे छे के-श्रीगुसांईजी भाइलाकोठारीने त्यां बिराजता तेवामां एक ब्राह्मणी श्रीगुसांईजीना सेवक थइने तेणे सर्व समर्पण करी दीधुं. आथी एक ब्राह्मणे आ लाछबाइ ते धोलकानां राणीने जइने फरीयाद करी ते उपरथी तेनो हाकेम राजनगर तपास करवा आव्यो ते श्रीगुसांईजीनां दरशन करी दण्डवत् करी भेट धरी पाछो पोताने घेर गयो ए वगेरे वार्ता छे.
वळी श्रीगुसांईजीए महान् भक्त कवि वल्लभाख्यानना कर्ता गोपालदासने आज स्थले सेवक कर्याने तेमना द्वारा आपणे गाइए छीए ते श्रीवल्लभाख्याननी उत्पत्ति अहींथी ज थइ छे.)

बेठक 24 मी

(अथ श्रीखंभातकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक नारायणसर तलावके उपर हे. तहां श्रीगुसांईजी पधारे सो डेरा करकें बिराजे. तब मुरारीआचार्यञ्च्इ1ञ्च्अ बडे पण्डित हते सो आपके दरशनको आये. ओर आपसें कुछ चर्चावाद करे. सो एक क्षणमें आपनें निरुत्तर कर दीये. तब वानें बिनती कीनी. जो महाराज आपतो पूर्णपुरुषोत्तमहो मनुष्य होय ताको जीते. ईश्‌वरके आगें तो सब हारेइ हें. यह कहीके साष्टाङ्ग दण्डवत् करी आज्ञाले घरकों गये. तब चाचा हरिवंशजीनें

बिनती करी जो महाराजाधिराज जीवतो दैवी दीसत हें याको अङ्गीकार करीये एसें पण्डित अपनें मार्गमें चहीये. पाछें तो आपकी इच्छा आवे सोइ करीए. तब श्रीगुसांईजी आप मुसकायकें चुप रहे. तब चाचाजीनें जानी जो अङ्गीकार तो होयगो परन्तु कछु ढील दीसत हें. यह माहात्म्य देखीकें अनेक जीव श्रीगुसांईजीकी शरण आये. यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीखंभातकी बेठकमें प्रकट कीये. ओर तो अनेक कीये हें यामें मुख्य हें सोइ लीखे हे. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीखंभातकीञ्च्इ2ञ्च्अ बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 24.

(1.'252 वैष्णवनी वार्तामां' मुरारीआचार्यनी वार्ता छे ते वांचवी. श्रीगुसांईजीए अहींआ बीजा वैष्णवोने पण शरणे लीधा छे, जुओ "252 वैष्णवनी वार्ता" तथा वधु हकीकत माटे मारा तरफथी प्रगट थयेल "तीर्थयात्रानो हेवाल" ए पुस्तको वांचवां.
2.खंभातमां श्रीगुसांईजी पधार्या त्यारे एक छोंकरना वृक्ष नीचे आप बिराज्या हता, ते वृक्ष हालमां थोडांज वरसोथी सुकाइ जवाथी काढी नांखेलुं छे. पोते अहीं त्रण वखत पधार्या छे, अने घणा वैष्णवोने शरणे लीधा छे. ते पैकी 252 वैष्णवोमां गणाया तेवा दशेक वैष्णवो छे. 1.माधवदास दलाल जेमणे अनेक धोळ बनाव्यां छे ते अहींना वतनी हता. 2.जीवा पारेखना वंशजो हाल जम्बुसरमां रहे छे. 3.सहेजपाल दोसीना वंशजो काशीमां रहे छे. खंभातना वयोवृद्ध वैष्णवो कहे छे के श्रीगुसांईजीनी बे बेठको खंभातमां छे. बीजी बेठक ब्रह्मपुरीमां छे. त्यां मुरारी आचार्यनुं घर हतुं पण तेवी ब्रह्मपुरी चार छे तेथी बेठक क्यां हशे ते जणातुं नथी श्रीनी इच्छा हशे तो प्रगट थशे. जेम बीजी बेठको गुप्त थइ हती ने ते पछी केटलेक काले प्रगट थइ तेम आ बेठक गुप्त थइ नथी परंपराथी श्रीनी सेवा चालुज छे ए खंभातना वैष्णवोनो अद्वितीय प्रेम गणाय.)

बेठक 25 मी

(अथ श्रीनवानगरनी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक (जामनगर) नवानगरमें बाला बादरायणकेञ्च्इ1ञ्च्अ घरमें हे. तहां आप बिराजे. तब श्रीगुसांईजीने राजा जामतमांचीको अङ्गीकार कीयो. ओर अनेक जीवनको उद्धार कीये. पाछें श्रीगुसांईजीनें सप्ताह कीये. यह चरित्र श्रीगुसांईजीने श्रीजामनगरकी बेठकमें प्रकट कीये हे. ओर तो अनेक कीये हे यामें मुख्य हे सोई लीखे हे. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीनवानगरकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 25.

बेठक 26 मी

(अथ श्रीगङ्गागोडगढ (हालनुं गुरगढ)ञ्च्इ1ञ्च्अकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक गङ्गागोडगढमें हे. तहां श्रीगुसांईजी बिराजे. सो तहां नागजीभाइ आंमकी पोटलेकें आये सो आंम झाडीमें राखे. ओर एक टोकरा भरकें ले आये. तब श्रीगुसांईजीने पुछी जो नागजी यह कहा हे तब वानें बिनती कीनी जो महाराजाधिराज यह आंम लायो हुं. सो आप अङ्गीकार करीये. तब आपनें आज्ञा कीये जो यह आंमतो श्रीद्वारकानाथजी लाय कहे. तब नागजीभाइनें बिनती कीनी जो महाराजाधिराज आपतो आरोगो. श्रीद्वारकानाथजीहु आरोगेंगे. तब श्रीगुसांईजी आंम आरोगे. ओर नागजीभाइके उपर बहोत प्रसन्न भये. सो वहां तीन दीन तांई आप बिराजे. सो नित्य नेमसों नागजीभाइ आंमको मनोरथ करते. सो तीन दीन तांई कथा भइ सो अनिर्वचनीय सुख भयो. पाछें श्रीगुसांईजी वहांसों श्रीद्वारका पधारे. यह चरित्र श्रीगुसांईजीने गङ्गागोडगढकी बेठकमें प्रकट कीये. ओर तो अनेक कीये हें. यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीगुसांईजीकी गङ्गागोडगढकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 26.

(1.हालनुं गुरगढ जामनगरथी द्वारकां जतां रस्तामां आवे छे (जुओ तीर्थयात्रानो हेवाल) आ बेठक यादवेन्द्रदासना घरमां छे ने तेमना वंशज ‘आनन्ददास’ सेवा करे छे.)

बेठक 27 मी

(अथ श्रीद्वारकाकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजीकी बेठक श्रीद्वारकाजीमें जगत देहेराके समिप श्रीदाउजीके मन्दिरके पास हे. तहां आप सेवाके अवकाशमें बिराजते. ओर कथा कहते. सो कथामें अनिर्वचनीय सुख होतो. यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीद्वारकाकी बेठकमें प्रकट कीये. ओर तो अनेक कीये हे. यामें मुख्य हे. सोई लीखे हें. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीद्वारकाकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 27.

बेठक 28 मी

(अथ श्रीद्वारकामें श्रीरामलक्ष्मणजीमेंकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगुसांईजी श्रीद्वारकानाथजीसों बिदा होयकें श्रीरामलक्ष्मणजीके मन्दिरपें डेरा करीकें बिराजे. तहां श्रीगुसांईजीकी बेठक हे. तहां नागजीभाइ आंम लेकें आये. तब श्रीगुसांईजीनें पुछी जो नागजी यह कहा लायो हे. तब वानें बिनती कीनी जो महाराज आंम लायो तब आप आज्ञा कीये जो यह आंम श्रीद्वारकानाथजीको पहोंचावो तब नागजीभाइनें बिनती कीनी जो महाराज मेरेतो आपतें काम हें. तब आपनें आज्ञा कीये जो

श्रीद्वारकानाथजी आरोगे पीछें हम लेइंगे तासुं श्रीद्वारकानाथजीमें पहोंचाओगे ओर तुं आवेगो जा पीछें हम चलेंगे. तातें श्रीगोमतीजीमें स्नान करी श्रीद्वारकानाथजीको दरशन करके आइयो तब नागजीभाइ श्रीद्वारकाजी गये सो श्रीगोमतीजीमें स्नान करी आंमको टोकरा श्रीद्वारकानाथजीके मन्दिरमें दीनो. ओर राजभोग आरतीके दरशन कीए ता समें श्रीगुसांईजी श्रीद्वारकानाथजीको बीडा आरोगावत हें सो दर्शन नागजीभाइको भये. तब वे आश्चर्य भये जो श्रीगुसांईजी यहां पधारे हे कहा. बाहीर आयके देखे तो श्रीगुसांईजीके सङ्गके कोइ आदमी दीसे नहीं हे. तब नागजीभाइ वहां ते चल दीये. सो श्रीरामलक्ष्मणजीके मन्दिरमें आये. तहां श्रीगुसांईजी डेरामें भोजन करी चोकीपें बिराजे बीडा आरोगत हें. तब नागजीभाइनें साष्टाङ्ग दण्डवत् कीये. तब श्रीगुसांईजीने पुछयो जो श्रीद्वारकानाथजीके दरशन करी आये. तब नागजीभाइनें बिनती कीनी जो राज श्रीद्वारकानाथजीके अद्भुत दर्शन भये. श्रीद्वारकानाथजीको आपनें बीडा आरोगाये ओर श्रीद्वारकानाथजीनें आपकुं बीडा आरोगायो एसो अलौकिक दर्शन आपकी कृपा अनुग्रहतें भयो हें. तब आपनें आज्ञा कीये जो तेरो सन्देह निवर्त होयवेके लीये हमनें तोकों दरशन दीने हें. तातें श्रीमहाप्रभुजीको सम्बन्ध श्रीद्वारकानाथजीमें सदैव बन्यो रहत हें. तातें हमारो हु सम्बन्ध सदा रहत हें. तातें तेरे आंमहे सो हमही आरोगे हें. तब नागजीभाइ साष्टाङ्ग दण्डवत् कीये. पाछें आपनें आज्ञा कीये जो जुठन महाप्रसाद लेउ. तब नागजीभाइनें जुठन महाप्रसाद लीयो. तब वाके उपर श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये. ता पाछें आप वहोंसों विजय कीये. सो राजनगर, गोधरा, उज्जन होय श्रीमद् गोकुल पधारे यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीद्वारकाजीमें श्रीरामलक्ष्मणजीके मन्दिरकी बेठकमें प्रकट कीये. ओर तो अनेक कीये हें. यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीगुसांईजीकी श्रीरामलक्ष्मणजीके मन्दिरकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 28.

॥इति श्रीगोकुलनाथजी कृत श्रीगुसांईजीकी 28 बेठकनके चरित्र सम्पूर्ण॥

॥श्रीकृष्णाय नमः॥

॥श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः॥

अथ श्रीगिरिधरजीकी बेठक (श्रीगुसांईजीके ज्येष्ठलालजी)

॥अथ श्रीगिरिधरजीकी बेठक व्रजमण्डलमें चारहेताको चरित्र लीख्यते॥

बेठक 1 ली

(अथ श्रीगिरिधरजीकी श्रीगोकुलकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगिरिधरजीकी बेठक श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीकी बेठकमें श्रीगुसांईजीके सन्मुख आप बिराजते हते तहां हे. एक समें श्रीगुसांईजीनें विचार कीयो. जो कोउ मायावादी मेरे सामनें आवत नांही ओर पृथ्वि परिक्रमाको अवकाश नहीं हे. ओर मायावादी तो बहोत हे. तातें आगे कछु उपद्रव करेंगे. ता समें श्रीगिरिधरजी पधारे सो श्रीगुसांईजीको दण्डवत् करीकें बिनती करी जो महाराज आज कहा विचारमें हो. तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा कीये. जो हमारे आगे कोउ मायावादी तो दीसे नांही. तब श्रीगिरिधरजीनें बिनती कीनी जो महाराज पुरुषोत्तमके आगे मनुष्यको कहा सामर्थ्य हे सो आपके सामें आयकें बेठे. जो आज्ञा होय तो में आपके सामनें बेठुं. परन्तु मेरे उपर आपकी सदा प्रसन्नता रहे. तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा कीये जो बहोत आछो. आप सामनें बिराजीये. तब श्रीगिरिधरजी सामें बेठीके वादीकी आडीको पूर्व पक्ष करीवे लगे. ओर श्रीगुसांईजी उत्तर देत जाय. ताके उपर विद्वन्मण्डन ग्रन्थ प्रगट भयो. तब श्रीगुसांईजी श्रीगिरिधरजीके उपर बहोत प्रसन्न भये. यह चरित्र श्रीगिरिधरजीनें श्रीगोकुलकी बेठकमें प्रकट कीये. ओरतो अनेक कीये हें. यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीगिरिधरजीकी श्रीगोकुलकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 1.

(1.आ बेठक श्रीगोकुलमां श्रीगोकुलनाथजीना मन्दिरमां ज्यां श्रीगुसांईजीनी बेठक छे त्यांज होवी जोइए एम अनुमान थाय छे.)

बेठक 2 री

(अथ श्रीगोपालपुर (श्रीगिरिराजजी)मेंकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगिरिधरजीकी बेठक श्रीगोपालपुरमें श्रीमथुरेशजीके मन्दिरमें श्रीगुसांईजीकी बेठकके पास हे. सो तहां आप नित्य बिराजीकें जप पाठ करते. एक समें श्रीगोवर्धननाथजीनें श्रीगिरिधरजीसों आज्ञा कीये जो सात स्वरूप भेले करकें मोकुं अन्नकुट आरोगाओ. तब श्रीगिरिधरजीनें बिनती कीनी जो श्रीगुसांईजीकी आज्ञा होय तब यह कार्य होय. पाछें श्रीगिरिधरजीनें श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी तब आप कछु बोले नहिं. तब थोरेसे दीनमें श्रीगिरिधरजीकी बेठकमें श्रीनाथजीनें श्रीगिरिधरजीसों आज्ञा कीनी तब श्रीगिरिधरजीनें कही जो फेरी श्रीगुसांईजीसों बिनती करुंगो. पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी तब आपनें कुछ उत्तर नांही दीयो. तब थोरे दीन पाछें तीसरी आज्ञा भइ तब श्रीगिरिधरजीनें श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी जो राज अब तीसरी आज्ञा भइ हे. तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा कीनी जो भले सुखेन सो करो. अब लौकिक बढायवेकी इच्छा हे. तब श्रीगिरिधरजीनें सातों स्वरूप पधराय अन्नकुट आरोगायो. सो अनिर्वचनीय सुख भयो. तब श्रीगुसांईजी श्रीगिरिधरजीके उपर बहोत प्रसन्न भये. यह चरित्र श्रीगिरिधरजीनें श्रीगोपालपुरकी बेठकमें प्रकट कीये. इति श्रीगिरिधरजीकी श्रीगोपालपुरकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 2.

बेठक 3 री

(अथ श्रीगिरिधरजीकी बेठक कामरमेंञ्च्इ1ञ्च्अ हे तोको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगिरिधरजीकी बेठक कामरमें गुफामें हें. तहां एक मायावादी हतो सो बडो माहात्मीक हतो. सो सबनको खण्डन करतो. जब श्रीगिरिधरजी पधारे तब वह मायावादी पण्डित आयो. सो आपसों चर्चा कीये आपनें घडीद्वेमें वाको निरुत्तर कर दीये. तब वा पण्डितनें साष्टाङ्ग दण्डवत् करी बिनती कीनी. जो महाराजाधिराज कृपा करकें मोकों शरन लीजें. तब आपनें आज्ञा कीये. जो रुद्राक्ष तोडी चन्द्रभागा कुण्डमें स्नान करी आउ. तब वह स्नान करी आयो. तब आपनें वाको अङ्गीकार कीयो. यह माहात्म्य देखीकें अनेक जीव

शरण आये. एसो अनिर्वचनीय सुख भयो. यह चरित्र श्रीगिरिधरजीने कामरकी बेठकमें प्रकट कीये. ओर तो अनेक किये हें. यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीगिरिधरजीकी कामरकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 3.

(1.आ बेठक कामवनमां श्रीसुरभीकुण्ड-श्रीकुण्ड उपर श्रीमहाप्रभुजीनी बेठक साथे आवेली छे. पण आ स्थळे कामर नाम शाथी लख्युं हशे ते कोइ अनुभवी वैष्णव खुलासो करशो. एवी विनंती छे.)

बेठक 4 थी

(अथ श्रीगिरिधरजीकी बेठक नरीसेंवरीमेंञ्च्इ1ञ्च्अ हे ताको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगिरिधरजीकी बेठक श्रीनरीसेंवरीमें बलभद्रकुण्डके कीनारे श्रीदाउजीके मन्दिरके पास हे. तहां आप बिराजते. तहां आप खटमास पर्यन्त बिराजे. ओर श्रीमद् भागवतकी कथा कीये. सो अनिर्वचीनय आनन्द भयो. ओर लीलाको अवलोकन कीये. ओर जो भगवदीय सङ्ग हते तीनकोहु अलौकिक दर्शन करवाये. ओर अनेक जीवनको उद्धार कीयो. यह चरित्र श्रीगिरिधरजी महाराजनें श्रीनरीसेंवरीकी बेठकमें प्रगट कीयो. ओर तो अनेक कीये हे यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीगिरिधरजी नरीसेंवरीकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 4.

(1.आ स्थळ व्रजचोराशी कोशनी परिक्रमामां होवुं जोइए पण आ बेठक प्रगट नथी तेथी स्थळनी माहीती नथी. वळी आ बेठक चरित्र हालमांनां नवां बेठक चरित्रनां हस्तलीखीत पुस्तकमां नथी पण एक वैष्णवनुं घणुं जुनुं पुस्तक अमारा हस्तगत थयुं तेमांथी आ चरित्र वर्णन मळी आव्युं छे. कोइ अनुभवी वैष्णव आ बेठक बाबत जाणता हो तो कृपा करी जणावशो.)

॥श्रीकृष्णया नमः॥

॥गोपीजनवल्लभाय नमः॥

॥श्रीमद्‍गोकुलेशो जयति॥

॥अथ श्रीमङ्गलाचरणम्॥

नमामि श्रीपतिं देवं वल्लभं विट्ठलात्मजं।
यः करोति सदारण्ये मङ्गलं जनवर्जिते॥
वन्देऽहं गोकुलाधीशं भगवंतं कृपानिधिं।
पावनो यामुने जातः कलौघोरे द्विजेषु यः॥
नमामि गोकुलाधीशं लीलामानुष विग्रहम्।
व्रजाधीशं विश्वविभुं पार्वती प्राणवल्लभम्॥
जहांगिराद्रक्षितामाला ह्यधर्माद्रक्षिताजनाः।
चिद्रुपाद्रक्षितोधर्मो पातुवः पार्वतीपतिः॥

(श्रीगुसांईजीके चतुर्थलालजी)

॥अथ श्रीगोकुलनाथजीकी 13 बेठकनके चरित्र लीख्यते॥

बेठक 1 ली

(अथ श्रीगोकुलकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगोकुलनाथजीकी बेठक श्रीमद्‍गोकुलमें श्रीगोकुलनाथजीके मन्दिरमें हे. तहां आप बिराजते. एक समें श्रीगोकुलनाथजी श्रीगुसांईजीके पास पधारे. सो पुष्टिमार्गको

सिद्धान्त आपसो पूछयो. तब श्रीगुसांईजीनें पुष्टिमार्गको सिद्धान्त कह्यो. सो सुनीकें श्रीगोकुलनाथजी अपनी बेठकमें पधारे. सो पुष्टिमार्गीय सिद्धान्त विचार करत हते. ता समें कल्याणभट्टनें आयके साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. तब आप ता रसमें मग्न हते सो कछु बोले नांहि सो चार घडी पीछें कल्याण भट्टकी ओर देखे तब पुछी जो तुम कब आये. तब वानें साष्टाङ्ग दण्डवत् करी बिनती कीनी जो महाराज मोकों आये चार घडी भइ हे. तब आपनें आज्ञा कीये जो आज में श्रीगुसांईजीके पास गयो हतो. सो आपनें पुष्टिमार्गको सिद्धान्त कह्यो. सो पुष्टिमार्गकी रीती तो महा कठीन हे. कछु बनती नांही. तब कल्याणभट्टनें बिनती कीनी जो महाराज. कृपा करकें कछु कहीए. तब कल्याणभट्टसों कृपा करीकें सिद्धान्त सब कह्यो. सो सब 24 वचनामृतमें लीख्यो हे. यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीगोकुलकी बेठकमें प्रगट कीये. ओरतो अनेक कीये हे यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीगोकुलकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 1.

बेठक 2 री

(अथ श्रीवृन्दावनकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगोकुलनाथजीकी बेठक वृन्दावनमें बंसीबटमें-श्रीमहाप्रभुजीकी बेठकके पास हे. तहां आप बिराजते. ओर तहां आप श्रीगोकुलनाथजीनें सप्ताह कीये. सो तब हरिवंश प्रभृति सगरे संत महन्त सप्ताह सुनवेकों आवते. सो अनिर्वचनीय सुख भयो. पाछें आपनें श्रीवल्लभाष्टककीञ्च्इ1ञ्च्अ टीका तहां कीनी. तब कल्याणभट्ट आदी भगवदी सङ्ग हते तीनको अलौकिक आनन्द भयो. यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीवृन्दावनकी बेठकमें प्रगट कीये. इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीवृन्दावनकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 2.

(1.श्रीवल्लभाष्टक उपर श्रीगोकुलनाथजीए संस्कृतमां टीका आ स्थळे करेली ते टीकानुं गुजराती भाषान्तर अमारा तरफथी छपाइ तैयार थयुं छे, जिज्ञासुए मगावी लेवुं.)

बेठक 3 री

(अथ श्रीराधा-कृष्णकुण्डकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगोकुलनाथजीकी बेठक श्रीराधा-कृष्णकुण्डपें श्रीगुसांईजीकी बेठकके पास हे. तहां श्रीगोकुलनाथजी पधारे सो श्रीराधा-कृष्णकुण्डमें स्नान करीकें बिराजे. तब कल्याणभट्टकों आज्ञा कीनी जो. यहां श्रीस्वामिनीजी सहीत श्रीठाकोरजी नित्य रमण करत हे. ओर यहां श्रीस्वामिनीजीके रत्नजडित महेल हे. तातें यहां सप्ताह करेंगे. पाछें आपनें सप्ताह कीये. सो महाअलौकिक आनन्द भयो. यह चरित्र श्रीराधा-कृष्णकुण्डकी बेठकमें

प्रगट कीये ओर तो अनेक कीये हे तामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीराधा-कृष्णकुण्डकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 3.

बेठक 4 थी

(अथ श्रीचन्दसरोवरकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगोकुलनाथजीकी बेठक चन्दसरोवरमें श्रीगुसांईजीकी बेठकके पास हे. सो तहां श्रीगोकुलनाथजीनें प्रथम रास करवायो. तब श्रीगिरिधरजी श्रीगोवर्धननाथजी सहित पधारे. तब अलौकिक रास भयो. ताबीरीयां चतुर्भुजदासजीनें कीर्तन गायो. सो चतुर्भुजदासजीकी वार्ता प्रसङ्गमें विस्तारसुं लीख्यो हे. तासुं यहां नहि लीख्यो हे. पाछें तहां श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीसर्वोत्तमस्तोत्रकीञ्च्इ1ञ्च्अ टीका कीनी. सो महा अनिर्वचनीय आनन्द भयो. आप एक मास तांई तहां बिराजे. यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीचन्दसरोवरकी बेठकमें प्रगट कीये. इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीचन्दसरोवरकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 4.

(1.श्रीसर्वोत्तमस्तोत्रके उपर श्रीगोकुलनाथजीए संस्कृतमां बे टीका करी छे. एक टीका सुक्ष्म छे ते छपाइ गइ छे. बीजी मोटी टीका छे ते हजु छपाइ नथी.)

बेठक 5 मी

(अथ श्रीगोपालपुरकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगोकुलनाथजीकी बेठक श्रीगोपालपुर (श्रीगिरिराजजी)में श्रीगोकुलनाथजीके मन्दिरमें हे. तहां आप बिराजते. उद्धव त्रवाडी आपनो सेवक हतो. तीनके उपर आप बहोत कृपा करते. वे आपकी सेवामें अष्टप्रहर हाजर रहते. तरहटीमें रसोई करी भोग धरी महाप्रसाद ले सेवामें आवते. एक दीना श्रीगोकुलनाथजी द्वेचारी बीरीयां जल आरोगे. तब वानें बिनती कीनी जो महाराज द्वेचारी बीरीयां जल आरोगे याको कारन कहा. तब आपनें आज्ञा करी जो खीचडीमें लोंन बहोत डार्यो हो. तब वानें बिनती कीनी जो राज लोंन (मीठुं) बढती पड्योतो सही तब आपनें आज्ञा कीये जो रसोई तो सावधानीसुं करनी. ओर कही जो उत्तम सामग्री करी प्रभुनको भोग धरनी. यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीगोपालपुरकी बेठकमें प्रगट कीये हे. ओर तो अनेक कीये हे यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीगोपालपुर-श्रीगिरिराजजीकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 5.

बेठक 6 ठी

(अथ श्रीकामवनमें श्रीसुरभीकुण्डकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगोकुलनाथजीकी बेठक कामवनमें श्रीसुरभीकुण्ड-श्रीकुण्ड उपर हे. तहां आप बिराजे. ओर आज्ञा कीये जो कामवनमें लीला स्थल अनेक हे. यहां श्रीठाकोरजी सदैव रमण करत हे. ये कामवन हे सो लीलात्मक हे. तातें यहां सप्ताह कीये. सो अनिर्वचनीय सुख भयो. यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीनें कामवनकी बेठकमें प्रगट कीये. ओर तो अनेक कीये हे. यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीगोकुलनाथजीकी कामवनकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 6.

बेठक 7 मी

(अथ श्रीकरहलाकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगोकुलनाथजीकी बेठक श्रीकरहलामें श्रीगुसांईजीकी बेठकके पास हे. तहां आप बिराजे हे. तब तहां श्रीवेणुगीतकी श्रीसुबोधिनीजीको प्रसङ्ग चल्यो. ता समें सबनको रसावेश भयो सो काहु वैष्णवको देहदशाको अनुसन्धान न रह्यो. पाछें आपनें सबनको सावधान कीये. ता पीछें आपनें सप्ताह कीये. सो महाअलौकिक आनन्द भयो यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीकरहलाकी बेठकमें प्रगट कीयो ओर तो अनेक कीये हे. यामें मुख्य हे सोइ लीखे हें. इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीकरहलाकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 7.

बेठक 8 मी

(अथ श्रीरासोलीकीञ्च्इ1ञ्च्अ बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगोकुलनाथजीकी बेठक रासोलीमेंञ्च्इ1ञ्च्अ हे तहां आप बिराजे. ओर सप्ताह कीये. सो महाअलौकिक आनन्द भयो. तब कल्याणभट्टनें भ्रमरगीतकी श्रीसुबोधिनीजीको प्रसङ्ग पूछयो सो आपने व्याख्यान कीयो सो तीन प्रहर व्यतीत भये. सो अनिर्वचनीय सुख भयो. यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीनें रासोलीकी बेठकमें प्रगट कीये ओर तो अनेक कीये हे यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीरासोलीकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 8.

(1.आ स्थळ जावथी कोटवन जतां रस्तामां एक रासोल गाम आवे छे त्यां गामथी थोडे दूर छे. आ बेठक प्रगट नथी त्यांना व्रजवासीओ बेठकजीनो चोतरो बतावे छे अने परिक्रमा वखते जतां वैष्णवो दर्शन करे छे. बीजी बेठकोनी माफक सेवानो प्रबंध नथी. जुओ “तीर्थयात्रानो हेवाल.”)

बेठक 9 मी

(अथ श्रीसोरमजीकीञ्च्इ1ञ्च्अ बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगोकुलनाथजीकी बेठक श्रीसोरमजीमें श्रीमहाप्रभुजी, श्रीगुसांईजीकी बेठकके पास हे. तहां श्रीगङ्गाजीमें स्नान करीकें आप बिराजे. पाछें आपनें सप्ताह कीए. सो अनिर्वचनीय सुख भयो. ओर कल्याणभट्टसों आज्ञा कीये. जो श्रीगङ्गाजीको भगीरथ राजा जाय पधराय लाये. क्यों जो श्रीगङ्गाजीमें स्नान करे तें विनके आगेकें प्रायश्चितको नाश करे हें. ओर श्रीयमुनाजीके सम्बन्धतें श्रीगङ्गाजीकों अधिक सामर्थ्य भयो हे. जो अब भक्ति मुक्ति दोनों देत हें. तब श्रीगोकुलनाथजीनें कृपा कटाक्षद्वारा अनेक जीवनको उद्धार कीये. यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीसोरमजीकी बेठकमें प्रगट कीये हें यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीसोरमजीकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 9.

(1.आ स्थळे श्रीगोकुलनाथजी पोताना सेव्य स्वरूप श्रीगोकुलनाथजीने पधरावी मालातिलकना झघडा वखते त्रण मास सुधी बिराज्या हता अने अहियां नाना प्रकारनां मन्दिर, रसोइघर, शयनमन्दिर, गौशाला, अश्वशाला वगेरे आवास श्रीगोकुलनी माफक ज तैयार करायेला हता तेथी त्यारथीज आ स्थळ अद्यापि सुधी पण श्रीगोकुल तरीके ओळखाय छे. वधु माहिती माटे श्रीगोकुलेशजीनुं जीवन ए पुस्तक वांचो.)

बेठक 10 मी

(अथ श्रीअडेलकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगोकुलनाथजीकी बेठक श्रीअडेलमें हे. सो तहां आप नित्य बिराजे हें. पहेलें सप्ताह अपनें वहांही कीए हे. एक समें श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी ओर श्रीगिरिधरजी सेवामें न्हाए हते ओर श्रीगोकुलनाथजी आपनी बेठकमें बिराजे हते तब मायावादी पण्डित आयो. सो वाके सङ्ग आपनें चर्चा कीनी सो दोय घडीमें वाको निरुत्तर कर दीनो. तब वा पण्डितनें साष्टाङ्ग दण्डवत् कीये ओर बिनती कीनी जो महाराज आप साक्षात् ईश्वर हो. पाछें दण्डवत् करके वह पण्डित अपने देशकुं गयो. यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीअडेलकी बेठकमें प्रगट कीये. ओर तो अनेक कीये हे यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीअडेलकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 10.

बेठक 11 मी

(अथ श्रीकाश्मीरकीञ्च्इ1ञ्च्अ बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगोकुलनाथजीकी बेठक काश्मीरमें हे. सो आपनें जहां चिद्रुपको जीती, मायामत खण्डन करी, भक्तिमार्ग स्थापन कीये ओर मालाप्रसङ्ग जीतकें, सबनको माला बंधाइ. सो तब चारों सम्प्रदायवारे मीलकें श्रीगोकुलनाथजीको तिलक कियो. ओर बिनती कीनी जो महाराज. चारों सम्प्रदायके दीक्षति आप हो. आपनेंही हमारो धर्म राख्यो हे. तब चारो सम्प्रदाय वारे मीलकें श्रीगोकुलनाथजीको सुखपालमें पधराए. तब बादशाहने दण्डोत् करकें मोतीनकी अमोलीक माला भेट कीनी सो आपनें गङ्गाजीमें डारी दीनी तब काहुने बादशाहसों कही जो तुमारी माला श्रीगोकुलनाथजीनें गङ्गाजीमें डारी दीनी. तब बादशाहनें बिनती कीनी जो महाराज यह माला बेगमकी हे सो दीजे. ओर दुसरी मालामें आपको भेट करुंगो. तब आपनें आज्ञा कीए जो श्रीगङ्गाजीमें हाथ डारी. तब वानें हाथ डार्यो. सो एक सङ्ग दश वीश माला बडे-बडे गजमुक्तानकी अमोलमाला आइ. तब आपनें आज्ञा कीये जो तेरी माला होय सो ले लें. तब बादशाहनें साष्टाङ्ग दण्डवत् करी बिनती कीनी जो महाराज आप साक्षात् ईश्वर हो. मेरी बादशाही आपनें राखी. नही तो डुबी जाती जो अब मेरो अपराध क्षमा होय ओर माला अङ्गीकार करीये. तब आपनें आज्ञा कीये. जो सब माला गङ्गाजीमें डारी दे तीहारी मालातो अङ्गीकार भइ हे. तब बादशाह दण्डवत् करी अपनें घर गयो. यह माहात्म्य देखीके अनेक जीव श्रीगोकुलनाथजीकी शरण आये. यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीकाश्मीरकी बेठकमें प्रगट कीये हें. इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीकाश्मीरकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 11.

बेठक 12 मी

(अथ श्रीगोधराकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगोकुलनाथजीकी बेठक गोधरामें नागजीभाइके घरमें श्रीगुसांईजीकी बेठकके पास हे. जब श्रीगोकुलनाथजी गोधरा पधारते तब नागजीभाइके घरमें बिराजते. तब देखेतो जगे सब गीरी गइ हे. तब श्रीगोकुलनाथजी आज्ञा कीये जो नागभीभाइकी जगे बनवाय देउ. तब वैष्णवने कही जो महाराज आप द्वारका होय पाछें पधारोगे तहां तांइ बनी जायगी. पाछें श्रीगोकुलनाथजी तपेली करी श्रीगुसांईजीको भोग धरी भोजन कीये. पाछें सप्ताह कीये सो अनिर्वचनीय सुख भयो. यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीने श्रीगोधराकी बेठकमें प्रगट कीये. इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीगोधराकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 12.

बेठक 13 मी

(अथ श्रीअसारवाकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीगोकुलनाथजीकी बेठक राजनगर-अमदावादमें असारवामें भाइला कोठारीके घरमें श्रीगुसांईजीकी बेठककी पास हे. तहां आप बिराजे हे. चाचा हरिवंशजीहु यहांही रहते. सो चाचाजीनें पहेले श्रीगोकुलनाथजीको बिनती पत्र लखी पठायो जो महाराज श्रीगुसांईजी

श्रीद्वारका छवीरीयां पधारे हे. ओर आपहु बेग पधारोगे. तो कोइ बालक पधारेंगे. सो पत्र बांचतही श्रीगोकुलनाथजी श्रीद्वारका पधारे. जब आप राजनगर पधारे तब चाचाजीनें साष्टाङ्ग दण्डवत् करी बिनती कीनी जो महाराज. अनेक जीव आपके दरशनके लीये तरसत हें. सो कृपा करकें वह जीवनको अङ्गीकार करीये. तब आप आज्ञा कीये जो याके तांई तो में तुमारो पत्र वांचतही आयो हुं. पाछें आपनें रसोइ करी, श्रीगुसांईजीको भोग धरी, भोजन कीये. ओर वहांही बिराजे. दुसरे दिन आपनें सप्ताहको प्रारम्भ कीयो. सो तामें अनिर्वचनीय सुख भयो. तब अनेक जीवनको उद्धार कीये. पाछें आप श्रीद्वारकाजी पधारे. वहां कछुक दीन बिराजकें फीर राजनगर पधारे. यहां कछुक दीन बिराजे पाछें. गोधरा होयकें श्रीमद्‌गोकुल पधारे. यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीअसारवाकी बेठकमें प्रगट कीये ओर तो अनेक कीये हें. यामें मुख्य हे सोइ लीखे हें. इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीअसारवाकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 13.

॥इति श्रीगोकुलनाथजीकी 13 बेठकको चरित्र सम्पूर्ण॥

श्रीगोकुलनाथजीए सं. 1646 नी सालमां गुजरात पधारी घणा दैवीजीवोनो अङ्गीकार कर्यो छे. पोतानी गुजराती वैष्णवो उपर अगाध प्रीति हती. श्रीद्वारका जतां आखा काठीयावाडमां पोते बिराजी घणा भक्तोना मनोरथ पूर्ण कर्या छे. द्वारकाथी पाछा फरतां फरी राजनगर पधार्या. अहीं बारभट नामना ब्राह्मण साथे वाद थयो तेने निरुत्तर करी दीधो. पोते गुजरातनां घणां नानां मोटां गामे पधार्या छे कारणके पोते तो मात्र आ एकज वखत परदेशमां पधार्या अने फरीथी पधारवानी इच्छा नही होवाथी बारमास सुधीमां गुजरातने अङ्गीकार करी श्रीगोकुल पधार्या. आ वर्णननी वधु माहिती माटे "श्री गोकुलेशजीनुं जीवन चरित्र" ए पुस्तक वांचो.

॥श्रीकृष्णाय नमः॥

॥गोपीजनवल्लभाय नमः॥

॥श्रीमदाचार्यचरणकमलेभ्यो नमः॥

॥अथ श्रीमद्‌गोस्वामी श्रीहरिरायजी (महाप्रभुजी)की 7 बेठकनके चरित्र॥

बेठक 1 ली

(अथ श्रीगोकुलकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीहरिरायजीकी बेठक श्रीमद् गोकुलमें श्रीविट्ठलनाथजीके मन्दिरमें हे. तहां आप नित्य बिराजते हे. तहां आपको कृपापात्र सेवक हरजीवनदास तासों मीलके रहस्य वार्ता करते. ओर प्रथम निरोधलक्षण ग्रन्थकी टीका आपने वहांही करी हे. पाछें वहां सप्ताह कीये. सो महा अनिर्वचनीय सुख भयो. यह चरित्र श्रीहरिरायजीनें श्रीगोकुलकी बेठकमें प्रगट कीयो. ओर तो अनेक कीये हें यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीहरिरायजीकी श्रीगोकुलकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 1.

बेठक 2 री

(अथ श्रीजीद्वारकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीहरिरायजीकी बेठक श्रीजीद्वारमें श्रीविट्ठलनाथजीके मन्दिरमें हे. तहां आप बिराजकें नित्य कथा कहते. एक दीन हरजीवनदासनें वेणुगीतको प्रसङ्ग पूछयो. सो याको आपनें व्याख्यान कीयो सो तीन दीन ओर रात्र व्यतीत होय गइ. सो अलौकिक आवेश भयो. काहुको देहानुसन्धान हु न रह्यो. पाछें आपनें सबनको सावधान करे. ओर तहां आपनें सप्ताह कीये. सो महाअलौकिक आनन्द भयो. यह चरित्र श्रीहरिरायजीनें श्रीजीद्वारकी बेठकमें प्रगट कीये. ओर तो अनेक कीये हें यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीहरिरायजीकी श्रीजीद्वारकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 2.

बेठक 3 री

(अथ श्रीखीमनोरकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीहरिरायजीकी बेठक श्रीखीमनोरमें हे. तहां आप बिराजे. सो तहां हस्ती, सुखपाल, घोडा तथा घोडवेल ओर रथ ए चारों स्वारी पहर पहर तांई ठाडी रहती. क्यों जो श्रीनाथजी क्षणक्षणमें आपको जतावते. ओर स्वारी करी बेग पधारते. एक दीनां श्रीनाथजीको श्रीबालकृष्णजीके लालजी श्रीवल्लभजीने शृङ्गार कीयो. सो पेंडेंकी गादी बिछायवे भुली गये. तब श्रीनाथजी ठाडे होय रहे. तब गङ्गाबाइ सों आपनें आज्ञा कीये. जो में ठाडो होय रह्यो हुं. तब गङ्गाबाइनें कही जो श्रीहरिरायजीको जताइयो, ता समें श्रीहरिरायजी तो पोढे हते. सो स्वप्नेमें आपनें जताइ जो आज पेंडेंकी गादी काहुने बीछाइ नही हें. ओर में ठाडो होय रह्यो हुं. ता समें श्रीहरिरायजीञ्च्इ1ञ्च्अ चोंकी उठे ओर उद्धोदास खवास सों कहीजो कहा स्वारी ठाडी हे. तब वानें कही घुडवेल ठाडी हे. सो तामें आप बिराजकें पधारे. सो बनासमें स्नान करकें अपरसमेंही आप मन्दिरमें पधारे. श्रीदाउजीकी बेठकमें तें कुंचीको झूमखा मगाय शंखनाद करी तालो खोली भीतर पधारे. पेंडेंकी गादी बीछाइ, दण्डोत करी, ताला मङ्गल करी, श्रीदाउजी महाराजकी बेठकमें पधारे. श्रीदाउजी महाराजनें दण्डोत् करी

बिनती कीनी. जो आप श्रीवल्लभकुलमें शीरोमनी हो. कछु हम सेवामें भुले तो आपकुं सेवा करनी उचीत हे. जो आज पेंडेंकी गादी बिछायवे भुली गये सो श्रीनाथजीको परिश्रम भयो. यह आज्ञा करी आप खीमनोर पधारे. पाछें श्रीदाउजी महाराज बहोत सावधानी राखते. सो ये प्रसङ्ग श्रीनाथजीके प्रागट्यकी वार्तामें विस्तारसुं लिख्यो हें. यह चरित्र श्रीहरिरायजीनें श्रीखीमनोरकी बेठकमें प्रगट कीये. ओर तो अनेक कीये हें. यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीहरिरायजीकी श्रीखीमनोरकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 3.

(1.श्रीनाथजीनी सेवामां कंइ पण भुलचुक रही होय तो तरतज श्रीनाथजी श्रीहरिरायजीने जतावता. अने श्रीहरिरायजी पोते पधारी तेनो बंदोबस्त करता. आवा घणा प्रसङ्गो “श्रीगोवर्धननाथजीना प्रागट्यनी वार्ता” ए पुस्तकमांथी मळी आवे छे. माटे वैष्णवोए ए पुस्तक अवश्य वांचवुं.)

बेठक 4 थी

(अथ श्रीजेसलमेरकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीहरिरायजीकी बेठक जेसलमेरमें श्रीगिरिधारीजीके मन्दिरमें हे. सो वे श्रीगिरिधारीजी श्रीकल्याणरायजीके सेव्य स्वरूप हे. वहां जेसलमेरके राजाको आपनें सेवक कीये. ओर हु अनेक जीवनको उद्धार कीये. पाछें आपनें श्रीमद् भागवतकी सप्ताह कीये. सो वामें महाअलौकिक आनन्द भयो. यह चरित्र श्रीहरिरायजीनें श्रीजेसलमेरकी बेठकमें प्रगट कीये. ओर तो अनेक कीये हे यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीहरिरायजीकी श्रीजेसलमेरकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 4.

बेठक 5 मी

(अथ श्रीडाकोरकीञ्च्इ1ञ्च्अ बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीहरिरायजीकी बेठक श्रीडाकोरमें श्रीगोमतीजीके कीनारा उपर हे. सो तहां श्रीहरिरायजी आप पधारे. सो श्रीगोमतीजीमें स्नान करीकें भोजन करी आप पोढे हें. ता समें श्रीरणछोडजीनें स्वप्नमें आज्ञा कीये जो. में यहां एक छपरामें बेठ्यो हुं. एक ब्राह्मण जलको लोटा नित्य डारी जात हें. जासुं आप मोकुं श्रीहस्तसों परस करीये ओर साधारण मन्दिर बनवाय यहां मोकों बेठाइए. सो ता समें आप जागे सब वैष्णवनको बुलायकें पुछे. जो यहां श्रीरणछोडजी कहां बिराजत हें. तब वैष्णवनें कही जो एक छपरामें बिराजत हे. तब आप दर्शनकों पधारे. दर्शन करी सब वैष्णवनकुं बुलाये. ओर एक साधारण मन्दिर बनवाय आछो मुहूर्त देखीकें श्रीरणछोडजीको पधराये. सो खेडावाल ब्राह्मणको सेवामें न्हवाये. सो प्रथम जो नित्य जलसों स्नान करावतो वानें आय बिनती कीनी. जो महाराज

नित्य स्नानतो में करावतो. ओर आपनें सेवामें खेडावालको न्हवाये. तब आपनें आज्ञा कीये. जो तेरो ओर वाको आधो आधो बांटलीजो. पाछें आपनें सप्ताह कीनी सो अनिर्वचनीय सुख भयो. यह चरित्र श्रीहरिरायजीनें श्रीडाकोरकी बेठकमें प्रगट कीये. ओरतो अनेक कीये हें यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीहरिरायजीकी श्रीडाकोरजीकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 5.

(1.श्रीडाकोरनी वधु विगत माटे “तीर्थयात्रानो हेवाल” वांचो.)

बेठक 6 ठी

(अथ श्रीसावलीकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीहरिरायजीकी बेठक श्रीसावलीमें तलावके पास हें. तहां श्रीहरिरायजी बिराजे. सो तहां आपनें सप्ताह कीये. सो अनिर्वचनीय सुख भयो. ओर अनेक जीवनको उद्धार कीये. यह चरित्र श्रीहरिरायजीनें श्रीसावलीकी बेठकमें प्रगट कीये. ओरतो कीये हे यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीहरिरायजीकी श्रीसावलीकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 6.

बेठक 7 मी

(अथ श्रीजम्बुसरकी बेठकको चरित्र प्रारम्भः)

अब श्रीहरिरायजीकी बेठक श्रीजम्बुसरमें तलावके पास हे. तहां आप बिराजकें कथा कहते. तब प्रेमजीभाइनें युगलगीतको प्रसङ्ग पूछयो. तब आपनें व्याख्यान कीयो. सो तीन प्रहर व्यतीत होय गये. एसो महाअलौकिक रसावेश होय गयो. जो काहुको देहानुसन्धान हु न रह्यो. पाछें सबनको सावधान कीये. पाछें आपनें सप्ताह कीये. ओर अनेक जीवनको उद्धार कीये. पाछें श्रीहरिरायजी वहांसुं विजय कीये सो श्रीजीद्वार पधारे. यह चरित्र श्रीहरिरायजीनें श्रीजम्बुसरकी बेठकमें प्रगट कीयो. ओर तो अनेक कीये हे यामें मुख्य हे सोई लीखे हें. इति श्रीहरिरायजीकी श्रीजम्बुसरकी बेठकको चरित्र सम्पूर्ण. 7.

॥इति श्रीहरिरायजी (महाप्रभुजी)की बेठक सात हे ताको चरित्र सम्पूर्ण॥

॥अथ गोवर्धननाथजीकी चरणचोकीको चरित्र लीख्यते॥

1.प्रथम श्रीनाथजीकी चरनचोकी श्रीगिरिराजके उपर आप के निजमन्दिरमें जहां श्रीनाथजी सदासर्वदा बिराजे हे तहां हे. 2.श्रीनाथजीकी चरनचोकी श्रीमथुराजीमें सतघरामेंञ्च्इ1ञ्च्अ हे. जहां आप संवत् 1623 फाल्गुन कृष्ण 7 को श्रीगुसांईजीके घर

पधारे हते तहां हे. 3.श्रीनाथजीकी चरनचोकी आगरामें हवेलीमें हे जहां आप श्रीगिरिराजसों उठे तब तहां अन्नकुट आरोगे हते. 4.श्रीनाथजीकी चरनचोकी कृष्णपुरामें दण्डोतधारके पास हे. जहां श्रीव्रजरायजीमहाराजनें सत्तावीस दीन तांई सेवा कीनी. ओर प्रथम चातुर्मास श्रीनाथजीने उहाही कीयो हे. 5.श्रीनाथजीकी चरनचोकी कोटामें कृष्णविलासमें पद्मशिलाके उपर बिराजे हे तहां हें यहां दुसरो चातुर्मास आप बिराजे. 6.श्रीनाथजीकी चरनचोकी कीसनगढके पास 'अजमिति' गामके पास पर्वतपें हे. उहां श्रीनाथजी वसंतऋतु कीये हें. (ए स्थळ बहोत रमणीक ओर अवश्य दर्शन करवे लायक हे). 7.श्रीनाथजीकी चरनचोकी चापासेनीमें हे. जहां बहोत सुन्दर कदम्बखण्डी देखीकें आप बिराजे. ओर तीसरो चातुर्मास उहांही कीयो. 8.श्रीनाथजीकी चरनचोकी उदेपुरमां श्रीनाथजीके मन्दिरमें हें. यहां उदयपुर नरेशराणा रायसिंहजीके समयमें नवमास तक श्रीनाथजी बिराजे हते. 9.श्रीनाथजीकी चरनचोकी सींहाडमें हाल बिराजे हे वहां हे. 10.श्रीनाथजीकी चरनचोकी घस्याढजो उदेपुरसें 10 कोसके उपर हे वहां हे. यहां आप त्रण वरस तक बिराजे हे. श्रीगोवर्धननाथजीकी 10 चरनचोकी बिराजे हें ताको चरित्र सङ्क्षेपसों लीख्यो हें. ओर तो सब श्रीगोवर्धननाथजीके प्रागट्यकी वार्तामें विस्तारसों लीख्यो हे. इति श्रीगोवर्धननाथजीकी 10 चरनचोकीको चरित्र सम्पूर्ण.

॥अथ श्रीगोवर्धननाथजीकी बेठक व्रजमें दोय हे ताको चरित्र॥

प्रथम श्रीगोवर्धननाथजीकी बेठक श्रीश्यामढाकपें हे. तहां आपनें व्रजभक्तनके सङ्ग, ग्वालबालके सङ्ग, छाकलीला, आंखमींचौनीलीला, गोचारनलीला इत्यादि अनेक लीला करी हे. महानुभावी कुंभनदासजी ओर गोविन्दस्वामीके सङ्गहु अनेक भांति आपनें क्रीडा कीये हें. दुसरी. श्रीगोवर्धननाथजीकी बेठक श्रीगुलालकुण्डके उपर हे. तहां आप बिराजकें आपनें व्रजभक्तनके सङ्ग होरी खेल कीयो हे.

टोडनाघनामां-गुलालकुण्डथी नजीक ज्यां श्रीनाथजी वेरागीने दर्शन आपवा पधार्या हता त्यां पण श्रीनाथजीनी बेठक छे एम व्रजवासीओ कहे छे.

(परिक्रमामां जावथी कोटवन जतां रस्तामां रासोली गाम आवे छे त्यां आगळ रासकुण्ड, रासचोतरो, लछमनझूलो ए स्थल छे तेनी पासेज श्रीनाथजीनी बेठक छे एम त्यांना व्रजवासीओ बतावे छे. साथे श्रीगोकुलनाथजीनी पण बेठक छे. परिक्रमामां वैष्णवो आ बेठकोए भोग धरे छे, चरणस्पर्श करे छे)

श्रीगुसांईजीके पंचमलालजी श्रीरघुनाथजीकी एक बेठक हे. सो श्रीगोकुलमें हें.

श्रीगुसांईजीके सप्तमलालजी श्रीघनश्यामजीकी एक बेठक हे. सो श्रीगोकुलमें श्रीमदनमोहनजीके मन्दिरमें एक गुफा हे तामें हें. सो तहां आप बिराजते. एक बिरीयां आपके सेव्य श्रीठाकोरजी श्रीमदनमोहनजी (कामवनमें बिराजे हे) को काहु तस्कर विद्यासों चुरायकें ले गयो. ता वातकी आपकों खबर भइ. सो श्रीठाकोरजी बिनु आपसें रह्यो न गयो. सो तबतें आप अन्नजल त्याग करकें ए गुफामें बिराजे. सो अत्यन्त विरहसों आप निजलीलामें पधारे.

परम भगवदीय दामोदरदासजीकी दोय बेठक हे. 1.श्रीगोकुलमें श्रीठकराणीघाट उपर. 2.श्रीवृन्दावनमें श्रीबंसीबटमें हें.

॥इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी, श्रीगुसांईजी, श्रीगिरिधरजी, श्रीगोकुलनाथजी, श्रीहरिरायजी आदि बालकनकी वनयात्रा तथा पृथ्वि प्रदक्षिणा गर्भित बेठकनके चरित्र समाप्त॥